

राज्यों का राजभाषा क्षेत्र

आधारित वर्गीकरण

राजभाषा अधिनियम 1963

भाषा के आधार पर भारत का मानचित्र



क क्षेत्र : उत्तर प्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान, बिहार, हिमाचल, हरियाणा, अण्डमान निकोबार द्वीप समूह और दिल्ली संघ राज्य क्षेत्र ।

ख क्षेत्र : महाराष्ट्र, गुजरात, पंजाब, चंडीगढ़ संघ राज्य

ग क्षेत्र : आंध्रप्रदेश, अरुणाचल, असम, गोवा, जम्मू और कश्मीर, कर्नाटक, केरल, मणिपुर, मेघालय, नागालैण्ड, उड़ीसा, सिक्किम, त्रिपुरा, पश्चिम बंगाल, दादरा नगर हवेली, दमण, दीव, लक्षद्वीप, मिजोरम, पांडिचेरी, तमिलनाडु ।



सोनार बांग्ला

राजभाषा पत्रिका

17वां अंक

वर्ष – 2023



SUPREME AUDIT INSTITUTION OF INDIA
लोकहितार्थं सत्यनिष्ठा
Dedicated to Truth in Public Interest

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), पश्चिम बंगाल

ट्रेजरी बिल्डिंग्स (प्रथम तल), 2, गवर्मेन्ट प्लेस (पश्चिम), कोलकाता – 700 001

दूरभाष :- 033-2213-3151/3152/3163 फैक्स :- 033-2213-3174

वेबसाइट :- www.agwb.cag.gov.in

ई-मेल पता :- hindicellau1.wbl.au@cag.gov.in

‘सोनार बांग्ला’ परिवार

मुख्य संरक्षक

श्री सतीश कुमार गर्ग

प्रधान महालेखाकार

संरक्षक

श्री रनेन्द सरकार, वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं ए.एम.जी.-I)

डॉ. लिंगराज नायक एस., उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-III)

श्री विनोद परिहार, उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-II एवं IV)

संपादक मंडल

संपादक

श्री सुनील कुमार साव, हिंदी अधिकारी

राजभाषा परिवार

श्री प्रशांत कुमार, हिंदी अधिकारी

श्रीमती राजलक्ष्मी गांगुली, वरिष्ठ अनुवादक

श्रीमती सुकन्या दास, वरिष्ठ अनुवादक

श्रीमती सोमा चक्रवर्ती भादुड़ी, वरिष्ठ अनुवादक

श्रीमती गुंजा कुमारी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

श्री बिपुल कुमार साव, कनिष्ठ अनुवादक

श्री प्रमोद कुमार दास, कनिष्ठ अनुवादक

श्री किशन राम, कनिष्ठ अनुवादक

श्री रवि पासवान, कनिष्ठ अनुवादक

टंकण कार्य

श्री सोनु कुमार चौधरी, आंकड़ा प्रविष्टक

लेख जांच एवं पुनरीक्षण समिति के सदस्य

श्री नवल किशोर प्रसाद, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री विनय कुमार मेहता, वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

श्री सुनील कुमार साव, हिंदी अधिकारी

श्री प्रशांत कुमार, हिंदी अधिकारी

अस्वीकरण

लेखक/रचनाकारों के विचार उनके निजी विचार हैं। उनके विचारों से मुख्य संरक्षक/संरक्षक/लेख जांच एवं पुनरीक्षण समिति/संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	संदेश		पृष्ठ संख्या
1.	प्रधान महालेखाकार का संदेश	श्री सतीश कुमार गर्ग	1
2.	वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं ए.एम.जी.-I) का संदेश	श्री रनेन्दु सरकार	2
3.	उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-III) का संदेश	डॉ. लिंगराज नायक एस.	3
4.	उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-II एवं IV) का संदेश	श्री विनोद परिहार	4
5.	संपादकीय	श्री सुनील कुमार साव	5
6.	आपके पत्र		6-7
7.	वाक्यांश और अभिव्यक्तियां		8
	लेख/स्वानुभूति/जीवन दर्शन/कहानी/अनुवाद	लेखक/रचनाकार	
8.	भारत के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका	सुनील कुमार साव	9 - 13
9.	अध्यात्म एवं आधुनिकता	मनोज कुमार मोवार	14
10.	किरण	प्रशांत कुमार	15 - 21
11.	कुछ मीठी-मीठी बातें	उत्पल चटर्जी	22 - 26
12.	नेतरहाट	राजलक्ष्मी गांगुली	27 - 28
13.	मानसिक स्वास्थ्य का महत्व	सुकन्या दास	29 - 30
14.	हैप्पी फादर्स डे	राजर्षि सामंत	31
15.	हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह 2022 की कुछ झलकियाँ		32 - 34
16.	हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह 2023 की कुछ झलकियाँ		35 - 37
17.	तीसरा पहलू	प्रमोद कुमार दास	38 - 39
18.	इतिहास – अपनी आँखों से	स्मृति कुजूर	40
19.	कोलकाता के छुपे हुए आनंद	गोमा देवी सामंत	41 - 42
20.	भावनाएं और कर्म	बिपुल कुमार साव	43 - 45
21.	यमुना की पुकार	किशन राम	46 - 47
22.	स्वास्थ्य व्यवस्था	रवि पासवान	48 - 49
23.	समय	जितेन्द्र कुमार	50
24.	अपना शहर 'बांका'	सोनू कुमार चौधरी	51 - 52
25.	जल संरक्षण	अयन दास	53
26.	सरल जीवन	ओम प्रकाश चौधरी	54
27.	मोह-भंग	रानी भगत	55
28.	बचपन और किशोरावस्था में मोबाइल फोन की भूमिका	अर्णब पॉल	56
29.	मध्य जीवन की संकट	चंदन बनर्जी	57 - 60



कविता/गीत/व्यंग्य			
27.	मेरी मंजिल	चंदन कुमार	61
28.	चलो, कुछ कर लो	विनय कुमार मेहता	62
29.	न जाने क्यों घर जाने को जी करता है	आर्य कुमार	63
30.	हकीकत	सुरजीत घोष	64
31.	दायरा	राजीव गिरि	65
32.	बसेरा	देवाशीष मंडल	65
33.	रफ्तार	प्रमोद कुमार दास	66
34.	सत्य पर विश्वास रखना	संदीप कुमार	67
35.	एस.आई.पी	ओम प्रकाश चौधरी	68
36.	मेरी बेटी ईशाना	सोमा चक्रवर्ती भादुड़ी	69
37.	लिखता हूँ पत्र तुम्हें	बिनोद कुमार शर्मा	70
बाल रचनाकार			
38.	जीवित जल	सरीन तोपनो	71
39.	वह तुम्हें देख रहा है	हिया तुंगा	72
चित्र			
40.	शेर का चित्र (बादशाह)	अनिर्जित गंगोपाध्याय	

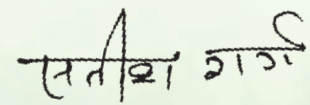




प्रधान महालेखाकार का संदेश

राजभाषा हिंदी के प्रचार एवं प्रसार के लिए पत्रिका एक सशक्त माध्यम है और हिंदी पत्रिकाओं का प्रकाशन राजभाषा हिंदी के प्रति हमारा समर्पण दर्शाता है। भारतीय संविधान सभा द्वारा 14 सितंबर, 1949 को 'हिंदी' को भारत संघ की राजभाषा के रूप में अंगीकार किया गया। संविधान के अनुच्छेद 343 (1) के अनुसार संघ की राजभाषा हिंदी है और अनुच्छेद 351 के अनुसार हिंदी भाषा का प्रसार करना एवं उसका विकास करना संघ का कर्तव्य है। संघ सरकार के अधिकारी/कर्मचारी होने के नाते हिंदी में कार्य करना तथा हिंदी का प्रचार-प्रसार करना हमारा भी संवैधानिक कर्तव्य है। आज देश स्वतंत्रता का अमृत महोत्सव मना रहा है। इस स्वतंत्रता के पीछे भी हिंदी का महत्वपूर्ण योगदान रहा है। आज हिंदी चहुंमुखी विकास की द्योतक है।

“सोना बांग्ला” के इस अंक के प्रकाशन में सहयोग देने के लिए सभी रचनाकारों एवं इसके विविध कार्यों से जुड़े सभी अधिकारियों/कर्मचारियों के प्रति मैं विशेष आभार प्रकट करता हूँ और पत्रिका की प्रगति की कामना करता हूँ। पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए मैं समस्त रचनाकारों तथा संपादक मंडल को शुभकामनाएं देता हूँ तथा आशा करता हूँ कि हमारी यह पत्रिका प्रगति पथ पर निरंतर अग्रसर रहे।



सतीश कुमार गर्ग
प्रधान महालेखाकार

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं ए.एम.जी.-I) का संदेश



यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि राजभाषा पत्रिका 'सोनार बांग्ला' के 17वें अंक का प्रकाशन किया जा रहा है। राजभाषा हिंदी के विकास में कार्यालयीन पत्रिकाओं का महत्वपूर्ण योगदान है। राजभाषा पत्रिकाएं न केवल कर्मियों की सृजनात्मक अभिव्यक्ति को एक मंच प्रदान करती हैं बल्कि कार्यालय में राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अपनी सार्थक भूमिका का निर्वहन भी करती हैं।

राजभाषा का विकास न केवल हमारा संवैधानिक दायित्व है बल्कि हम सब का नैतिक कर्तव्य भी है। यह गौरव का विषय है कि हमारी कार्यालयीन राजभाषा पत्रिका 'सोनार बांग्ला' कार्यालय में राजभाषा के प्रचार-प्रसार में निरंतर अपना महत्वपूर्ण योगदान देती रही है।

मुझे पूरा विश्वास है कि विविध रचनाओं से सुसज्जित यह पत्रिका कार्यालय में राजभाषा के प्रचार-प्रसार की दिशा में अपना उद्देश्य प्राप्त करेगी। पत्रिका के सफल प्रकाशन हेतु मैं पत्रिका के सभी रचनाकारों, संपादक मंडल एवं प्रकाशन कार्य से जुड़े सभी कर्मियों को बधाई देता हूँ तथा पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की कामना करता हूँ।

आर. सरकार.

रत्नेन्दु सरकार

वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन एवं ए.एम.जी.-I)



उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-III) का संदेश

इस कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'सोनार बांग्ला' के नवीनतम अंक के प्रकाशन से मुझे हार्दिक प्रसन्नता हो रही है। इस शुभ कार्य के लिए कार्यालय के सभी अधिकारी एवं कर्मचारी बधाई के पात्र हैं।

कार्यालयीन कार्य में व्यस्तता के बावजूद सभी ने राजभाषा हिंदी के प्रति जिस निष्ठा का परिचय दिया है, वह अपने-आप में अभूतपूर्व है। यदि इसी तरह से सब कर्मी कार्यालयीन कार्य को राजभाषा हिंदी में करना जारी रखें तो वो दिन दूर नहीं जब राजभाषा विभाग द्वारा सौंपे गए लक्ष्य को हम पूरी तरह से प्राप्त कर लेंगे। मैं व्यक्तिगत रूप से समस्त कर्मियों से अनुरोध करना चाहता हूँ कि इस दिशा में अपना प्रयास निरंतर जारी रखें।

पत्रिका के सफल संपादन एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए मेरी शुभकामनाएँ।



डॉ. लिंगराज नायक एस.

उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-III)



उप महालेखाकार (ए.एम.जी.-II एवं IV)

संपादकीय



अत्यन्त प्रसन्नता का विषय है कि विभिन्न विधाओं से सुसज्जित कार्यालयीन राजभाषा पत्रिका “सोनार बांग्ला” का 17वां अंक आपके सामने प्रस्तुत है। इस पत्रिका की गौरवशाली विकास यात्रा सतत् रूप से जारी है। पत्रिका एक ऐसा सशक्त माध्यम है जो समय के अनुभवों को न केवल अपने शब्दों में बयां करता है बल्कि कार्यालय के अधिकारियों एवं कर्मचारियों को एकजुट रखने में इसकी अत्यंत महत्वपूर्ण भूमिका भी है।

हमें अपना कार्यालयीन कामकाज राजभाषा हिंदी में करने को संवैधानिक बाध्यता मानकर नहीं करना चाहिए बल्कि हिंदी को अपने दिल से अप नाना चाहिए। यह भी एक सच्चाई है कि हम अपनी भावनाएं, अपने विचारों को जितने अच्छे से हिंदी में अभिव्यक्त कर सकते हैं, उतने प्रभावी ढंग से अंग्रेजी में अभिव्यक्त नहीं कर सकते, तो क्यों न अपना कार्यालयीन कामकाज हिंदी में करें और हिंदी में कामकाज के प्रतिशत को बढ़ाने में अपना योगदान दें। किसी भी देश की राजभाषा सरकार और जनता के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी होती है, इसलिए प्रत्येक सरकारी कर्मचारी का दायित्व है कि वह अपना शासकीय कार्य राजभाषा हिंदी में करे। भारत की अधिकांश जनता हिंदी समझती है और इसका प्रयोग करती है।

प्रसन्नता की बात है कि कार्यालय में कार्यरत अधिकारी/कर्मचारी अपने-अपने क्षेत्रों में अनुकरणीय योगदान देने के साथ-साथ देश की राजभाषा हिंदी में भी उत्कृष्ट लेख और रचनाएं लिख रहे हैं। मैं ऐसे सभी लेखकों और रचनाकारों को बधाई देता हूँ और आशा करता हूँ कि उनके विचारों से पाठकगण भी निश्चित रूप से लाभान्वित होंगे। यह पत्रिका एक नया कीर्तिमान स्थापित करने की दिशा में आगे बढ़ेगी।

इस पत्रिका के निरंतर सफल प्रकाशन की कामना करते हुए कार्यालय प्रमुख एवं राजभाषा कार्य से जुड़े सभी कार्मिकों को मैं अपनी ओर से हार्दिक शुभकामनाएं देता हूँ।

सुनील कुमार साव

सुनील कुमार साव

हिंदी अधिकारी

आपके पत्र



भारतीय लेखा एवं लेखापरीक्षा विभाग कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पूर्व मध्य रेल, हाजीपुर



संख्या : प्रशा./10-4/ राजभाषा/पत्रिका पावती/120

दिनांक : 10/01/2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्षा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा - I), पश्चिम बंगाल
ट्रेजरी बिल्डिंग्स (प्रथम तल), 2, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम),
कोलकाता, - 700001

विषय - राजभाषा पत्रिका 'सोनार बंगला' के प्राप्ति के सम्बन्ध में।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित अर्धवार्षिक राजभाषा पत्रिका 'सोनार बंगला' के 16वां अंक की प्राप्ति हुई। पत्रिका की आवरण पृष्ठ अत्यंत आकर्षक एवं मनमोहक है। इसके अतिरिक्त पत्रिका में निहित सभी रचनाएँ उच्च दर्जे के हैं। विशेषकर उत्पल चटर्जी, वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी द्वारा रचित 'अपना शहर कोलकाता' कोलकाता के विभिन्न प्राचीन पर्यटक स्थलों के बारे में जो वृत्तान्त हैं, वो निहायत ही जानकारीपूर्ण एवं रोचक हैं। इसके अतिरिक्त पत्रिका में और भी कई लेखों जैसे स्मृति के कैवच पर कुछ दृश्य, छोट्टियों में राजस्थान घूमने का अनुभव, नेपाल- एक आत्मीय स्मृति, हिमालय पर चलो, अडमान-एक सात अनुभव यात्रा में मन में इन स्थलों को घूमने के लिए प्रेरित करने वाला है। पत्रिका में निहित कविताएँ भी उत्तम दर्जे की हैं, जो पाठक के मन में गहरी छाप छोड़ती हैं, एवं लेखक के दूरदर्शिता को प्रदर्शित करती हैं। सच तो ये है, कि ये पत्रिका गमर में सागर भरने जैसी है।

पत्रिका के उत्तम सम्पादन, संकलन एवं साज-सज्जा के लिए पुनः संपादक मंडल एवं सभी सम्पादक कर्मियों को बधाई। आशा करते हैं कि आपकी पत्रिका निरंतर ऐसे ही जानकारीपूर्ण, रोचक एवं प्रेरक रचनाओं का सार होगी।

शुभकामना सहित अगले अंक के प्रतीक्षा में।

लेखक
कोलकाता

कार्यालय - प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), प.म.
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, 2, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम),
कोलकाता-700001
- 6 APR 2022
Office of the Pr. A.G. (Audit-I), W.B.
Treasury Buildings, 2, Govt. Place (West),
Kolkata-700001

हाजीपुर,

हिंदी अधिकारी
राजभाषा अनुभाग



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग INDIAN AUDIT AND ACCOUNTS DEPARTMENT प्रधान निदेशक लेखापरीक्षा (केंद्रीय) चेन्नै का कार्यालय OFFICE OF THE PRINCIPAL DIRECTOR OF AUDIT (CENTRAL) CHENNAI



सं.प्रनि.ले.प.के/हिंदी अनुभाग/14-02/2022-23/196

दिनांक.23.03.2023

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्षा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) पश्चिम बंगाल,
प्रथम तल-2, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग्स
कोलकाता-700 001

कार्यालय - प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I), प.म.
ट्रेजरी बिल्डिंग्स, 2, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम),
कोलकाता-700001
27 MAR 2023
Office of the Pr. A.G. (Audit-I), W.B.
Treasury Buildings, 2, Govt. Place (West),
Kolkata-700001

विषय : राजभाषा पत्रिका "सोनार बंगला" के 16^{वें} अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित राजभाषा पत्रिका "सोनार बंगला" के 16^{वें} अंक की एक प्रति इस कार्यालय में प्राप्त हुई। धन्यवाद।

पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ सुविधापूर्ण तथा ज्ञानप्रद हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं इसमें प्रकाशित छायाचित्र अत्यंत आकर्षक हैं। पत्रिका का कलेवर भी अत्यंत लुभावना है एवं पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, कहानियाँ, कविताएँ एवं यात्रा वृत्तान्त भावपूर्ण, सार्थक तथा मन को छू लेने वाली हैं। सभी रचनाकार एवं पत्रिका के सुन्दर प्रकाशन के लिए संपादक मंडल बधाई के पात्र हैं। विशेषकर उत्पल चटर्जी कृत 'अपना शहर कोलकाता', शुभाशीष दे कृत 'रंगमंच-एक विलुप्त कला के कगार पर', सुनील कुमार साव कृत 'रख मुझे मैं वक्त को', किशन राम कृत 'लल्ला मैरा' विशेष प्रशंसा के पात्र हैं।

पत्रिका की निरंतर प्राप्ति एवं उच्चवर्णन विषय के लिए इस कार्यालय की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया

डि.प्र.राजकुमार

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन)

05/01/23
प्रधान महालेखाकार (ले० व०) हरियाणा का कार्यालय
लेखा भवन, प्लॉट नं० 4 व 5, सेक्टर 33-बी, चण्डीगढ़-160020
टेलीफोन नं० 2610957, 2613211, 2615382 फैक्स नं० 0172-2603824
OFFICE OF THE ACCOUNTANT GENERAL (A&E) HARYANA,
LEKHA BHAWAN, PLOT Nos. 4 & 5, SECTOR 33-B
CHANDIGARH-160 020
EPABX No. 2610957, 2613211, 2615382 Fax No. 0172-2603824
E mail - agaharyana@cag.gov.in

हिंदी/कक्षा/पत्र.प्रति./2022-23/270
दिनांक: 22.12.2022

सेवा में

वरि. लेखा परीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्षा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1),
पश्चिम बंगाल, कोलकाता।

विषय : हिंदी पत्रिका 'सोनार बंगला' के 16^{वें} अंक के सम्बन्ध में।

महोदय,

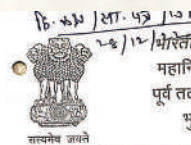
आपके कार्यालय के पत्र दिनांक 23.11.2022 के द्वारा आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका 'सोनार बंगला' के 16^{वें} अंक की प्रति सधन्यवाद प्राप्त हुई। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उच्चस्तरीय, जानकारीपूर्ण एवं प्रशंसनीय हैं। पत्रिका में समाविष्ट श्री उत्पल चटर्जी का लेख 'अपना शहर कोलकाता', सुश्री गुंजा कुमारी का लेख 'स्वास्थ्य', श्री संदीप कुमार सरकार का लेख 'परमा का जन्मदिन', विनोद कुमार का लेख 'लोकतंत्र के चौथे स्तंभ की भूमिका', सुश्री रीमा सेठ का लेख 'ऑनलाइन कक्षाओं के नुकसान और फायदे' एवं श्री शुभाशीष दे का लेख 'रंगमंच- एक विलुप्त कला के कगार पर' बहुत ही जानकारीपूर्ण एवं रोचक हैं।

इसके अतिरिक्त श्री अक्षयव नाथ चतुर्वेदी की कविता 'ध्या लिखें', श्री प्रमोद कुमार दास की कविता 'मित्र', एवं श्री सुनील कुमार साव की कविता 'रख मुझे मैं वक्त को' पठनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादकमंडल बधाई के पात्र हैं। पत्रिका के उच्चवर्णन विषय हेतु हार्दिक शुभकामनाएँ।

भवदीया

प्रजा सिंह
हिंदी अधिकारी



भारतीय लेखापरीक्षा और लेखा विभाग महानिदेशक लेखापरीक्षा का कार्यालय पूर्व तट रेलवे, तीसरी मंजिल, रेल सदन भुवनेश्वर - 751017 (ओडिशा)



सं. रा.भा.अ./पत्रिका/2022-23

दिनांक-26.12.2022

सेवा में,

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी/हिंदी कक्षा,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-I) पश्चिम बंगाल,
ट्रेजरी बिल्डिंग्स (प्रथम तल), 2, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम),
कोलकाता - 700001
ईमेल- hindicellau1.wbl.au@cag.gov.in

विषय- हिंदी पत्रिका "सोनार बंगला" के 16^{वें} अंक की प्राप्ति के संबंध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रेषित वार्षिक हिंदी पत्रिका "सोनार बंगला" का 16^{वाँ} अंक प्राप्त हुआ, एतदर्थ धन्यवाद। पत्रिका का कलेवर व रूपरेखा अत्यधिक आकर्षक है। इस पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएँ उत्कृष्ट, जानकारीपूर्ण और रोचक हैं, विशेषकर निम्नलिखित रचनाकारों की रचनाएँ अत्यधिक प्रशंसनीय हैं:-

क्रम	रचनाकार	रचनाएँ
1.	श्री सुनील कुमार साव	कार्यालय हिंदी का स्वरूप, रख मुझे मैं वक्त को
2.	श्री सन्दीप कुमार सरकार	परमा का जन्मदिन
3.	श्री अर्णव कर	हिमालय पर चलो
4.	श्री राजीव गिरि	अतीत के अवशेषों से
5.	श्री प्रशांत कुमार	स्मृति के कैवच पर कुछ 'दृश्य' (कोलकाता, पुरी, शिमला)

इस पत्रिका को सफल एवं उच्चवर्णन बनाने में योगदान देने वाले सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को हार्दिक शुभकामनाएँ।

यह पत्र निदेशक लेखापरीक्षा के अनुमोदन से जारी किया गया है।

भवदीया,

डी.प्र.राजकुमार
(कीर्ति श्री)
हिंदी अधिकारी

आपके पत्र

18-08/11/12/12
18-16/12/22

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हक.),
पंजाब एवं यू.टी., चंडीगढ़-160017
OFFICE OF THE PRINCIPAL ACCOUNTANT
GENERAL (A&E) PUNJAB
& U.T., CHANDIGARH-160017
फोन : 0172-27002174, फैक्स 0172-2703110
जामाका- हिंदी कथा/पत्रिका समीक्षा/3-10/2022-23/595
दिनांक- 09-12-2022

Office of the Principal Accountant General (A&E), W.B.
Treasury Building, 2, Govt. Place (West)
Kolkata-700001

संविधान के तहत
Dedicated to Truth in Public Interest

सेवा में
हिंदी अधिकारी,
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1), पश्चिम बंगाल
2, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग,
कोलकाता - 700001

विषय-विभागीय पत्रिका "सोनार बांग्ला" के 16 वें अंक की पावती।

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित पत्रिका "सोनार बांग्ला" का 16 वाँ अंक प्राप्त हुआ। इस पत्रिका में प्रकाशित सभी रचनाएँ रुचिकर, भावयुक्त एवं उद्देश्यपूर्ण हैं। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है। कार्यालयीन गतिविधियों से संबंधित छायाचित्र भी मनमोहक हैं।

श्री सुनील कुमार साव की "कार्यालयीन हिंदी का स्वरूप", श्रीमती सुकन्या दास की "आरसी", श्रीमती गुंजा कुमारी की "स्वास्थ्य", श्री शुभाशीष दे की "रंगमंच - एक विलुप्त कला के कगार पर", श्रीमती सोमा चक्रवर्ती भादुड़ी की "सोच" एवं श्री राजीव गिरि की "अतीत के अवशेषों से" रचनाएँ विशेष रूप से प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका को सुरुविर्पूर्ण एवं उपयोगी बनाने के लिए संपादकीय मंडल को बधाई। पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय
हिंदी अधिकारी

18-08/11/12/12
20/12/22

भारत सरकार
भारतीय लेखा तथा लेखा परीक्षा विभाग
प्रधान महालेखाकार, (लेखापरीक्षा)
हिमाचल प्रदेश, शिमला-171003

Government of India
Indian Audit and Accounts Department
Principal Accountant General (Audit)
Himachal Pradesh, Shimla-171003

संख्या: वि.अ./बांग्ला पत्रिका/2022-23/702
दिनांक- 13.12.2022

सेवा में
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिंदी कक्षा),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1),
पश्चिम बंगाल, कोलकाता-700001।

विषय:- हिंदी पत्रिका "सोनार बांग्ला" के 16 वें संस्करण की प्रतिपुष्टि के सम्बन्ध में।

महोदय/महोदया,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "सोनार बांग्ला" का 16वाँ अंक प्राप्त हुआ। इसके लिए सार्ध धन्यवाद। ये अंक अपने आवरण पृष्ठ, साज-सज्जा, मुद्रण स्पष्टता के कारण बहुत आकर्षक और मनोहारी लग रहा है। विभिन्न प्रकार की रचनाओं से सजी आवाही पत्रिका हिंदी कार्यालय की दिशा में एक चुनौती प्रयास है।

इस अंक में प्रकाशित लेख "स्वास्थ्य, संपर्कित जीवन, जिंदगी की लहरें, और रच मुद्रों में एक कदम" विशेष रूप से उल्लेखनीय है। इस पत्रिका में संकलित सभी रचनाएं पठनीय, रुचिकर एवं प्रेरणादायक हैं, जो निरंतर हमारे ज्ञान में वृद्धि करती हैं।

राजभाषा हिंदी के प्रचार-प्रसार में यह पत्रिका महत्वपूर्ण योगदान देगी। इस पत्रिका के सभी रचनाकारों एवं संपादक मंडल को पत्रिका के सफल प्रकाशन के लिए हार्दिक बधाई एवं पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति के लिए शुभकामनाएं।

भवदीय
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
(हिंदी कक्षा)

18-08/11/12/12
12/12/22

आज़ादी का
अमृत महोत्सव

कार्यालय महानिदेशक लेखापरीक्षा, पर्यावरण
एवं वैज्ञानिक विभाग, कोलकाता शाखा
मुख्य निदेशक महानिदेशक कार्यालय भवन, छठा तल, निजाम पैक, 1
ए.जे.जी. रोड रोड 234/4, कोलकाता-700020
फोन : 033-22894111/12/13 फैक्स : 033-2289-4060
ई-मेल:-broadkolkata@cag.gov.in

Office of the P.A.G. (Audit-I), W.B.
Treasury Building, 2, Govt. Place (West)
Kolkata-700001

संविधान के तहत
Dedicated to Truth in Public Interest

संख्या वि.अ./1(17)21/2012-13/2021-22/446
दिनांक-08.12.2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (प्रशासन),
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1),
पश्चिम बंगाल-2, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम),
ट्रेजरी बिल्डिंग,
कोलकाता-700 001

विषय:- हिंदी पत्रिका "सोनार बांग्ला" के 16वें अंक की अभिलेखीकृत एवं प्रतिक्रिया

महोदय,

आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिंदी पत्रिका "सोनार बांग्ला" के 16वें अंक की ई-प्रति प्राप्त हुई। सर्वप्रथम इसके लिए सार्ध धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर श्री उपलब्ध पट्टनी जी की यात्रावृत्त "अपना बाहर कोलकाता", श्री प्रशान्त कुमार जी का आलेख "स्मृति के नैजबस पर कुछ 'दृश्य' (कोलकाता, पुरी, चिमला)", श्री अमरिष घोष जी का आलेख "ऑडिट अनुभव-बगदाद में पठित एक रात", श्री शुभाशीष दे जी का आलेख "रंगमंच- एक विलुप्त कला के कगार पर", श्री सुनील कुमार साव जी की कविता "रच मुद्रों में बसत को" और श्री राजीव गिरि जी की कविता "अतीत के अवशेषों से" अत्यंत ही उत्कृष्ट एवं सराहनीय हैं।

पत्रिका के श्रेष्ठ संकलन हेतु संपादक मंडल के सभी सदस्य बधाई के पात्र हैं। आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका "सोनार बांग्ला" इन्हीं तरह निरंतर प्रगति पथ पर अग्रसर रहे, यह हमारी शुभकामना है।

भवदीय,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (राजभाषा)

18-08/11/12/12
12/12/22

कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)-प्रथम
30प्र0, प्रयागराज
Office of the Principal Accountant General (Accounts & Entitlement)-I
U.P., Prayagraj

संविधान के तहत
Dedicated to Truth in Public Interest

Office of the P.A.G. (Audit-I), W.B.
Treasury Building, 2, Govt. Place (West)
Kolkata-700001

संख्या वि.अ./पत्रिका (09)/76421
दिनांक : 07.12.2022

सेवा में,
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी / हिंदी कक्षा
कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखापरीक्षा-1), प. बंगाल
2, गवर्नमेंट प्लेस (पश्चिम), ट्रेजरी बिल्डिंग,
कोलकाता - 700 001

विषय:- हिंदी पत्रिका "सोनार बांग्ला" के 16वें अंक की पावती एवं प्रतिक्रिया प्रेषित करने के संबंध में।

महोदय,

आपके पत्रांक हिंदी कक्षा/सोनार बांग्ला/236-305 दिनांक 22.11.2022 द्वारा प्रेषित हिंदी पत्रिका "सोनार बांग्ला" के 16वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, सार्ध धन्यवाद। पत्रिका का आवरण पृष्ठ आकर्षक है तथा मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। पत्रिका में तमगहित सभी रचनाएँ सरस एवं पठनीय हैं। विशेषकर श्री सुरजीत घोष की कविता "ज़िंदगी की लहरें", श्री किशन राम की कविता "तन्ना मेरा", श्रीमती सुकन्या दास का लेख "आरसी", श्री अमर राजत का लेख "गंगा नदी - भारतीय संस्कृति की पहचान", एवं श्री शुभाशीष दे का लेख "रंगमंच - एक विलुप्त कला के कगार पर" आदि रोचक एवं जानकारीपूर्ण हैं।

पत्रिका के कुशल सम्पादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। कार्यालय परिवार पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

भवदीय,
हिंदी अधिकारी

वाक्यांश और अभिव्यक्तियां

In English	In Hindi (हिन्दी में)
Above mentioned	उपर्युक्त
A brief summary of the case is placed blow	मामले का सारांश नीचे रखा है
Accepted for payment	भुगतान के लिए स्वीकृत
Accord approval to...	कृपया... को अनुमोदित करें,
Acknowledgement of receipt	प्राप्ति सूचना
Acting in official capacity	पद की हैसियत से कार्य करते हुए
Action is underway	कार्रवाई की जा रही है
Admissibility of claim	दावे की स्वीकार्यता
After consultation with	से परामर्श करके
As proposed	यथा प्रस्तावित
Bill of payment	भुगतान बिल
Certificate by the competent authority is required	सक्षम प्राधिकारी का प्रमाणपत्र अपेक्षित है
Come into force	लागू होना
Delegation of financial powers	वित्तीय शक्तियों का प्रत्यायोजन
Draft, as amended, may be issued	यथासंशोधित मसौदा/प्रारूप जारी किया जाए
Draft for approval	अनुमोदनार्थ प्रारूप, अनुमोदनार्थ मसौदा
Ex-post facto sanction	कार्योत्तर मंजूरी, कार्योत्तर संस्वीकृति
For approval	अनुमोदनार्थ, अनुमोदन के लिए
For ready reference	तत्काल संदर्भ के लिए
I am directed to state that	मुझे यह सूचित करने का निदेश हुआ है कि
In accordance with	के अनुसार
In pursuance of	के अनुसरण में, के अनुसार
It has been noticed that	यह देखा गया है कि
Last pay certificate (L.P.C.)	अंतिम वेतन प्रमाणपत्र
Leave travel concession	छुट्टी यात्रा रियायत
May be approved	अनुमोदित किया जाए
May be passed for payment	भुगतान के लिए पास करें
No claim certificate	अदावा प्रमाणपत्र
No objection certificate	अनापत्ति प्रमाण-पत्र, अनापत्ति पत्र
Notice in writing	लिखित सूचना
Not payable before	के पूर्व अदेय
On behalf of	की ओर से
On deputation	प्रतिनियुक्ति पर
On probation	परिवीक्षाधीन
Order may be issued	आदेश जारी कर दिया जाए



सुनील कुमार साव
हिंदी अधिकारी

भारत के सांस्कृतिक विस्तार में हिंदी की भूमिका

संस्कृति किसी भी देश, जाति और समुदाय की आत्मा समान होती है। संस्कृति से ही देश, जाति या समुदाय के उन समस्त संस्कारों का पता चलता है जिनके आधार पर वह अपने आदर्शों, जीवन मूल्यों आदि का निर्धारण करता है। अतः संस्कृति का साधारण अर्थ होता है- संस्कार, सुधार, परिवार, शुद्धि, सजावट, इत्यादि। आजकल सभ्यता और संस्कृति दोनों का समान अर्थ माना जाने लगा है लेकिन असल में संस्कृति और सभ्यता अलग-अलग होती हैं। सभ्यता में मनुष्य के राजनीतिक, प्रशासनिक, आर्थिक, प्रौद्योगिकीय और दृश्य कला रूप शामिल होते हैं जो जीवन को सुखमय बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं जबकि संस्कृति में **कला, विज्ञान, संगीत, नृत्य और मानव जीवन** सम्मिलित है।

भारत एक विविध संस्कृति वाला देश है। यह विविधता हमारे देश के लोगों, संस्कृति और मौसम में भी प्रमुखता से दिखाई देती है। हिमालय की बर्फ से लेकर दक्षिण के दूर दराज में खेतों तक, पश्चिम के रेगिस्तान से पूर्व के नम डेल्टा तक, सूखी गर्मी से लेकर पहाड़ियों की ठंडक तक, भारतीय जीवन शैलियाँ इसके भूगोल का विविध विशाल रूप दर्शाती हैं। भारतीय संस्कृति अपनी विशाल भौगोलिक स्थिति की तरह ही अलग-अलग है। यहाँ के लोग अलग-अलग भाषाएँ बोलते हैं, अलग-अलग तरह के कपड़े पहनते हैं, अलग-अलग धर्मों का पालन करते हैं, अलग-अलग तरह का भोजन करते हैं लेकिन उनका स्वभाव एक समान होता है।

संस्कृति किसी देश की जीवन शैली, आचार-विचार तथा सामाजिक-धार्मिक प्रवृत्तियों आदि का परिचायक होती हैं। प्रत्येक देश का साहित्य उस देश की सांस्कृतिक एकता तथा जनता की चित्तवृत्तियों को प्रकट करता है। उस देश के प्रत्येक कालखंड विशेष कर साहित्य देश की जनता की सांस्कृतिक विविधता के कारण भिन्न हो सकता है। उदाहरण के लिए भारतीय संस्कृति में महाभारत, रामायण, वेद, उपनिषदों, आदि का महत्व साहित्यिक परिदृश्य की तुलना में धार्मिक अधिक है। “प्राचीन भारतीय समाज में उपनिषदों की रूपक कथाएँ, महाभारत के उपाख्यान, बौद्ध जातक कथाएँ, राजा विक्रमादित्य, राजा भोज जैसे प्रसिद्ध एवं लोकप्रिय राजाओं से संबंधित कहानियाँ कहने-सुनने की परंपरा विद्यमान थी। पुराणों में इस परंपरा का विकसित रूप मिलता है। पुराण काल में आर्यों की उर्वर कल्पना शक्ति ने असंख्य देवी-देवताओं की सृष्टि की और उनसे संबंधित अनेक प्रकार की कहानियाँ गढ़ी गईं। आज का बुद्धिवादी पाठक इन पौराणिक कथाओं को कपोल-कल्पित कहकर चाहे उनकी उपेक्षा कर दे किन्तु प्राचीन भारतीयों का इन कहानियों में अटल विश्वास था।” इन कहानियों की मूल चेतना भारतीय भाषाओं में लगभग एक सी है। हिंदी कहानियों के समान ही अन्य भारतीय भाषाओं में भी आस्था, परस्पर सौहार्द एवं कल्याणकारी भावना के सकारात्मक तत्वों का समावेश है।

‘संस्कृति’ की अवधारणा के परिप्रेक्ष्य में सर्वोत्तम गुणों को आत्मसात करना संस्कृति माना गया है। संस्कृति, दैहिक एवं वैचारिक योग की वह अवस्था मानी गई है, जिसमें मानव विकास पाता है। विचार-व्यवहार एवं रुचियों के परिष्करण से सभ्यता विकास पाती है। “इस अर्थ में, संस्कृति कुछ ऐसी चीज का नाम हो जाता है, जो बुनियादी और अंतर्राष्ट्रीय है। फिर, संस्कृति के कुछ राष्ट्रीय पहलू भी होते हैं। और इनमें कोई संदेह नहीं कि अनेक राष्ट्रों ने अपना कुछ विशिष्ट व्यक्तित्व तथा अपने भीतर

कुछ खास ढंग के मौलिक गुण विकसित कर लिए हैं।” वर्तमान काल में भारतीय संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में अनेक भाषाओं (हिंदी, पंजाबी, बांग्ला, असमिया, तमिल आदि) में साहित्य लिखा जा रहा है, जिसका राजनीतिक-सामाजिक महत्व अधिक है। फलतः साहित्य धार्मिक हो या राजनीतिक-सामाजिक वो मानव कल्याणकारी जीवन मूल्यों का दर्शन ही प्रस्तुत करता है। हिंदी का विकास शौरसेनी अपभ्रंश से हुआ। हिंदी ने भारतीय भाषाओं के अतिरिक्त विदेशी भाषाओं (अरबी, अंग्रेजी, पुर्तगाली, आदि) के शब्दों को भी ग्रहण किया है। फलतः हिंदी संपर्क भाषा के रूप में संपूर्ण भारत में मान्य है। दक्षिण भारत से सुदूर पूर्वोत्तर भारत तक हिंदी समझने-बोलने वाले मिल जाते हैं। यही भारतीय संस्कृति की राष्ट्रीय एकता का प्रमाण है कि जहाँ लंबे संघर्ष एवं चुनौतियों के पश्चात भी हिंदी ही राष्ट्रभाषा के रूप में द्रष्टव्य है।

भारत भाषा, समाज एवं संस्कृति के परिप्रेक्ष्य में विविधता का देश है। यही सांस्कृतिक विविधता भारतीय जीवन दर्शन का महत्वपूर्ण बिन्दु भी है और राष्ट्रीय एकता का परिचायक भी। भारत सांस्कृतिक विविधता का देश है। यही सांस्कृतिक विविधता भारत की ‘अनेकता में एकता’ जैसे बंधुत्व सूत्र के राष्ट्रीय हित के उद्देश्यों की पूर्ति करता है। भारत के दक्षिण में द्रविड़ संस्कृति, उत्तर भारत में आर्य संस्कृति तथा पूर्वोत्तर भारत में आदिम संस्कृतियाँ विद्यमान हैं, जो एक दूसरे से सामाजिक व भाषाई स्तर पर पूर्ण रूपेण भिन्न हैं परंतु इसके उपरांत भी ये भारतीय जनसंघ के अंतर्गत देश के विकास में सहयोगी बनी हुई हैं। समय-समय पर भारतीय जनता में फूट डालकर इसकी राष्ट्रीय सांस्कृतिक एकता को तोड़ने का प्रयास भी किया जाता रहा है। अतः इस प्रकार भारत राष्ट्रीय स्तर पर अपनी लोकतांत्रिक व्यवस्था के कारण जनता की सांस्कृतिक विविधता के पश्चात भी एकता के सूत्र में बंधा है। शांति, मैत्री और बंधुत्व के संदेश के साथ संपूर्ण विश्व में भारत ने ख्याति पाई है और हिंदी ने इस दिशा में मुख्य भूमिका निभाई है।

हिंदी भाषा भारतीय संस्कृति एवं परंपरा को प्राण वायु देने वाली भाषा है। हिंदी भाषा का इतिहास इस तथ्य को पुष्ट करता है कि हिंदी को सामाजिक-सांस्कृतिक एवं राजनीतिक पहचान दिलाने में डॉ॰ श्यामसुंदर दास, पंडित मदन मोहन मालवीय, राजा शिवप्रसाद ‘सितारेहिन्द’, राजा लक्ष्मण सिंह, राजा रामपाल सिंह, राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन, महात्मा गांधी, दयानन्द सरस्वती सहित विदेशी विद्वानों फ्रेडरिक पिंकाट, फादर कामिल बुल्के, विलियम केरे, जॉर्ज अब्राहम ग्रियर्सन, इत्यादि हिंदी समर्थकों का सहयोग रहा, जिनका सहयोग एवं समर्थन पाकर हिंदी भाषा ने संघर्ष का लंबा रास्ता तय किया।

हिंदी भाषा को राष्ट्रभाषा बनने में समय-समय पर चुनौतियों का सामना करना पड़ा है। दक्षिण भारत में हिंदी का विरोध, बांग्ला भाषियों का हिंदी विरोध, क्षेत्रीय भाषाओं को ही शिक्षा का माध्यम बनाने की माँग, आदि सभी हिंदी को अस्वीकार करने के कारण थे। परंतु समय के साथ इन चुनौतियों का अंत हो रहा है और हिंदी का प्रचार-प्रसार बढ़ रहा है। हिंदी विरोधी विचारधाराओं में तमिलों का विरोध अत्यंत उग्र था जिसके समाधान हेतु महात्मा गांधी ने दक्षिण भारत हिंदी प्रचार सभा (मद्रास) की स्थापना की। आज लगभग सभी अहिंदी भाषी भारतीय प्रदेशों में हिंदी का प्रचार-प्रसार शिक्षा, पत्र-पत्रिकाओं, सभा-संगोष्ठियों, कार्यशालाओं, इत्यादि द्वारा तीव्रता के साथ हो रहा है जिसमें स्थानीय जनता भी रुचि ले रही है। इसका कारण हिंदी का इनकी भाषा एवं संस्कृति से जुड़कर अभिव्यक्ति प्रदान करना है। हिंदी ने इन क्षेत्रीय भाषाओं का अनुवाद कर पाठक वर्ग को इनकी भाषा-संस्कृति, समाज से अवगत होने का अवसर दिया है। हिंदी अनेक समुदायों-संस्कृतियों की भाषा बन चुकी है जिसके माध्यम से इनका संदेश संपूर्ण देश की जनता तक पहुँच पाया है। अतः हिंदी की आवश्यकता आज प्रत्येक क्षेत्र में बढ़ी है। ऐसा नहीं है कि यह आवश्यकता वर्तमान काल की नवीनतम माँग है। अंग्रेजी शासन के दौर में भी हिंदी भारत की आम जनता तक विचारों के संप्रेषण की भाषा थी। राजनीतिक-सामाजिक, धार्मिक स्तर पर हिंदी की आवश्यकता को अंग्रेजों ने समझा था और फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना इसका प्रमाण है। “ईस्ट इंडिया कंपनी ने प्रशासनिक सुविधा के लिए सन् 1800 ई. में फोर्ट विलियम कॉलेज की स्थापना की। इसमें हिंदी, मराठी, गुजराती, तमिल, इत्यादि देशी भाषाओं में सामान्यतः पुस्तकें अनूदित होती थी। हिंदी या हिन्दुस्तानी के प्राध्यापक गिलक्रिस्त थे। उर्दू के लिए अलग मुंशी नियुक्त किए गए एवं भाखा या हिन्दवी के लिए अलग। भाखा-मुंशियों के रूप में लल्लू

लाल और सदल मिश्र की नियुक्ति हुई।” इसके अतिरिक्त ईसाई धर्म के प्रचार एवं बाइबिल के अनुवाद प्रकाशन में भी हिंदी भाषा ने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। सर सैयद अहमद खाँ, गार्सा द तासी आदि विद्वान हिंदी को गँवारू भाषा संबोधित कर उसके धार्मिक, साहित्यिक, दार्शनिक एवं सामाजिक-राजनीतिक महत्व को अस्वीकार कर रहे थे। इस समय तक उर्दू ही अदालती एवं प्रशासनिक व्यवस्था की भाषा थी। जबकि हिंदी उत्तर भारत के लगभग प्रत्येक प्रदेश की भाषा थी। उनकी संस्कृति से जुड़ी हिंदी एक मात्र ऐसी भाषा थी जो ग्रामीण एवं नगरीय क्षेत्रों की दूरी को कम करती थी। “वे इस बात से डरा करते थे कि कहीं नौकरी के लिए ‘भाखा’ संस्कृति से लगाव रखने वाली ‘हिंदी’ न सीखनी पड़े अतः उन्होंने पहले उर्दू के अतिरिक्त हिंदी की पढ़ाई की व्यवस्था का घोर विरोध किया। उनका कहना था कि जब अदालती कामों में उर्दू ही काम में लायी जाती है तब एक और जबान का बोझ डालने से क्या लाभ ? ‘भाखा’ हिन्दुओं की कथावार्ता, आदि कहते - सुन वे हिंदी को ‘गँवारी’ बोली भी कहा करते थे।” हिंदी को हिन्दुओं की तथा उर्दू को मुसलमानों की भाषा बताकर हिंदी, उर्दू के बीच खाई को गहरी करने का कार्य गार्सा द तासी ने किया। वे उर्दू के प्रबल समर्थक थे। उन्होंने भारतीय सांस्कृतिक एकता के दो प्रमुख स्तंभों, हिन्दू-मुस्लिम समुदायों में दूरी उत्पन्न करने के लिए ‘अंजुमन लाहौर सभा’ के अध्यक्ष सैयद हादी हुसैन खाँ के व्याख्यान का स्वागत करते हुए उर्दू को देश की प्रचलित योग्य भाषा कहा और इसी सभा की दूसरी बैठक में बाबू नवीन चंद्र राय के वक्तव्य का विरोध करते हुए उन्हें कट्टर हिन्दू कहा। सर सैयद अहमद खाँ ने भाषा के आधार भारतीय सांस्कृतिक एकता को भिन्न माना और इस भिन्नता की आग को अंग्रेजों ने बराबर हवा दी। इस प्रकार सर सैयद अहमद खाँ ने मुसलमानों को सुविधाएँ दिलवाने के लिए उनको भारतीय संस्कृति से काटना चाहा, हिन्दुओं से धार्मिक भिन्नता बताकर मुसलमानों को अंग्रेजों के निकट बताया। परंतु जल्दी ही मुस्लिम इस धारणा से आगे बढ़ गए और गंगा-जमुनी संस्कृति के आधार पर राष्ट्रीय एकता के सूत्र में बंधकर राष्ट्रीय स्वतंत्रता आंदोलनों में अंग्रेजों के विरुद्ध भाग लेने लगे।

भारतीय संस्कृति की इस गंगा-जमुनी संस्कृति की झलक हिंदी भाषा के उपन्यास सम्राट प्रेमचंद के लेखन में देखी जा सकती है जिनमें इनका उपन्यास ‘कर्मभूमि’ विशेष रूप से उल्लेखनीय है। प्रारंभ में प्रेमचंद उर्दू के ही लेखक थे। परंतु “प्रेमचंद ने सन् 1914-15 से हिंदी में लिखना शुरू किया क्योंकि केवल उर्दू में लिखने से ही उन्हें संतोष नहीं था। हिंदी में लिखकर वे पूरे देश से जुड़ना चाहते थे।” भले ही प्रेमचंद ने उर्दू से बढ़कर हिंदी को लेखन के लिए अपना लिया था परंतु उनकी जनचेतना एवं सामाजिक-सांस्कृतिक एकता के संदेश में कभी कमी नहीं आई क्योंकि प्रेमचंद ने भारतीय समाज व संस्कृति के जो रंग राजनीतिक उद्देश्यों की पूर्ति हेतु उर्दू में भरे थे, वो आगे चलकर हिंदी में भी द्रष्टव्य हुए। लगभग इसी कालखंड में अंग्रेजी भाषा का प्रभाव बंगाल में बढ़ा। बंगाल की जनता में ईसाई धर्म तथा अंग्रेजी भाषा के प्रति उत्साह तीव्रता से बढ़ रहा था। किन्तु स्वामी विवेकानन्द, बंकिमचंद्र चटर्जी, उदयचंद, आदि बंगाली विद्वान-विचारक अंग्रेजी भाषा से भारतीय जनता के लिए खतरा महसूस कर रहे थे। इस खतरे के पीछे इनका अंदेशा था कि अंग्रेजी भारतीय सामाजिक-सांस्कृतिक एकता को तोड़ने में सहायक बन सकती है। “1838 में उदयचंद ने बांग्ला भाषा में एक लेख लिखा था। उसका अभिप्राय यह था कि इस देश के लोग अपनी भाषा का अध्ययन करके ही वह क्षमता प्राप्त कर सकते हैं जिससे वे अपनी गुलामी की बेड़िया काट सकें। बंकिम अंग्रेजी शिक्षा-प्राप्त लोगों को फालतू और विवेकानन्द रीढ़हीन कहते थे।” इस कालखंड के कुछ दिनों के पश्चात ही अंग्रेजी नीति का सत्य भी सामने आ गया जिसके प्रति विवेकानन्द, बंकिमचंद्र, आदि विद्वानों ने खतरा महसूस किया था। जब 1905 ई. में बंगाल का विभाजन कर दिया गया। यह विभाजन अंग्रेजों की कूटनीति एवं षड्यंत्र पर आधारित था। एक भाषा, समाज-संस्कृति की जनता का विभाजन बंगालियों की आशाओं के विपरीत था। इसका संपूर्ण देश में घोर विरोध भी हुआ। बालमुकुंद गुप्त ने विभाजन की इस त्रासदी पर बंग-विच्छेद नामक निबंध भी लिखा। “बंग-विच्छेद बालमुकुंद गुप्त द्वारा रचित, 21 अक्टूबर 1905 को ‘भारत मित्र’ पत्रिका में प्रकाशित हुआ था। उनकी राजनीतिक सजगता, आक्रोश, क्षोभ, विवशता एवं राष्ट्र गर्व जैसे भावों की स्पष्ट अभिव्यक्ति इस निबंध की प्रमुख विशेषताओं में गिनी जा सकती है। लार्ड कर्जन ने 1905 में बंगाल का विभाजन कर भारत को परतंत्रता में कसने और अपनी प्रशासकीय क्षमता को अक्षुण्ण

बनाने के उद्देश्य से यह बँटवारा किया था। भारतीय वीरों ने विरोध किया, वन्दे मातरम उद्घोष को अपराध बताया, आंदोलन की तीव्रतावश आदेश में संशोधन होने पर भी कर्जन यहीं बना रहा।” बालमुकुंद गुप्त उर्दू-फारसी, अंग्रेजी के अतिरिक्त अनेक भारतीय भाषाओं में भी रुचि रखते थे परंतु उनकी चिंतन शैली हिंदी को ही राष्ट्रभाषा के लिए उपयुक्त भाषा मानती थी। बंग-भंग के विरुद्ध उन्होंने भारतीय जनचेतना के लिए अनेक लेख लिखे, इसी परिप्रेक्ष्य में जनभाषा हिंदी के हित में इन्होंने कहा “हमारे लिए इस समय वही हिंदी उपकारी है, जिसे हिंदी बोलनेवाले तो समझ ही सकें, उनके सिवा उन प्रांतों के लोग भी उसे कुछ समझ सकें जिनमें वह नहीं बोली जाती। हिंदी में संस्कृत के सरल-सरल शब्द अवश्य होने चाहिए। इससे हमारी मूल भाषा संस्कृत का उपकार होगा और गुजराती, बंगाली, मराठी, आदि भी हमारी भाषा को समझने योग्य होंगे। किसी देश की भाषा उस समय तक काम की नहीं होती जब तक उसमें उस देश की मूल भाषा के शब्द बहुतायत के साथ शामिल नहीं होते।” इस प्रकार हिंदी ने अनेक भाषाओं के शब्द ग्रहण किए और भारतीय संस्कृति की मिश्रित व्यवस्था एवं एकता का नेतृत्व किया।

हिंदी का उर्दू, बांग्ला, तमिल, मराठी, इत्यादि भाषाओं से भेद होते हुए भी भारतीय जनता में राष्ट्रीय सांस्कृतिक एकता की भावना बनी रही क्योंकि भारतीय आपस में राजनीतिक-सामाजिक, भौगोलिक तथा भावनात्मक आदि मूल्यों से जुड़े थे। अतः चाहकर भी अंग्रेज भारतीयों के बीच अधिक समय तक सामाजिक-सांस्कृतिक दूरी नहीं रख पाए। ऐसा नहीं था कि सभी अंग्रेज हिंदी के प्रति बैर रखते थे। फ्रेडरिक पिकाट हिंदी भाषा के साहित्य, दर्शन से अत्यधिक प्रभावित हुए थे। “इनका जन्म संवत् 1893 में इंग्लैंड में हुआ। उन्होंने प्रेस के कामों का बहुत अच्छा अनुभव प्राप्त किया और अंत में लंदन की प्रसिद्ध एलन ऐंड कंपनी के विशाल छापेखाने के मैनेजर हुए। वहीं वे अपने जीवन के अंतिम दिनों के कुछ पहले तक शांतिपूर्वक रहकर भारतीय साहित्य और भारतीय जनहित के लिए बराबर उद्योग करते रहे।” हिंदी भारतीय संस्कृति की एकता को शक्ति प्रदान करने वाली वह कड़ी है, जिससे अतीत में अंग्रेजी पढ़े-लिखे भारतीय विद्वान भी जुड़े थे और अंग्रेजी त्याग कर पूर्ण रूपेण भारतीय रंग में रंग गए। इन विद्वानों में महात्मा गांधी का नाम प्रथम श्रेणी में आता है। ये मूल रूप से गुजराती थे। ये अंग्रेजी पढ़े-लिखे, दक्षिण अफ्रीका में बैरिस्टर थे परंतु भारतीय दुर्दशा से दुखी होकर इन्होंने स्वतंत्रता संग्राम से जुड़ने का निर्णय लिया। महात्मा गांधी ने विदेशी वस्त्र, खान-पान एवं भाषा का बहिष्कार किया और भारतीय संस्कृति का अनुसरण करने लगे। भारतीय जनता ने भी गांधी जी का अनुसरण कर भारतीय संस्कृति की महत्ता को समझा। भारतीय संस्कृति की ही महिमा कही जा सकती है कि गांधी जी को ‘बापू’ की उपाधि से भारतीय जनता ने अभिहित किया और सर्वसम्मति से श्रद्धापूर्वक गांधी जी को राष्ट्रपिता स्वीकार किया। महात्मा गांधी ने भी राष्ट्र के प्रति अपने कर्तव्य को पूरी दृढ़ता के साथ निभाया एवं हिंदी को भारतीय संस्कृति एवं एकता की भाषा बताते हुए जीवनपर्यंत राष्ट्रभाषा के परिदृश्य में इसका समर्थन किया।

हिंदी साहित्य सम्मेलन के 64 वें अधिवेशन में डॉ. विश्वनाथ प्रसाद तिवारी ने महामना पंडित मदनमोहन मालवीय, महात्मा गांधी और राजर्षि पुरुषोत्तम दास टंडन-जैसी अनेक महान विभूतियों को उनके हिंदी एवं भारतीय सांस्कृतिक एकता के प्रचार-प्रसार हेतु श्रद्धापूर्वक नमन करते हुए कहा, “मेरे विचार से हर भारतीय को हिमालय और कन्याकुमारी दोनों के दर्शन जरूर करने चाहिए। दोनों अपनी महिमा में विराट हैं। आकाश को छूती बर्फ़ीली चोटियों और लहराता निस्सीम सागर। इन दोनों का दर्शन किसी मनोरम यात्रा के लिए नहीं, अपनी अस्मिता की पहचान और उसकी खोज के लिए जरूरी है। यह जानने के लिए भी जरूरी है कि उत्तर से दक्षिण तक सारा देश सांस्कृतिक दृष्टि से एक है। उसकी तत्व-मीमांसा और विचार-दृष्टि है। उसके स्वभाव और विश्वास में आंतरिक एकता है। महान आचार्यों के नेतृत्व में ज्ञान और भक्ति-आन्दोलन दक्षिण से ही उत्तर पहुँचा था। यहाँ अनेक महत्वपूर्ण धार्मिक तीर्थ हैं, जैसे कि रामेश्वरम, मदुरै, कांची आदि जहाँ उत्तर से साधुओं, संन्यासियों और तीर्थयात्रियों का दल अत्यंत प्राचीनकाल से आता रहा है। कांची में ‘जन्म-मुक्ति’ का विश्वास है, तो काशी में ‘मरण-मुक्ति’ का।” इस प्रकार भारत के सुदूर क्षेत्रों के निवासी अपनी सामाजिक-धार्मिक

आस्थाओं की पूर्ति हेतु पूर्व में कामाख्या, पश्चिम में शिरडी, उत्तर में वैष्णो देवी तथा दक्षिण में रामेश्वरम तक की यात्राएं करते हैं। भारत की पावन धरती पर सूफी-संतों की महान परंपरा ने विकास पाया है और हिन्दू-मुस्लिम संस्कृति को प्राणवायु देकर संजीवनी का कार्य किया है। हिंदी भाषा इस सूफी-संत परंपरा की भाषा बनी। दक्खिनी हिंदी में सूफी-संत परंपरा का वह दर्शन उतनी सशक्तता के साथ तो नहीं आ पाया है जो उत्तर भारत में हैं परंतु सांस्कृतिक परिदृश्य में दक्खिनी हिंदी साहित्य ने अहम् भूमिका निभाई है। यह दक्खिनी हिंदी उत्तर भारत से ही दक्षिण में बरार, बीदर, गोलकुंडा, आदि तक आम जनता के स्थानांतरण के कारण पहुँची और एक नवीन रूप में प्रस्तुत हुई।

वर्तमान में हिंदी का प्रधान रूप खड़ी बोली हिंदी है। इसमें अनेक रचनाकारों ने लेखन कार्य किया और हिंदी को विकास भी प्रदान किया। इसमें हिन्दू-मुस्लिम, सूफी-संत तथा उर्दू के कवि, आदि भी सम्मिलित हैं। “आदिकालीन खड़ी बोली का शब्द-समूह, मुख्यतः तद्भव एवं देशज का था। तत्सम शब्द अपेक्षाकृत कम थे। पश्तो, तुर्की, अरबी, फारसी के शब्द भी कुछ आ गए थे। खड़ी बोली के मध्यकाल का स्वरूप हमें गंग की ‘चंद छंद वर्णन की महिमा’, नानक, दादू, मलुकदास, रज्जबजी आदि संतों, रहीम के ‘मदनाष्टक’, आलम के ‘सुदामचरित्र’, जट्मल की ‘गोराबादल की कथा’, वली, सौदा, इंशा, नज़ीर आदि दक्खिनी एवं उर्दू के कवियों, कुतुबशतम (17 वीं), भोगलु पुरान (18 वीं सदी) तथा संत प्राणनाथ के कुलजमस्वरूप आदि में मिलता है।” भारतीय संस्कृति हजारों वर्षों की अवधि में ज्ञान, धर्म, दर्शन आदि के परस्पर मिलन से मिश्रित व्यवस्था के रूप में विकसित हुई। इस मिश्रित सांस्कृतिक व्यवस्था में भारत के प्रत्येक प्रांत का महत्वपूर्ण योगदान है। कश्मीर का कादिरी संप्रदाय, सूफी-संत संप्रदाय, तमिल के आलवार-नयनार, केरल के शंकराचार्य, नामदेव, तुलसीदास, कबीर, विद्यापति, चैतन्य महाप्रभु, इत्यादि के योगदान से भारतीय संस्कृति एवं जीवन दर्शन को लोक कल्याणकारी भावना, सौहार्द एवं परोपकार का संदेश मिला। इसी भारतीय भूमि पर बुद्ध, महावीर, गुरुनानक आदि मानवता तथा शांति के दूतों ने जन्म लिया जिन्होंने शांति, मैत्री एवं विश्व बंधुत्व की भावना को विश्व में फैलाया। इन सबके मूल में भारतीय दर्शन तथा जीवन मूल्यों का आदर्शवाद है जिसने भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के समय भारतीयों को भिन्न-भिन्न जाति, धर्म, भाषा, प्रांतों का होने के उपरांत भी परस्पर मिलन, सहायता एवं विश्वास की डोर से बाँधे रखा। इसी प्रकार हिंदी भाषा ने भारतीय भाषाओं से कुछ न कुछ ग्रहण कर उसके साहित्य को स्वीकार किया। फलतः हिंदी भाषा स्वतः ही राष्ट्र की संपर्क भाषा एवं अभिव्यक्ति की भाषा बनी।





मनोज कुमार मोवार
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

अध्यात्म एवं आधुनिकता

अध्यात्म और आधुनिकता भले ही प्रथम दृष्टि में दो विरोधी शब्द प्रतीत होते हों, लेकिन ध्यानपूर्वक विचार करने पर अहसास होता है कि ये दोनों शब्द एक सफल एवं सुसंस्कृत जीवन जीने के लिए आवश्यक हैं। जहाँ अध्यात्म चेतना का पूर्ण शुद्धिकरण है वहीं आधुनिकता विवेकपूर्ण जीवन जीने की कला है। समस्त मानवीय दुर्गुणों से परिमार्जित हृदय ही अध्यात्म को सही अर्थ में समझ सकता है। अध्यात्म वास्तव में भौतिकता से परे एक दिव्य अनुभूति है जिसके द्वारा मानव जीवन में अखंड प्रेम, आनंद एवं सन्तोष जैसे गुणों का विकास होता है। अध्यात्म का मार्ग दैनिक कार्य कलापों एवं सांसारिक दायित्वों से पलायन का मार्ग नहीं है अपितु अध्यात्म के सहारे हम जीवन की हर परिस्थिति का सामना शान्त एवं निश्चय भाव से आनंदपूर्वक कर सकते हैं। अध्यात्म हमें संकुचित

विचारधारा से बाहर निकालकर मानवीय कल्याण के लिए अनासक्त भाव से कार्य करने के लिए दिव्य उर्जा प्रदान करता है जो आज के आधुनिक समाज के वास्तविक हित में हैं। आधुनिकता का अर्थ अहंकारवश धन एवं ऐश्वर्य का प्रदर्शन नहीं है, न ही दूसरे को नीचा दिखाने के लिए शक्ति का प्रदर्शन है। बल्कि, आधुनिकता हमें इतिहास से सबक सीखकर जीवन के सर्वश्रेष्ठ गुणों को ग्रहण करने एवं उसके अनुप्रयोग पर जोर डालती है।

अध्यात्म एवं आधुनिकता का सही सम्मिश्रण ही मानवीय जीवन को उपलब्धि के उच्चतम स्तर पर ले जा सकता है। आवश्यकता है – अध्यात्म को सही अर्थ में अपनाने का एवं उच्च आदर्शों के प्रति प्रतिबद्धता कायम रखने की। मनुष्य को पतन की राह पर ढकेलने के लिए तीन प्रबल शत्रु सदा कार्यरत रहते हैं – काम, क्रोध और लोभ और इनको नरक का द्वार भी कहा गया है। इन तीन शत्रुओं पर विजय पाना ही जीवन की वास्तविक सफलता है न कि वैध या अवैध तरीके से धन संग्रह करना, झूठी प्रशंसा एवं यश बटोरना क्योंकि ये क्षणिक हैं और इतिहास गवाह है कि इन तीन शत्रुओं के वश में होकर इस धरा पर अनेक अनैतिक कार्य हुए हैं यथा – मारकाट, हिंसा, बलात्कार, भ्रष्टाचार, आदि-आदि! दुर्भाग्यवश यह परंपरा जारी है और 21वीं शताब्दी में तथाकथित आधुनिक कहलाने वाले समाज आतंकवाद, युद्ध, भूखमरी एवं भ्रष्टाचार जैसी समस्याओं से त्रस्त हैं, जिसका मूल कारण अध्यात्म से विस्मृति और अंध-भौतिकता में गहन संलिप्तता है। अध्यात्म का सही रूप से पालन ही हमें समाज में व्याप्त हिंसा, भ्रष्टाचार एवं अनैतिकता से डटकर मुकाबला करना एवं इसे जड़ से उखाड़ फेंकने का अदम्य साहस प्रदान कर सकता है।

आज सारा विश्व तरह-तरह की मानवीय त्रासदियों से ग्रस्त है :- युद्ध, प्रदूषण, भूखमरी, हिंसा, आतंकवाद, इत्यादि। हमारा देश, जो एक समय राम, कृष्ण एवं गौतम बुद्ध की पुण्य भूमि रही थी, कई विकराल समस्याओं से ग्रसित है जैसे – भ्रष्टाचार, बलात्कार, प्रदूषण, हिंसा आदि। इसे रोकने के लिए हमने कई संस्थाएँ भी बनाई हैं यथा – सुप्रीम कोर्ट, सी. बी. आई., पुलिस, जेल, ई. डी., इनकम टैक्स, ऑडिट, इत्यादि। फिर भी इतने ताम-झाम के बावजूद ऐसी घटनाओं पर रोक लगाना संभव नहीं हो रहा है और आए दिन नए-नए कारनामों उजागर हो रहे हैं जिसमें ऊँचे पदों पर बैठे नेता, अधिकारी, अभिनेता, अभिनेत्री, व्यवसायी इस दुष्क्रम में फँसकर धिनौना कार्य कर रहे हैं। स्थिति यह है कि जो व्यक्ति समाज, राज्य या देश में ऊँचे पदों पर बैठे हैं और जिन्हें समाज को एक नई दिशा देने की जिम्मेदारी सौंपी गई है वही लोभ के वश में भ्रष्ट आचरण के दोषी पाए जाते हैं। इसका मुख्य कारण है – अध्यात्म के मूल सिद्धान्तों से मुँह मोड़ना एवं महापुरुषों की वाणी का उल्लंघन करना।

मनुष्य जीवन अनियंत्रित भोग एवं ऐन्द्रिक तृप्ति के लिए नहीं मिला है बल्कि मनुष्य जीवन गहन आत्मसाक्षात्कार के लिए मिला है – अपने चेतन स्वरूप को जानने के लिए।

यह कोई पुराना विचार या मध्ययुगीन सिद्धान्त नहीं है अपितु यह सबसे पवित्र, उत्तम एवं शाश्वत विचारधारा है, जिसे अपनाने पर आपसी रंजिश, वैर-भाव, काम-क्रोध-लोभ जैसे दुर्गुणों का लोप हो जाता है और जीवन में शुद्धता, सत्यता एवं दिव्य आनंद की अनुभूति होती है जो आज के आधुनिक जीवन के लिए नितांत आवश्यक है।

अध्यात्म को अपनाने के लिए हमें कतिपय सरल सूत्रों का सहारा लेना चाहिए। जैसे – उच्च कोटि की पुस्तकों का अध्ययन, दैनिक जीवन में सुधार, सत्संग, इत्यादि। प्रतिदिन नियमित रूप से परम पावन परमेश्वर का निश्चय भाव से नाम स्मरण एवं सुमिरन और उनकी दिव्य कृपा एवं दया के लिए करुण भाव से प्रार्थना करनी चाहिए। यह बहुत ही कारगर उपाय है जिससे मानवीय जीवन की समस्याओं का शनैः शनैः निराकरण होता है एवं जीवन में समस्त सदुणों का विकास होता है। आधुनिक जीवन में अध्यात्म रूपी शीतल जल का छींटा लगाकर ही हम वास्तव में स्वयं पूर्ण संतुष्टि एवं आनंद प्रदान कर सकते हैं।

किरण



प्रशांत कुमार
हिंदी अधिकारी

1.

सीढ़ियों पर अंधेरा था। सिर्फ रोशनदान के पास एक चौकोर बंद दायरे में धुंधला-सा आलोक मकड़ी के काले मैले जालों में फंसा फड़फड़ा रहा था। सरकारी क्वार्टरों की सीढ़ियाँ हमेशा ही एक गहरी अवसन्नता में डूबी रहती थी।

मैंने दो बार घंटी बजाई। पर भीतर कोई हलचल नहीं थी। मेरा हाथ फिर से बटन की ओर उठा, लेकिन फिर कुछ सोचकर मैंने उसे वापिस खींच लिया। डोर बेल के बाद का समय एक ओर प्रतीक्षा का तो दूसरी ओर शंका का होता है। जितनी ज्यादा घंटियाँ, उतनी ही

ज्यादा शंका। प्रतीक्षा को झेला जा सकता है, शंका को नहीं।

यूँ ही विचार उठा – ‘सुबह मेरे दरवाजे पर कोई था, अब मैं किसी के दरवाजे पर हूँ। शायद हर इंसान किसी न किसी दरवाजे पर खड़ा है – प्रतीक्षाओं के बोझ से लदा, संदेहों का सामना करने को तैयार... उम्मीद की खोज में।’

“के एलो” – भीतर से किरण ने पूछा।

“आमि होइ” – मैंने भी बांग्ला में ही कहा। मैं जानता था कि हिन्दी में जवाब देने पर वो आसानी से दरवाजा नहीं खोलेगी। वो मुझे बांग्ला सीखा रही थी और कुछ सरल बातें वो मुझसे बांग्ला में ही सुनना चाहती थी। ये एक प्रकार से मेरी परीक्षा होती थी।

दरवाजा खोलकर वो भीतर चली गई। मैंने दरवाजा बंद कर दिया। लॉबी में धुले कपड़ों और गीले साबुन की महक भरी थी। वो शायद नहा कर निकली थी। मैंने अपने जूते उतारकर दरवाजे के पास रखे शू-रैक में रख दिये और चप्पल पहनकर आगे के कमरे में चला आया। म्यूजिक प्लेयर में एक गीत बज रहा था। बगल की स्लैब पर सी.डी. कवर रखा था – रज़िया सुल्तान/रूदाली। मुझे एक आदतन हैरानी हुई। किरण के क्वार्टर में हमेशा गीत बजते रहते थे पर वो उसके क्वार्टर की देहरी के बाहर कभी सुनाई नहीं देते थे।

कमरे के आगे खुली बालकनी थी। दो कुर्सियाँ, एक स्टूल और फूलों के गमले रखे थे।

किरण को सफाई का फोबिया था। सारा क्वार्टर चमचमाता रहता था। कभी-कभी ये विश्वास करना मुश्किल हो जाता था कि उसके अपने भीतर वेदना का घनीभूत पुंज था। उन दोनों -किरण और उसका क्वार्टर- को अलग-अलग देखने पर हर बार पत्नी की कही पंक्तियाँ याद आती थी – ‘स्त्री के भीतर होती है अपार वेदना जिसके बोझ को हल्का या ‘बैलेन्स’ करने के लिए वो अपने बाहर बुन लेती है ‘निष्कपटता’ का घना जाल ... देखने वाले के लिए वो उसका पागलपन होता है, पर उसके अपने लिए – एक एस्केपा’ तेज महका। किरण ने शायद दूसरे कमरे में अगरबत्ती जलायी थी।

‘क्या खुशबू और अकेलापन एकसाथ होते हैं ... क्या वो हो सकते हैं!!’ – मैंने खुद से कहा।

वो रसोई में चली गई। मैं भी रसोई में खिंच आया। वो कॉफी का सामान तैयार कर रही थी। गर्म तवे पर सैंडविच रखे थे। पिघला हुआ पीला चीज़ काले तवे पर चरमरा रहा था।

उसने अपने गीले बालों को काले तौलिये में लपेटा हुआ था। बंद गले के कालर वाले लंबे डार्क गाउन में वो एक ‘नन’ जैसी दिखाई पड़ती थी। ये गाउन उसने मेरे आने के बाद पहना था। आपसी निर्भयता और दृढ़ विश्वास के बावजूद वो हमेशा एक निश्चित

‘कंडक्ट’ का पालन करती रही थी। यूँ मेरे भीतर उसके लिए एक बड़ी बहन की-सी तस्वीर थी। वो उम्र में मुझसे लगभग 3 साल बड़ी थी। उसके पास आना मुझे हमेशा अपने किसी बड़े के पास आने जैसा अहसास देता था। मेरे प्रति उसके व्यवहार में सदा ही एक उजली-सी गर्माहट रहती थी। लेकिन ये मैंने उससे कभी नहीं कहा। पहचान कायम रखने के लिए उसे एक साफ-से दिखते रिश्ते का नाम दे देने के वो सख्त खिलाफ थी।

वो चुप थी। मैं भी कुछ नहीं कह रहा था।

मैं कभी उसके सामने बोल नहीं पाता था। ऐसा नहीं था कि वो डोमिनेटिंग थी या बोलने का मौका नहीं देती थी या फिर ‘डायलॉग’ नहीं करना चाहती थी। मुझे बस कुछ सूझता नहीं था। भीतर शब्दों की भीड़ जरूर उफनती थी, पर बाहर आ सके – इसके लिए एक आवश्यक अर्थवान ‘स्ट्रक्चर’ में वो कभी नहीं ढल पाते थे। सरल भाषा में – मैं उसकी इंटैन्सनेस की बराबरी नहीं कर पाता था। पर इसलिए ही मुझे उसकी कंपनी पसंद थी। उससे बात करते समय -या उसके निकट- स्वः का बोध मर जाता था। ‘एक सपना जो हमारा होता है पर हम खुद उसमें नहीं होते।’ इसलिए उसके निकट मैं बहुत निश्चिंत होता था ... जिम्मेदारी से मुक्त उपस्थिति हमेशा ही आकर्षक होती है। क्या सिनेमा में फिल्म देखते वक़्त हम कुछ बोलते हैं? विचारों-प्रतिक्रियाओं का एक रेला जरूर उठता है पर फिल्म के आगामी दृश्य उनको तुरंत आवृत कर लेते हैं।

“बीते कल मेरे भाई और नन्द में हाथापाई हुई थी ... नन्द का सिर फूट गया ... उसकी बहनें, भाई और जीजा रात भर मेरे मायके में जमे रहें ... बहुत शोर मचा ... पुलिस आई थी ... मुझे बुलाया है ... मेरा नाम भी एफ.आई.आर. में दर्ज है ... कि मैंने ही हमला करवाया है ... सोमवार की दुरन्तो की टिकिट मिली है...”

किरण ने मेरी ओर देखे बिना बहुत रिक्त भाव से बताया, पर मेरे भीतर जैसे कुछ हिल गया था। डर से पहले के किसी भाव ने मुझे पकड़ लिया। आँखें एकाएक ही कुछ भारी हो आईं। विश्वास नहीं होता था कि उसने अभी मुझे ये बताया था। मैं हतप्रभ-सा उसका चेहरा देख रहा था। लेकिन वहाँ कुछ नहीं था – न चिंता, न भय। वो एक कोरे सफ़ेद पन्ने की तरह एकदम खाली था। उसके चेहरे के ठीक पीछे काली पड़ गई दीवार पर बड़ा-सा ‘एगजॉस्ट’ घूम रहा था। चाय के पतीले से निकल रही गरम निस्तेज भाप उसकी ओर बढ़ती जाती थी।

किरण की शादी को लगभग 6 साल हो गए थे। नन्द उसका पति था। एक सनकी, वहमी और क्रूर पति।

हम बालकनी में बैठ गए। चुपचाप।

मैं जानता था कि किरण कुछ और नहीं बताएगी। वो उन लोगों में से थी जो पूरी कहानी कभी नहीं कहते, न ही बार-बार दोहराते हैं। सिर्फ एक पल की फ्लैशलाइट होती है। ये देखने वाले पर निर्भर करता है कि उस एक पल में वो कितना कुछ पकड़ सकता है। मैं उसके चेहरे को देख रहा था। सांवला चमकता चेहरा, तीखे नैन-नकश और 80 के स्टाइल का बड़ा गोल चश्मा। अपने चश्मे को लेकर वो हमेशा संशय में रहती थी। जबकि चश्मा उसके चेहरे को दबाता या मिटाता नहीं था बल्कि और ज्यादा उभारता था। वो उन खास चेहरों में से एक था जिन पर चश्मा खूब फबता था। पर शायद औरत की कल्पना में खुद के लिए हमेशा एक ‘फ्लालैस’ सुंदरता का बिम्ब होता है। इसलिए उसके लिए चश्मा सिर्फ एक कमी है। ऑफिस में वो अक्सर मिरर – किसी भी तरह का जैसे कम्प्यूटर की काली स्क्रीन – में अपने चेहरे पर नजर गड़ाए रहती थी। बहुत गंभीर नजर – आत्ममुग्धता से दूर, संदेह से भरी ... अपने ही चेहरे को पहचानने-पकड़ने की कोशिश में। मैं अक्सर सोचता था कि उसे बताऊँ कि वो बहुत सुंदर दिखती है, पर फिर ये विचार मुझे बहुत छिछला-सा लगता था और मैं इसे छोड़ देता था।

उसके लंबे काले बाल कुर्सी के नीचे बालकनी के फर्श को छू रहे थे। बालों के सिरों पर पानी की बूंदें कुछ क्षण के लिए एक छोटा गोल दायरा बनाती थी और फिर फूट जाती थी।

बालकनी के सामने सड़क पर बहुत से पेड़ थे। सबके सब हरे। सिर्फ एक को छोड़कर। उस पर कोई पत्ता नहीं था, लेकिन लाल फूल थे। ध्यान से देखने पर पता चलता था कि उनमें कोमलता नहीं थी। वो एक किस्म के सख्त लाल फूल थे। उसकी लगभग सब टहनियाँ किरण के क्वार्टर पर झुक आई थीं। क्या ये संयोग था ?

सड़क के पार लेक पार्क था। वहाँ से कोयल का निरंतर ऊपर जाता स्वर सुनाई देता था। पर शायद सिर्फ मुझे। किरण एकटक नीचे देख रही थी। पेड़ों के बीच सड़क को। वहाँ सिर्फ तेज गुजरती गाड़ियों की खराश और मैले-गंदले पानी के छींटे थे ... या फिर एक अदृश्य दर्शन जो मुझसे छिपा था ... जिसे किरण लगातार खंगाल रही थी।

शिमला में अक्सर अपने क्वार्टर की चौखट पर बैठकर मैं और पत्नी सामने फैली घाटी और उसके परे खड़े विशाल पर्वत को देखा करते। मुझे बहुत कुछ नज़र आया करता – ‘स्पेस’, गहराई, मौन, कविता, सौन्दर्य। मेरी नज़र लगातार घूमती रहती थी जबकि पत्नी की दृष्टि ... वो बस स्थिर रहती... एक सीधी पंक्ति में – एकटक। उसी गुमशुदगी में एक बार उसने कहा था – ‘एक प्राचीनतम बिम्ब जो इन पहाड़ों को देखते हुए मेरे मन में चमक जाता है, मुझे कुछ उदास कर देता है – इन पर तपस्या करते ऋषियों का बिम्ब... कि बहुत कोशिश करके भी मैं इन पहाड़ों में किसी स्त्री को तपस्या करते नहीं देख पाती... सिर्फ अपने लिए अपने ही साथ अपने जीवन को जीने का ये बहाना जिसे तपस्या कहा जाता था, इन पहाड़ों पर किसी स्त्री को कभी नहीं मिला।’

क्या हर स्त्री की खामोशी का ‘टेक्सचर’ एक ही होता है?

उसने कॉफी की एक भी घूंट नहीं ली थी। सैंडविच भी अनछुआ रखा था। कुछ मक्खियाँ खिंच आई थी। हवा में गति थी और उसके बाल अब सूखने लगे थे। रह-रहकर उसके चेहरे पर चिपक जाते थे। पर वो उनको हटाने की कोई कोशिश नहीं कर रही थी। एकाएक ही मेरे भीतर एक अपराधबोध-सा पनपा। ‘शायद आज यहाँ आकर मैंने गलती की है।’

हम दूसरों के दुख से जुड़ सकते हैं, यातना से नहीं। अपनी यातना के क्षेत्र में वो हमेशा अकेले होते हैं क्योंकि यातना का कोई ‘कॉमन’ चरित्र नहीं होता... वो हमेशा हर किसी की सिर्फ अपनी होती है... और उससे मुक्त होने का एक ही तरीका होता है कि उसे पूरी तरह -अंतिम बूंद तक- भोग लिया जाए। भोगे बिना वो कभी नहीं छूटती।

...इसलिए आज के समय में हर व्यक्ति के लिए ये जान लेना जरूरी है कि उसे किन घड़ियों में खुद से जुड़े लोगों को अकेला छोड़ देना चाहिए।

मैं कमरे में आ गया। वहाँ कब्बन मिर्जा की भारी उदास गुमनाम आवाज तैर रही थी।

भीतर के दूसरे कमरे में किरण की स्टडी है। मेज पर लकड़ी के बुकरैक में बहुत से खास नाम चमक रहे थे – कृष्णा सोबती, अमृता प्रीतम, मन्नू भण्डारी, प्रतिभा रॉय, वर्जीनिया वुल्फ, निर्मल वर्मा, जोएस, काफ़का, कामू, टॉमस मान, स्टीफन स्वाइग...। उसकी लाइब्रेरी मुझे हमेशा आकर्षित करती रही थी। हर महीने उसमें एक नया नाम जुड़ जाता था। सब की सब डलहौजी स्कवॉयर के फुटपाथों से खरीदी गई जहां अंग्रेजी दौर की इमारतों की मैली लाल दीवारों के सहारे एक लाइन में पुरानी किताबें फड़फड़ाती रहती थी। ऑफिस में लंच के बाद अपनी रूटीन वॉक के दौरान वो अक्सर वहाँ रुक जाती थी, काफी देर के लिए – पुरानी किताबों की गैलरी में। एक रोज वो वहाँ से अपने साथ टॉलस्टॉय का समस्त कृतित्व लेकर लौटी थी – मध्यम आकार के 6 गहरे नीले हार्डबाउंड जिनके ‘गिल्डेड’ किनारे थे और जो पहली नज़र में कानून की मोटी किताबों-से नज़र आते थे। सबके भीतर दर्ज था – ‘कॉपीराइट 1899, बाइ थॉमस वाइ. क्रोवेल्ल एंड कंपनी... प्रिंटेड इन यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ अमेरिका।’ वो बहुत खुश थी उस दिन। ऐसे दिन बहुत कम होते थे जब किरण बहुत खुश नज़र आती थी – कम से कम अपने बाहर। उस समस्त वॉल्यूम की अमेरिका से उसके हाथों तक लगभग 118 साल की यात्रा उसे अतिरिक्त रोमांच दे रही थी। उसने मुझसे कहा था – ‘मुझे किताबों से सिर्फ लगाव ही नहीं है, बल्कि मैं फुटपाथों पर मिलने वाली इन किताबों के प्रति एक नैतिक दायित्व महसूस करती हूँ... ये और बात है कि मेरे मरने के बाद ये फिर से वहीं आ जाएंगी – फुटपाथ पर ... लेकिन उस पर मेरा बस नहीं है... आखिर हम सिर्फ बीच के समय का ही तो

“मैं अब वो जिंदगी नहीं जीऊंगी। नन्द पर हाथ उठाकर औरों की नजर में भले ही गुनाह किया हो दोवी ने लेकिन मुझ पर उपकार किया है। उसने मेरे और नन्द के बीच एक लाइन खींच दी है – स्पष्ट और मोटी ...एक बॉर्डर ...जो मैं कभी नहीं खींच पाती। मैं इसे छोड़ नहीं सकती। ये चान्स है। मेरी सारी जिंदगी में पहला और शायद आखिरी भी। दोवी सच में नहीं जानता कि उसने क्या किया है।”

वो हल्के-से मुस्करा दी। पूरे दिन में पहली बार उसके होंठों पर कर्व आया था। ‘एक ठंडे दिन में किरण को मुस्कराते हुये देखना भी एक छोटा-सा सुख हो सकता है।’ – तब मैंने सोचा था।

सड़क पार कर हम राजभवन के साथ फुटपाथ पर चलने लगे। ऊपर पेड़ों की घनी छत थी। ऐसे ठंडे दिन में आसमान को छोड़कर चलना मुझे कुछ अजीब-सा लगा। मैं जानता था कि अपनी समस्त ठंडक के बावजूद वो दिन सिर्फ अपने तक ही सीमित रहेगा। अपने भीतर से एक कतरा भी अगले दिन को नहीं दे पायेगा। ये कोलकाता के मौसम का चरित्र था।

मेरे भीतर हरि का चेहरा उमड़ आया। वो हमारे ऑफिस में ही अनुवादक था। हम सब जानते थे कि वो किरण को पसंद करता था। खुद किरण भी जानती थी। वो किरण की ही उम्र का था और अभी तक कुँवारा था। वो अक्सर कहा करता था – ‘शायद एक दिन किरण अपने पति को छोड़ दे! तब मैं ...’

“क्या तू दूसरी शादी करेगी ?” मैंने पूछा।

सहसा ही किरण फिर से गंभीर हो गई। होंठ सिकुड़ गए। मुझे खुद पर हल्का-सा खेद हो आया।

“न, बिलकुल नहीं। मैं अब रिस्क नहीं ले सकती।” उसने कहा।

“सब आदमी तो एक जैसे नहीं होते।”

“मेरे भीतर पति की चाह बहुत पहले मर चुकी है।”

“लेकिन हरि तो तुझको समझता है ...तेरे दर्द को...”

किरण हँस दी। वो ग्रील का सहारा लेकर खड़ी हो गई। उसके पीछे भूरा-सा सेनेटाफ स्मारक नज़र आता था। उसकी सीढ़ियों पर चेहरा ढककर एक आदमी लेटा था। वहाँ हमेशा कोई न कोई लेटा रहता था – शायद ‘दो बीघा जमीन’ का संभू महतो ... 64 साल बाद भी वैसा ही – हर तरह से खाली। बगल में अब भी पत्थर के वही दोनों सिपाही खड़े थे – बंदूक लिए, गर्दन झुकाये ...मृत प्रतीकों के प्रतीक।

“तुझे याद है,” किरण कहने लगी, “हमारे बचपन में जब हम अंग्रेजी गीतों के बोल नहीं समझते थे, तब उदास अंग्रेजी गीतों पर भी खुशी से झूमते थे...नाचते थे...मन में एक खास तरह का रोमांच चढ़ आता था...हम उन उदास गीतों की भाषा नहीं समझते थे, सिर्फ धुन आकर्षित करती थी – एक जादू की तरह। याद है तुझे?”

मैंने हाँ में सिर हिला दिया। वैसे गीतों का एक कोलाज मन में उभर आया।

“यही हालत हरि की है।”

मुझे पत्नी की बात याद हो आई – ‘आपके दोस्त को किरण के दुख से कुछ लेना-देना नहीं। औरत का दुख उसको खामोश कर देता है और आदमी को खामोश औरत एक फैटसी जैसी दिखाई देती है...बहुत सुंदर और मुश्किल।’

“जानता है, हर आदमी इस वहम में जीता है कि वो दूसरे आदमी से भिन्न है, कि वो सब ठीक कर सकता है, कि वो हर ‘दुखी’ स्त्री के लायक है। ये सब मिलने से पहले का दर्शन है। बाद में वो सब बराबर हो जाते हैं। जब तक रिश्ता नहीं है, तब तक आदमी के पास सहानुभूति है, प्रेम का भ्रम है। रिश्ते के बाद उसके पास सिर्फ एकतरफा अधिकार की भाषा, देह की कामना और मांगे रह जाती हैं।”

मैं समझ नहीं पाया कि क्या प्रतिक्रिया दूँ। उसकी ऐसी बातों पर मैं गहरे संकोच से भर जाया करता था। उसके साथ हमेशा ही मुझे बहुत गंभीरता से अपना आदमी होना महसूस होता था। कभी-कभी अखरता भी था।

पर किरण को कभी मेरी प्रतिक्रियाओं से मतलब नहीं होता था। उस दिन भी नहीं था। “क्या सोचने लगा रे! जल्दी चल ... ब्रिटिश शुरू होए गैछै।” – वो आगे-आगे भागने लगी।

मेरी नजर शहीद मीनार की ओर उठ गई। उसके ऊपर बादल गहरा रहे थे। ऊपर पेड़ों से कच्ची बूंदें झरने लगी थी।

3.

सेंट जॉन चर्च। ठंडे काले दिन में एक स्निग्ध गहरा पीला प्रकाशपुंज। वो हमेशा ऐसा ही रहता था – मुलायम और चमकता हुआ। कोलकाता के बीच होकर भी उससे छिपा हुआ, बचा हुआ, उसके बाहर या उससे ऊपर। उसके कम्पाउण्ड में पाँव रखते ही बाहर की सब आवाजें गुम हो जाया करती थी और एक अंजान खामोशी भीतर पसर जाती थी।

बारिश ने बीच की गति पकड़ ली थी जो न गीला करती है, न ही सूखा रहने देती है। चर्च के अहाते में लाल भुरभुरी मिट्टी की एक मोटी तह बिछी थी। वो धीरे-धीरे पिघलने लगी थी। किरण तेज कदमों से लॉन को पार करती हुई चर्च के भीतर चली गई। उसको डर था कि बारिश बढ़ने से कच्चे रास्ते पर कीचड़ जमा हो जाएगा।

भीतर जाने से पहले मैं कुछ देर बाहर ही खड़ा रहा। वो छुट्टी का दिन था इसलिए चौराहें और सड़कें खाली थी। हवा बहुत उन्मुक्त ढंग से चारों तरफ कुलांचे भर रही थी। शिमला में पत्नी कहा करती – ‘सड़क पर भीड़ हो तो वो बेजान लगती है, खाली हो तो खूबसूरत।’

इसलिए वीकेंडों पर हम मंदिरों, म्यूजिम्स, पार्कों या मॉलों में नहीं जाते थे। हम बस खाली सड़कों की तलाश में रहते थे। सुबह से शाम तक हम अपनी बेटी के साथ पहाड़ी गोल सड़कों पर ड्राइव करते रहते थे। वो काफी शांत और सुखी दिन होते थे। पूरा दिन जैसे हमारे सुख को मथता रहता था और रात को ढेर-सा संतोष हमारे पास जमा हो जाता था – चाँदी सा चमकता...ताज़ा और खुशबूभरा।

मन हुआ काउंसिल स्ट्रीट में दूर तक – राइटर्स बिल्डिंग से भी आगे तक – एक चक्कर लगा आऊँ। वो एकदम खाली थी और एक बड़ा लालच थी। उसके दोनों ओर भारी विंटेज इमारतों की गैलरी थी – लाल, भूरी, सफ़ेद ... गोल खंभों की पंक्तियाँ... निओ-क्लासिकल स्टाइल।

चर्च में भीतर मैला-सा प्रकाश था - जालों और धूल से अटा हुआ। दरवाजे पर ढेरों फ्रेम थे। चेहरों से ज्यादा खुद वक्त की तस्वीरों से भरे हुए - किसी और देश का वक्त जो यहां छूट गया था। हर फ्रेम में बेचैन करने वाली उदासी भरी थी। हालांकि भीतर के अकेलेपन को उससे बहुत ताकत मिलती थी। घने सन्नाटे में भी चर्च ‘कॉए’ की लगातार ऊपर उठती जाती धुन सुनाई पड़ती थी। वो शायद हमारी स्मृति में होती है जो ठीक माहौल मिलने पर बाहर निकल आती हैं। सफेद मार्बल के स्मारक और प्रतिमाएं मैले धुंधलके में बोलती नजर आती थी। अलग-अलग चीजें जैसे इंसान के भीतर के अकेलेपन की अलग-अलग परतों के प्रक्षेपण थे - ऊंचे सफेद गोल कोरिंथियन खंभों की कतारें, सिर तक लटके हुए पंखे, बाइबल के बिंबों से भरी रंगीन कांच की खिड़कियाँ, विशाल विंटेज पाइप ऑर्गन, गोल्डन ब्राउन वुड वर्क और ‘द लास्ट सप्पर’ (रेप्लिका)। खिड़की के बाहर चार्लोट कैनिंग का मेमोरियल था - अंदर के अंधेरे पर प्रतिबिंबित सफेद छाया-सा।

...वो पूजा स्थल से ज्यादा एक म्यूजियम था जहां हमेशा एक पवित्र-सा ‘मैलेंकलिक’ विस्तार होता था ... एक ऐसी जगह जहां हमारे पास न बाहर का शोर आ पाता है, न ही अपने भीतर की गड़मड़।

किरण गहरी भूरी कुर्सियों की कतारों के बीच कहीं बैठी थी - गायब-सी। मैं पीछे की आखिरी पंक्ति में बैठ गया।

किरण को चर्च में रहना पसंद था। हमारा ऑफिस चर्च के सामने ट्रेजरी बिल्डिंग में था। कोलकाता में शुरू के दिनों में लंच का लंबा समय वह यहां ही बिताया करती थी - अकेली। सिमिट्री में घूमना उसे बहुत पसंद था। कब्रों-मेमोरियल के सामने देर तक खड़ी रहती थी, पत्थरों पर उत्कीर्ण परिचय-स्मृतियों-संदेशों- प्रार्थनाओं को बार-बार पढ़ती थी, तस्वीरें उतारती थी। या फिर उनके सामने बैठकर अपनी डायरी में उनका अनुवाद किया करती। उसके पास वहां के लगभग प्रत्येक टॉम्बस्टोन का अनुवाद था। वह कहती थी - 'मृत्यु के बाद का परिचय कितना हल्का और मुक्त होता है, बिल्कुल अपना जान पड़ता है, हर कब्र मेरी अपनी महसूस होती है और बिल्कुल भी शोक नहीं होता, कोई खेद नहीं पनपता।'

कभी-कभी सेक्शन में फाइलों के कामों के बीच उन अनुवादों को पढ़ा करती थी। उस में आए किसी ब्रिटिश स्थान के नाम को गूगल में सर्च करती और तस्वीर में उस गांव या शहर को देखते-देखते एकदम खामोश हो जाती थी - बिल्कुल चुप ... मृत्यु के जैसी ... और तब महसूस होता था कि वह जैसे स्वयं एक टॉम्बस्टोन में बदल गई है - अपने जीवन की मृत्यु पर खड़ी यादगारी पत्थर। ऑफिस की पत्रिका में एक लेख में उसने लिखा था - 'सैंट जॉन चर्च में लेडी कैनिंग मेमोरियल... किसी और देश की महिला जो वापस लौटने की अदम्य इच्छा से भरी थी लेकिन उससे पहले ही मलेरिया से मर गई - किसी और देश में ... कितनी ही महिलाओं की यही गति है... वे किसी और की इच्छा और निर्णय के देश में जीती हैं... वे कभी लौट नहीं पाती अपने पास ... क्या मैं भी ऐसे ही मर जाऊंगी - 'किसी और देश' में, किसी दूसरे के जीवन में?...'

4.

शाम ढलने लगी थी। बाहर बारिश अब धीमी पड़ गई थी। खिड़कियों से आती हवा ठंडी ध्वनियों-सी महसूस होती थी। एक-एक करके चर्च लैंप जगमगाने लगे। अंधेरे में डूबा दृश्य पीले प्रकाश की सतह पर उभरने लगा था। बहुत कुछ नया जुड़ गया - ऑल्टर, लेडी चैपल, चमकदार ब्ल्यू-ग्रे मार्बल, टेबल ऑफ लार्ड, ब्रास क्रास। पियानो की तरल धुनें गूंजने लगी थी। वो प्रार्थना का संगीत था और शांत नींद की ओर ले जाता था। मैं खड़ा हो गया।

किरण अपनी जगह पर नहीं थी। वो पीछे कॉल्विन सैनेटॉफ के सामने खड़ी थी। अपने सफेद कपड़ों में वह चर्च के विभिन्न मेमोरियलों के आर्डर का हिस्सा प्रतीत होती थी।

मैं उसके पास खिंच गया।

“चल, बाहर खड़े होते हैं।” उसने कहा। उसके चेहरे पर बहुत हल्के भाव थे जैसे जागने के बाद होते हैं।

हम बाहर पॉर्च में आ गए। अंधेरा धीरे-धीरे घिर रहा था। चर्च की बुर्जियों से रुक-रुक कर बूंदें टपक रही थी। ज्यादा कुछ दिखाई नहीं देता था। फिर भी कब्रें नजर आती थीं। उनके चारों तरफ फैले फूल भी - लाल, सफेद पीले।

“एकाएक मैं पासपोर्ट, वीजा के बारे में सोचने लगी हूँ... जीवन में पहली बार... एकाएक सब कुछ, सारी दुनिया जैसे मेरे पास आ गई है, सब कुछ मेरे हाथ में है... कितना आसान लग रहा है... बैग में पासपोर्ट डालना है, टैक्सी पकड़नी है, एयरपोर्ट पहुंचना है, फिर चैक-इन और उड़ जाना है... कितना आसान। ...डिज्नीलैंड... बचपन से मेरा सपना था... अब जाऊंगी...मेरे बच्चों को भी ले जाऊंगी... पता नहीं उनके पास कोई सपना है या नहीं...।”

वह हँसने लगी। सच में। देर तक हँसती रही। ढेर-सी हैरानी से भरी मासूम सच्ची हँसी। बगैर डर और संदेह की साफ, चमकदार, निथरी हुई हँसी। जैसे जीवन की पहली हँसी।



उत्पल चटर्जी
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

कुछ मीठी-मीठी बातें

मिठाइयाँ हर भारतीय के जीवन में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं और ये हर बंगाली की रोजमर्रा की जिंदगी का अभिन्न अंग हैं जो इनकी भोजन संस्कृति से जुड़ी हुई है। अतिथियों का मिठाइयों से स्वागत करना भारत तथा पश्चिम बंगाल की परंपरा है। भारत में कोई भी धार्मिक संस्कार और जीवन चक्र बिना मिठाइयाँ अर्पित किए सम्पन्न नहीं होता। मिठाइयों के इतिहास में पश्चिम बंगाल की भूमिका महत्वपूर्ण है। ‘भोजन-मीठा’ और ‘मीठा-भोजन’ के प्रसार में बंगाल का बहुत बड़ा योगदान है। ऐसी मिठाई-प्रिय जगह दुनिया में और मिलना मुश्किल है।

इतिहास के अनुसार, ‘मोतीचूर का लड्डू’ इस उप महादेश की सबसे पुरानी मिठाई है। यह लगभग 2000 साल पुराने इतिहास के साथ जुड़ी हुई है। आधुनिक मिठाइयाँ – ‘रसगुल्ला (रसगोल्ला)’ और ‘सन्देश’ की उम्र लगभग 200-250 साल है। बंगाली लोगों ने पुर्तगालियों से ‘छेना’ बनाना सीखा, बाद में मिठाई के मुख्य अवयव के रूप में ‘छेना’ बनाने की संस्कृति प्राप्त हुई। प्रारंभिक चरण में छेना और छेना द्वारा बनायी गयी मिठाइयों का उपयोग केवल धार्मिक कार्यों एवं देवताओं के प्रसाद आदि के रूप होता था। जैसे वैदिक काल में दूध और दूध से बने भोजन – दही, घी, मक्खन आदि को ‘भगवान का भोजन’ माना जाता था। खासकर ‘मक्खन’ तो भगवान कृष्ण का पसंदीदा माना जाता था।

मुगल शासन के दौरान 16 वीं शताब्दी में पुर्तगालियों ने बंगाल में व्यापार करना शुरू किया। उन्होंने अपना खेमा हुगली के पास बेंडेल बंदरगाह पर लगाया। शायद उन्होंने ही बंगालियों को बचे हुए दूध से चीज बनाने का हुनर सिखाया होगा। बेंडेल चीज आज भी बंगाल में बेहद मशहूर है। माना जाता है कि पुर्तगालियों ने जो तरीका सिखाया, उसी से छेना भी बनाया जाने लगा। 18वीं-19वीं सदी के आखिर तक बंगाली हलवाई छेना का इस्तेमाल करके नई मिठाइयाँ भी बनाने लगे। उस वक्त बंगाली मिठाइयों में पिठे शामिल थी। यह मीठा मालपुआ असम और ओडिशा समेत देश के पूर्वी हिस्सों में बेहद आम था। बनारसी परंपरा से प्रभावित खोया और खीर जैसी चीजें भी मिठाइयों के लिए लोकप्रिय सामग्री थी। लेकिन छेना मिलने के बाद बंगाली हलवाई मिठाई बनाने के मामले में दूसरे क्षेत्रों से आगे निकल गए। वे लोग छेना को चीनी और खोया के साथ मिलाकर खुरदरी मिठाई बनाने लगे। यह नया फैशन था, जिसे मिठाई के शौकीनों ने हाथोंहाथ लिया। छेने से बनी मिठाइयाँ बाकी के मुकाबले हल्की और कम मीठी होती हैं। लेकिन इनके चाहने वाले दुनियाभर में मिल जाएंगे। देश का शायद ही कोई ऐसा कोना होगा, जहां इस तरह की मिठाइयाँ न बिकती हों। छेना से बनी मिठाइयों का शहंशाह है रसगुल्ला। लेकिन बंगाली मिठाइयाँ सिर्फ रसगुल्ले तक ही सीमित नहीं। यहां की कई मिठाई तो ऐसी हैं, जिन्हें बंगाल के बाहर लोग उतना नहीं जानते होंगे। फिर चाहे वह खीरकदम हो या ‘कांचा-गोल्ला’ या फिर ‘मिष्टी दोई’।

इसे लोकप्रिय बनाने में चीन के अप्रवासियों की भी अहम भूमिका थी, जो ब्रिटिश गवर्नर जनरल वॉरेन हेस्टिंग से एक चीनी फैक्टरी चलाने की इजाजत मिलने के बाद बंगाल आए थे। वह मिठाई आज कांचा-गोल्ला नाम से मशहूर है। बंगालियों के मुताबिक- कुछ समय बाद छेना, खोया, चीनी और इलायची को बारीकी से मिलाकर एक मिठाई बनी - ‘माखा’। इसी को संदेश का शुरुआती रूप माना जाता है। फिर इसी को शंख के आकार में ढाला गया और एक मशहूर हलवाई भीम चंद्र नाग ने इसे नाम दिया- संदेश यानी शुभ समाचार का प्रतीक। कहा जाता है कि भीम चंद्र के बाज़ार की जमींदारी रानी राश्मोनी के पास थी, जिन्होंने दक्षिणेश्वर मंदिर बनवाया था।

वे भीमचंद्र की दुकान से ढेर सारा संदेश खरीदती। मिठाई दो पैकेट में होती, एक काली माता के लिए और दूसरी मंदिर के पुजारी श्री रामकृष्ण परमहंस के लिए। परमहंस को भी ये मिठाइयां काफी पसंद थी। दक्षिणेश्वर मंदिर के उद्घाटन के वक्त रानी ने मंदिर के लिए 18 मन यानी तकरीबन 7 क्विंटल संदेश खरीदा था। भीम चंद्र नाग की दुकान बहू-बाजार में 1826 में खुली थी। यह अपनी नई-नई मिठाइयों के चलते मिठाई के शौकीनों के बीच काफी लोकप्रिय हुई।



एक और मिठाई है आशुभोग। यह नाम गणितज्ञ आशुतोष मुखर्जी के नाम पर पड़ा, जिन्हें संदेश काफी पसंद थी। इसी तरह लेडिकेनी का नाम लेडी कैनिंग के नाम पर पड़ा। वह ईस्ट इंडिया कंपनी के आखिरी गवर्नर जनरल लॉर्ड कैनिंग की पत्नी थी। भीम चंद्र नाग की दुकान आज भी मौजूद है। संदेश से जुड़ी नई मिठाइयां बनने का सिलसिला जारी रहा, लेकिन कोई भी ज्यादा लोकप्रिय नहीं हुई। इन्हीं में एक थी जलभरा संदेश, जिसमें गुड़ भरा जाता।

रसगुल्ला का आविष्कार 1868 में हुआ, जब संदेश का जलवा थोड़ा कम होने लगा। इसे भी कोलकाता के ही एक हलवाई ने बनाया था, नोबिन चंद्र दास। उन्होंने छेना को सूजी के साथ मिलाकर गोला बनाया और उसे खौलती चाशनी में डाल दिया। यह लेडिकेनी से प्रभावित हो सकता है, जो एक तरह का मुगल गुलाब जामुन था। लेकिन ओडिशा के हलवाईयों का दावा है कि रसगुल्ला खीर मोहन को देखकर बना जिससे भगवान जगन्नाथ को भोग लगाया जाता था। मुगल गुलाब जामुन या खीर मोहन, जिसमें भी छेना मिला दिया जाए, वही रसगुल्ला बन सकता था। लेकिन, उस वक्त तक छेना का ज्यादा चलन बंगाल में ही था।



वैसे भी नोबिन दास के बेटे कृष्ण चंद्र दास ने 1940 के दशक में रसगुल्ले बनाना शुरू किया, जिसे वर्ल्ड फेमस के. सी. दास रसगुल्ले के नाम से जाना जाता है। इस मिठाई ने राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर दिल जीता है। रसगुल्ला पहले किसने बनाया इस मामले को छोड़कर, हमें तो बस इसका स्वाद लेने से मतलब होना चाहिए।

यह भी कहा जाता है कि 18 वीं सदी के अंतिम भाग से बंगाल में 'चीनी' और 'छेना' के संयोजन से आधुनिक 'संदेश' और 'रसगुल्ला' बनाना शुरू हुआ और हुगली के प्रसिद्ध हलवाई ने इनका आविष्कार किया। कोलकाता आने के बाद इन मिठाइयों में विविध रूपांतरण हुआ जिससे इन्होंने आधुनिक रूप ले लिया। बाद में विविध प्रकार की मिठाइयां जैसे लेडिकेनी,

चम-चम, कालाजामुन, रसमलाई आदि बननी शुरु हुई, विभिन्न रंग, आकार और स्वाद के साथ मिठाइयाँ हर बंगाली के जीवन तथा उत्सव का एक महत्वपूर्ण हिस्सा है। पश्चिम बंगाल के लोग न केवल दुकान में जाकर नियमित मिठाइयाँ खरीदते हैं बल्कि ये अपने घर में पाएँस, दही, हलवा, आदि बनाते रहते हैं। कोई भी उत्सव, पूजा, पहिला बैशाख, अतिथियों का स्वागत - ये सब मिठाइयों के बिना अधूरी रहती है। ये बंगाल के लोगों की सामान्य परंपरा है कि किसी भी पारिवारिक या सामाजिक त्योहार में मिठाइयाँ अनिवार्य हैं। जीवन के विभिन्न स्तर के हर स्मरणीय पल जैसे बच्चों के जन्म से शुरु करके उसका नामकरण, परीक्षा पास, नई नौकरी मिलना, विवाह को मनाने के लिए खुशी प्रकट करने हेतु मिठाइयाँ वितरित की जाती हैं। अगर खाने के अंत में मिठाई या डेजर्ट का वितरण नहीं किया जाता है तो अतिथियों को संतोष नहीं पहुँचता है।

कोलकाता तथा पश्चिम बंगाल की बहुत सारी प्रसिद्ध मिठाइयाँ जैसे मिष्टी दोई, संदेश, रसगुल्ला, राजभोग, सरभाजा, दरबेश, कांचा-गोल्ला, चंद्रपुली, कालाजाम, खीरकदम, रबड़ी, लबोंगलतिका, लेडिकेनी, अमृती, लैंग्चा, पाटीसापटा, मालपुआ, सीताभोग, मिहिदाना, रसमलाई, जयनगर मोआ आदि को भारतीय डेजर्ट की अलग ही पहचान के रूप में माना जाता है।

मिठाई प्रिय लोगों के लिए यहाँ की कुछ प्रसिद्ध मिठाइयों का सचित्र वर्णन नीचे किया जाता है:-

रसगुल्ला : ऐसा भारतीय मिलना मुश्किल है जिसने यहाँ के रसगुल्ला को नहीं परखा है और यह 'मैजिकल डेजर्ट' जो मुँह के अन्दर पिघल जाता है, आप को और अधिक चाहने पर मजबूर कर देता है।



रसगुल्ला, ये मिठाई वैसे तो आजकल हर जगह मिलनी बहुत आम है। लोग शादी और पार्टी में इस मिठाई को बहुत चाव के साथ खाते हैं। इस मिठाई का निर्माण कहाँ हुआ ओडिशा या पश्चिम बंगाल में, इस बहस पर हम लोग नहीं जाएंगे। लेकिन आप बंगाल के दौरे पर हैं और आपने रसगुल्ला नहीं खाया तो आपकी ये यात्रा अधूरी है। ये रसगुल्ला इंडियन कॉटेज चीज़ से बनाया जाता है, जिसे चीनी की चाशनी में डूबोया जाता है। आजकल कोलकाता में बेकड रसगुल्ला भी मिलता है जिसे खाने का एक अलग ही स्वाद और आनंद है।

मिष्टी दई : सबसे अधिक लोकप्रिय डेजर्ट में से एक है जो बंगाल की पहचान है। यह अति सरल प्रक्रिया से बनाई जाती है और इसके तीन बुनियादी उपकरण हैं- मलाई, दही और चीनी। इन तीनों की सही मिलावट, रात भर किण्वन (फर्मेंटेशन) के बाद पूरी तरह से तैयार होती है। मिष्टी दई के सर्वोत्तम अनुभव के लिए इसे सीधे रेफ्रिजरेटर से निकालकर ठंडा स्वाद लेना चाहिए।



चम-चम : यह बहुत स्वादिष्ट और मीठा होती है। यह दूध और चीनी के मिश्रण से बनाई जाती है और बहुत ही लोकप्रिय है। एक दूसरे प्रकार का चम-चम आटा, नारियल, क्रीम, चीनी और केशर से बनाया जाता है। यह मिठाई आकार में ओवल है और कभी-कभी पीले रंग की भी बनाई जाती है। यहाँ की मलाई चम-चम भी बहुत प्रसिद्ध है।



पाटीसापटा : ये एक तरह का पैनकेक है। इस मिठाई को मैदा या दूध के साथ बनाया जाता है। इसमें नारियल भरा होता है। इस नारियल को गुड़ के साथ मिलाया जाता है। पाटीसापटा को खासतौर से मकर संक्रांति पर बनाया जाता है। यह पश्चिम बंगाल की प्रसिद्ध मिठाइयों में से एक है। इसे उत्सव के समय पर पसंदीदा मिठाई के रूप में माना जाता है।



रस मलाई : एक बंगाली मिठाई है जिसका संपर्क थोड़ा सा ओडिशा से भी है। यह पूरे देश में ही बहुत लोकप्रिय है। ये थोड़े इलायची पाउडर के साथ मलाई में भिगोए हुए छेना के मीठे गोले हैं। यह भी कहा जा सकता है कि रसमलाई एक मिश्रण है चाशनी, दूध, केशर, पिस्ता और खीर का।



जयनगर मोआ : यह मुरमुरे, नलेन गुड़ (New Jagerry) और घी का मिश्रण है जो कि गोलाकार आकृति की बहुत ही स्वादिष्ट मिठाई है। ये मिठाई पश्चिम बंगाल के दक्षिण 24 परगना जिले से आती है। इस मिठाई में नलेन गुड़ एक विशेष स्वाद लाता है। ये मिठाई काफी स्वादिष्ट और मशहूर है और खासकर सर्दियों के समय बहुत ही लोकप्रिय है। कुछ दुकानों पर ये नकली भी मिलती है। इसलिए इस मिठाई को खरीदते वक्त ध्यान रखें।

मिलती है। इसलिए इस मिठाई को खरीदते वक्त ध्यान रखें।

मिहिदाना : इसको बूंदी का बहुत ही छोटा सा संस्करण या बूंदी का चचेरा भाई कहा जाता है। इसको बनाने के लिए, पिसा हुआ चावल (कामिनी भोग, गोविंद भोग और बासमती चावल), बेसन का आटा और केशर पानी के मिति बनाते हुए करचुले चालनी से छानकर डीप फ्राई करना पड़ता है। इसके सुनहरे रंग के लिए बेसन का आटा और केसर की थोड़ी मात्रा मिश्रित की जाती है। इसके बाद बहुत छोटे छोटे फ्राइड कणों को चाशनी में भिगोकर रखते हैं। मिहिदाना वर्धमान, पश्चिम बंगाल की एक प्रसिद्ध भारतीय मिठाई है।



सीताभोग : यह वर्धमान, पश्चिम बंगाल की एक और पसंदीदा मिठाई है। यह एक ऐसी मिठाई है जो कि स्वादिष्ट भी है और देखने में भी अच्छी है। यह देखने में पुलाव जैसी है लेकिन इसका स्वाद बहुत मीठा है। इसकी प्रस्तुति में सफेद चावल या सेवई, चीनी और गुलाब जामुन होता है।



अब मिठाई प्रेमियों के लिए कोलकाता की कुछ प्रसिद्ध और परंपरागत मिठाइयों की दुकानों के नाम ये सब हैं :

बलराम मलिक और राधारमण मलिक, भीम चंद्र नाग, द्वारिक, गिरीश चंद्र डे और नकुड़ चंद्र नंदी, के.सी. दास, नलिन चंद्र दास एंड संस, सेन महाशय, पुतिराम, मिठाई, माखन लाल दास एंड संस, नब कृष्ण गुड़न, गुप्ता ब्रदर्स, तिवारी स्वीट्स, इत्यादि।

इनमें से कुछ प्रसिद्ध मिठाई प्रस्तुत करने वालों ने कोलकाता के कई स्थानों में शाखाएं भी खोल रखी हैं। लेकिन मिठाई प्रेमियों के लिए और भी खुशी की बात है कि कोलकाता के न्यू टाउन में इको पार्क के नजदीक केवल मिठाई का एक शॉपिंग मॉल 'मिष्टि हब' (Mishti Hub) के रूप में स्थापित किया गया है जिसने कोलकाता की गरिमा तथा आकर्षण को और भी बढ़ाया है।



आइए यह उम्मीद करते हैं कि पश्चिम बंगाल तथा कोलकाता की यह मिठास/मीठापन केवल यहाँ के रहनेवाले लोगों को ही नहीं बल्कि यहाँ आने वाले न केवल सारे देश के और सारे विश्व के लोगों की जिन्दगी को मीठा, सुन्दर और आनंदपूर्ण करे।



राजलक्ष्मी गांगुली
वरिष्ठ अनुवादक

नेतरहाट

नेतरहाट भारतीय राज्य झारखंड के लातेहार जिले में प्रकृति की गोद में बसा हुआ एक मनोरम पर्यटन स्थल है जिसे “छोटानागपुर की रानी” के नाम से भी जाना जाता है और यह एक हिल स्टेशन अर्थात पहाड़ी इलाका है। यह घने जंगलों से ढका एक पठार क्षेत्र है। छोटानागपुर पठार के पैट क्षेत्र में स्थित है। यहां स्फटिक चट्टानें हैं और इसका शिखर बालू के पत्थर या लैटराइट से ढका होता है। यह स्थल साल, केंदु, महुआ तथा नीलगिरी के पेड़ों से आच्छादित है। नेतरहाट गर्मियों के महीनों के दौरान अपने सूर्योदय और सूर्यास्त के लिए प्रसिद्ध है। नेतरहाट वनों के भीतर स्थित है जिसमें विविध वनस्पति और वन्य जीव उपलब्ध हैं।



नेतरहाट में कई पर्यटक स्थल हैं जिनमें कई जल-प्रपात भी हैं। ‘लोथ जल-प्रपात’ झारखंड का सबसे ऊंचा जल-प्रपात और भारत का इक्कीसवां सबसे ऊंचा जल-प्रपात है जो नेतरहाट से सत्तर किलोमीटर की दूरी पर साल के जंगल में स्थित है। इस जल-प्रपात से जल के गिरने की आवाज दस किलोमीटर की दूरी पर भी सुनाई देती है। ‘अपर घाघरी जल-प्रपात’ नेतरहाट से चार किलोमीटर की दूरी पर स्थित है। यहां महुआदानर भेड़िया अभ्यारण्य भी है जो भारत का एकमात्र ऐसा अभ्यारण्य है जिसे भेड़ियों की सुरक्षा के लिए बनाया गया है और इसमें मुख्य रूप से भारतीय भेड़िये शामिल हैं। मैग्नोलिया प्वाइंट, नेतरहाट से दस किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और सूर्यास्त के लिए जाना जाता है। सनराइज प्वाइंट सूर्योदय के लिए जाना जाता है, जो अचानक पहाड़ों और पेड़ों के बीच से प्रकृति को लाल रंग में डूबाता हुआ उभर कर आता है। यहां से पूर्णिमा की रात को देखा गया चंद्रोदय भी एक मनोरम स्थल है। ‘लोअर घाघरी जल-प्रपात’ नेतरहाट से दस किलोमीटर की दूरी पर स्थित प्रसिद्ध जल-प्रपात है। कोयल नदी व्यू प्वाइंट नेतरहाट से तीन किलोमीटर की दूरी पर है। ‘सुगा बांध जल-प्रपात’ नेतरहाट से सत्तर किलोमीटर की दूरी पर स्थित है और स्थानीय लोग यहां पिकनिक मनाने जाते हैं। छोटानागपुर पठार में स्थित बेतला राष्ट्रीय उद्यान का पलामू टाइगर रिजर्व (प्रोजेक्ट टाइगर) के तहत भारत के पहले नौ टाइगर रिजर्वों में से एक है। यह एक पहाड़ी इलाके में फैला हुआ है जो इसे और आकर्षक बनाता है। बेतला राष्ट्रीय उद्यान नेतरहाट से चौंसठ किलोमीटर की दूरी पर प्रोजेक्ट टाइगर (पलामू टाइगर रिजर्व) के तहत भारत के पहले राष्ट्रीय उद्यानों में से एक के रूप में जाना जाता है। पार्क के जंगलों में कई औषधीय पौधों के साथ-साथ प्रमुख घटकों के रूप में साल और बांस से युक्त वनस्पतियों की एक विस्तृत श्रृंखला भी उपलब्ध है। उत्तरी कोयल नदी और उसकी सहायक नदियाँ पार्क के उत्तरी भाग से होकर बहती हैं, जिससे घास के मैदान बनते हैं।



पार्क में विभिन्न प्रकार के पारिस्थितिक तंत्रों और जंगली जानवरों की बहुतायत है। बड़ी संख्या में हाथियों के साथ भेड़िया, सियार और लकड़बग्घा भी देखा जाता है। अन्य जानवरों में गौर और चीतल के बड़े झुंड, लंगूर, रीसस बंदर, भारतीय विशाल गिलहरी, सांभर हिरण, चार सींग वाले मृग, नीलगाय, चींटी खाने वाले पैंगोलिन और नेवले भी शामिल हैं। पार्क में बचे सफेद बाघों को चिड़ियाघरों में ले जाया गया है। पक्षियों में हॉर्नबिल, मोर, लाल जंगली मुर्गी, काला तीतर, सफेद गर्दन वाला सारस, चितकबरा हॉर्नबिल, हरियल, कबूतर, ईगल, जंगली उल्लू, पपीहा और अन्य पक्षी शामिल हैं। पक्षी आमतौर पर शुष्क पर्णपाती जंगलों में पाए जाते हैं। कमलदाह झील में कई प्रकार के जल पक्षी आते हैं जिनमें कपास की चैती, घुंडी वाली बत्तख और गीज शामिल हैं। पार्क में झरने और गर्म पानी के झरने भी हैं। यहां दो ऐतिहासिक किले भी हैं जिनको पलामू किले के नाम से जाना जाता है। उनमें से एक बेतला के पास 120 मीटर पर स्थित है, जिसे 16वीं शताब्दी में चैरो राजाओं के लिए बनाया गया था।

“हिंदी भारतीय संस्कृति की आत्मा है।”

- कमलापति त्रिपाठी



सुकन्या दास
वरिष्ठ अनुवादक

मानसिक स्वास्थ्य का महत्व

एक स्थिर और स्वस्थ जीवन जीने के लिए मानसिक स्वास्थ्य बहुत महत्वपूर्ण है। इसमें किसी व्यक्ति की भावनात्मक, सामाजिक और मनोवैज्ञानिक भलाई शामिल है। आंकड़ों के अनुसार, दुनिया में पांच में से एक व्यक्ति मानसिक स्वास्थ्य के मुद्दों से जूझता है।

यह हर दिन हमारे सोचने, महसूस करने और व्यवहार करने के तरीके को प्रभावित करता है। हमारा मानसिक स्वास्थ्य हमारी निर्णय लेने की प्रक्रिया को भी प्रभावित करता है, हम तनाव से कैसे निपटते हैं और हम जीवन में दूसरों के साथ कैसे जुड़ते हैं।

मानसिक स्वास्थ्य किसी भी व्यक्ति के जीवन का एक महत्वपूर्ण अंग है। यह हमारे व्यवहार, भावनाओं और विचारों को प्रभावित करता है। एक स्वस्थ मानसिक स्थिति गतिविधियों में प्रभावशीलता और उत्पादकता को बढ़ावा देती है जिसमें कर्म, शिक्षा और अंतर-व्यक्तिगत संबंध शामिल हैं।

एक व्यक्ति जिसके पास स्वस्थ एवं शांत दिमाग है, वह जीवन में बदलाव के लिए खुद को अनुकूलित करने में सक्षम है। उसका दिमाग तनाव का सामना करने की क्षमता रखता है और संतुलन से बाहर नहीं जाता है। जीवन में प्रतिकूल परिस्थितियों और चुनौतियों के बीच उसकी मानसिक शक्ति उसको मजबूत और अविचलित रखती है। मानसिक स्वास्थ्य भी आपके रिश्तों को स्वस्थ बनाए रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है।

अच्छा मानसिक स्वास्थ्य लोगों को तनाव से प्रभावी ढंग से निपटने और रिश्तों में स्थिरता बनाए रखने की क्षमता प्रदान करता है। स्वस्थ दिमाग वाले छात्र पढ़ाई के तनाव से कुशलतापूर्वक निपटने में सक्षम हैं। इनका दिमाग इतना मजबूत और सक्षम होता है कि भयंकर प्रतिस्पर्धा का सामना कर सकते हैं और अपने लक्ष्यों को साकार करने में सफल हो सकते हैं। मानसिक बीमारी एक तरह की बीमारी है जो मस्तिष्क में होती है यह आपकी सोच, ऊर्जा, भावना या व्यवहार को प्रभावित करती है। इस प्रकार के जीवन का सामना करने में कई कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। ऐसे में डॉक्टर के लिए बीमारी के कारण का पता लगाना महत्वपूर्ण होता है। यह आनुवंशिकी, मस्तिष्क रसायन विज्ञान में परिवर्तन, मस्तिष्क संरचना में परिवर्तन, आघात और/या हृदय रोग से निपटने के कारण हो सकता है।

कुछ लोगों पर किए गए एक अध्ययन में यह पाया गया है कि मानसिक बीमारियां कुल वयस्क आबादी के उन्नीस प्रतिशत को प्रभावित करती हैं। लगभग छियालीस प्रतिशत किशोर इससे प्रभावित हैं। यह समस्या लगभग तेरह प्रतिशत बच्चों को भी प्रभावित करती है। ग्रसित लोग आपके सहकर्मी, पड़ोसी, छात्र, शिक्षक, इत्यादि हो सकते हैं।

मानसिक बीमारी के साथ कई गलत मान्यताएं जुड़ी हुई हैं, जिसके कारण बहुत कम लोग अपनी समस्याओं से निपटने के लिए डॉक्टर से संपर्क करते हैं। अनसुलझी मानसिक बीमारी खराब शारीरिक स्वास्थ्य, उच्च चिकित्सा व्यय, कार्यस्थल और स्कूल में खराब प्रदर्शन, कम नौकरी के अवसर और आत्महत्या की संभावना में वृद्धि करती है।

मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के सामान्य प्रकार क्या हैं? खराब मानसिक स्वास्थ्य दो प्रमुख प्रकार के विकारों को जन्म दे सकता है जो शरीर के दिन-प्रतिदिन के कामकाज को प्रभावित करते हैं। इन विकारों में से कुछ हैं:

- (1) **चिंता विकार** - अठारह प्रतिशत से अधिक वयस्क चिंता विकार से पीड़ित हैं। यह जुनूनी-बाध्यकारी विकार, आतंकी हमलों, पोस्ट-ट्रॉमेटिक तनाव विकार, व्यापक चिंता विकार और विशिष्ट प्रकार के भय के रूप में देखा जाता है।

(2) **मूड विकार** - इस प्रकार की स्थिति सामान्य अवसाद, द्विध्रुवी अवसाद और सामान्य मनोदशा को बनाए रखने में असमर्थता के रूप में परिभाषित है। यह स्थिति हर साल लगभग दस प्रतिशत वयस्कों को प्रभावित करती है।

मानसिक बीमारियां मधुमेह, हृदय रोग और कैंसर जैसी अन्य बीमारियों की तुलना में अधिक हैं। लोगों को इसके बारे में जानकारी कम है और वे चिकित्सा उपचार के लिए जाने से हिचकते हैं। ये दोनों कारक सामूहिक रूप से उन लोगों के लिए भारी बाधाओं का कारण बनते हैं जो इस स्थिति से जूझ रहे हैं। यदि आपका कोई प्रियजन मानसिक विकार से पीड़ित है, तो सुनिश्चित करें कि उन्हें अन्य लोगों की तरह समान अवसर और अधिकार मिलें। इसके कुछ उपाय निम्नवत हैं:-

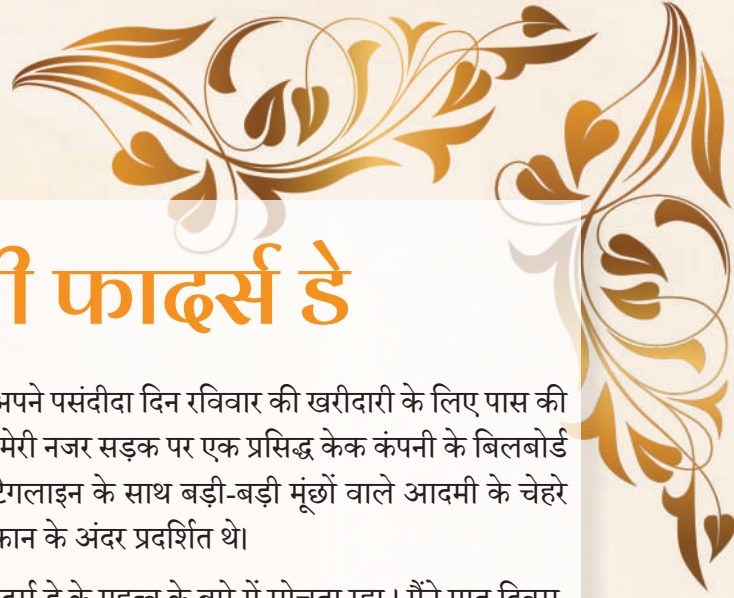
- अपने आप को उन लोगों के साथ रखें जो आपकी स्थिति को स्वीकार करते हैं और आपके साथ सद्व्यवहार करते हैं और यह स्वीकार करते हैं कि आप कौन हैं। यह आपको बीमारी से सफलतापूर्वक निपटने में मदद करेगा।
- इस मुद्दे से निपटने के लिए आवश्यक समर्थन प्राप्त करने के लिए मानसिक स्वास्थ्य के बारे में अपने ज्ञान को बढ़ाएं।
- एक नियमित व्यायाम दिनचर्या बनाए रखें।
- स्वस्थ और अच्छी तरह से संतुलित आहार खाने पर ध्यान दें।
- भावनात्मक समर्थन प्राप्त करने के लिए अन्य लोगों, परिवार और दोस्तों से जुड़ें।
- जीवन में हमेशा आभारी रहें।
- एक शौक रखें या किसी भी ऐसे रचनात्मक कार्य में खुद को व्यस्त रखें जिसे आप करना पसंद करते हैं।
- अच्छी नींद लें।

मन सबसे शक्तिशाली अंगों में से एक है जो शरीर के अन्य सभी अंगों के कामकाज को नियंत्रित करता है। जब हमारा मन परेशान हो जाता है, या असंतुलित हो जाता है तो यह समग्र शरीर के समग्र कामकाज को प्रभावित करता है। यह हमारे भावनात्मक स्वास्थ्य, कार्य प्रदर्शन और रिश्तों को भी नकारात्मक रूप से प्रभावित करता है।

मन से जुड़े महत्व के कारण अपने मन को स्वस्थ रखना बहुत महत्वपूर्ण हो जाता है। यदि आप किसी भी मानसिक विकार से पीड़ित हैं, तो उपचार की मांग करने में संकोच न करें। प्रारंभिक उपचार जल्दी और आसानी से बीमारी का इलाज करने की संभावनाओं को बढ़ा सकता है।

“हिंदी भाषा की उन्नति का अर्थ है राष्ट्र और जाति की उन्नति।”

- रामवृक्ष बेनीपुरी



राजर्षि सामंत
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

हैप्पी फादर्स डे

पिछले सप्ताह जब मैं अपने पसंदीदा दिन रविवार की खरीदारी के लिए पास की सब्जी मंडी जा रहा था तो अचानक मेरी नजर सड़क पर एक प्रसिद्ध केक कंपनी के बिलबोर्ड पर पड़ी, जिसमें “हैप्पी फादर्स डे” टैगलाइन के साथ बड़ी-बड़ी मूंछों वाले आदमी के चेहरे की भांति डिजाइन किए गए केक दुकान के अंदर प्रदर्शित थे।

मैं कुछ समय तक इस फादर्स डे के महत्व के बारे में सोचता रहा। मैंने मातृ दिवस, महिला दिवस, वैलेंटाइन दिवस के बारे में भी सुना है और इन दिनों को लेकर लोगों में उत्साह भी देखा है।

मैं उस केक की दुकान पर गया और पाया कि कई युवा अपने-अपने पिता के लिए विशेष रूप से डिजाइन किए गए क्रीम केक खरीदने के लिए दुकान पर आ रहे थे। मैं दुविधा में था कि इनमें से कौन-सा केक खरीदूं, लेकिन बाद में मैंने बिना क्रीम वाला केक लेने का फैसला किया जो मेरे पिता को सबसे ज्यादा पसंद है।

मैं अपने चेहरे पर एक बड़ी मुस्कान के साथ घर पहुंचा, जैसे कि मैंने अपने माता-पिता को दिखाने के लिए कोई पुरस्कार जीता हो। मेरी मां केक देखकर मुझ पर चिल्लाते हुए बोली कि केक के मुक्काबले मेरे पिता को फिश फ्राई, मुगलई परांठा और आलू की सब्जी सबसे ज्यादा पसंद है। मैंने शाम को मित्रा कैफे जाने का फैसला किया, लेकिन दोपहर में चावल और चिकन करी के साथ भारी लंच करने के बाद, मैंने फेसबुक, इंस्टाग्राम ब्राउज करना शुरू किया और वहाँ मैंने देखा कि मेरे अधिकतर दोस्त अपने पिता के साथ खुश थे। उन्होंने अपने पिता के साथ किसी अच्छे रेस्टोरेंट में लंच करते हुए या बाहर घूमने की तस्वीरें पोस्ट की हैं। कुछ ने अपने पिता के लिए खूबसूरत पंक्तियाँ लिखी हैं...और यह सब देखते-देखते मैं धीरे-धीरे अपने कमरे में गहरी नींद में सो गया। जब मैं उठा तो शाम के साढ़े छह बज रहे थे और मुझे पता था कि मेरे पिता शाम सात बजे के बाद कभी खाना नहीं खाते।

मैंने फूड डिलीवरी ऐप्स में से एक के माध्यम से खाना ऑर्डर करने के लिए तुरंत अपना फोन उठाया और पाया कि मेरे पिता के पसंदीदा व्यंजनों के आने का अपेक्षित समय लगभग एक घंटा दिखा रहा था। मैंने यह जानने के लिए अन्य ऐप्स भी ब्राउज किए कि शायद अगले आधे घंटे के भीतर खाना पहुंचाने वाला कोई सुपरमैन हो, परंतु मुझे ऐसा कुछ नहीं मिला। मैं उस पल वास्तव में निराश था और उदास चेहरे के साथ अपने पिता के दैनिक आहार रोटी, सब्जी और खीर के बारे में सोच रहा था, मुझे लगा जैसे मैं अपने कमरे के अंधेरे में खो गया हूँ।

अचानक मेरे कमरे की लाइट जली और मुझे बड़ा आश्चर्य हुआ। मैंने देखा कि मेरी माँ मेरे पिता के साथ फिश फ्राइज से भरी प्लेट और सादे केक के टुकड़े के साथ खड़ी थी, जो मैं उस दुकान से लाया था। फिश फ्राइ वास्तव में स्वादिष्ट थे और हमने इसे ग्रीन टी के साथ खाया। मैंने अपनी माँ से पूछा कि उन्हें यह कहाँ से मिला। उन्होंने मुझे बताया कि उन्होंने इसे अपनी रसोई में खुद बनाया है। तो यह मित्रा कैफे नहीं था, यह माँ का कैफे था जिसने मेरा दिन बचाया और सभी के चेहरे पर मुस्कान ला दी। मुझे अपनी रसोई से अच्छी खुशबू भी आ रही थी, जहाँ मैंने अपनी पत्नी को मुगलई परांठे के लिए आलू की सब्जी बनाते हुए देखा, जो मेरी माँ द्वारा तले जाने का इंतजार कर रही थी। उसी पल, मुझे एहसास हुआ कि भगवान ने जो रिश्ता हमें उपहार में दिया है उसे मनाने के लिए किसी विशेष दिन की आवश्यकता नहीं है। मैंने अपनी माँ को गले लगाया और महसूस किया कि थोड़े से प्रयास और सकारात्मकता के साथ हम हर दिन अपने परिवार के सदस्यों, दोस्तों, सहकर्मियों के साथ मना सकते हैं...आपको अपनी माँ के प्रति प्यार दिखाने के लिए मातृ दिवस की आवश्यकता नहीं है। अपनों को गुलाब का उपहार देने के लिए गुलाब दिवस की आवश्यकता नहीं है, आपको अपने प्रियजन को यह दिखाने के लिए वैलेंटाइन डे की आवश्यकता नहीं है कि आप उससे कितना प्यार करते हैं... हमारे जीवन में कोई भी दिन मातृ दिवस हो सकता है, फादर्स डे, वैलेंटाइन डे हो सकता है, लेकिन सबसे जरूरी संदेश यह है कि “जीवन केवल एक ही बार मिलता है... अतः जितना संभव हो सके अपने प्रियजनों के साथ जीवन के प्रत्येक क्षण का आनंद लें।

हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह 2022 की कुछ झलकियाँ



कार्यक्रम के दौरान नृत्य की प्रस्तुति

कार्यक्रम के दौरान नृत्य की प्रस्तुति



हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह 2022 में उपस्थित अधिकारी एवं कर्मचारी गण

मंच संचालन करते श्री सुनील कुमार साव,
हिंदी अधिकारी





कार्यक्रम के दौरान नृत्य की प्रस्तुति

कार्यक्रम के दौरान नृत्य की प्रस्तुति



पुरस्कृत करती प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) महोदया एवं प्रतिभागी श्रीमती तुलिका चक्रवर्ती, वरिष्ठ लेखापरीक्षक

कार्यालयीन राजभाषा पत्रिका 'सोनार बांग्ला' के 16वें अंक का विमोचन





कार्यक्रम के दौरान नृत्य की प्रस्तुति

गीत प्रस्तुत करती श्रीमती गार्गी चक्रवर्ती, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी (तदर्थ)



हिंदी कक्ष के अधिकारी एवं कर्मचारीगण

प्रधान महालेखाकार (ले. एवं ह.) महोदया का पुष्पगुच्छ से स्वागत करती श्रीमती गुंजा कुमारी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक



हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह 2023 की कुछ झलकियाँ



हिंदी पखवाड़ा समापन समारोह
2023 का शुभारंभ

प्रधान महालेखाकार महोदय का
पुष्पगुच्छ से स्वागत करती श्रीमती
गुंजा कुमारी, वरिष्ठ लेखापरीक्षक



वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
महोदय का पुष्पगुच्छ से स्वागत
करती श्रीमती सुकन्या दास, वरिष्ठ
अनुवादक

अपने संबोधन द्वारा हिंदी का उत्साह
बढ़ाते प्रधान महालेखाकार महोदय,
श्री सतीश कुमार गर्ग





**हिंदी प्रखवाड़ा 2023 के दौरान
आयोजित प्रतियोगिताओं के विजयी
प्रतिभागी को पुरस्कृत करते प्रधान
महालेखाकार महोदय**

**विजयी प्रतिभागी को पुरस्कृत
करते प्रधान महालेखाकार महोदय**



**विजयी प्रतिभागी को पुरस्कृत करते
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
महोदय**

**विजयी प्रतिभागी को पुरस्कृत करते
वरिष्ठ उप महालेखाकार (प्रशासन)
महोदय**





विजयी प्रतिभागी को पुरस्कृत करती ले. एवं ह. कार्यालय की वरिष्ठ उप महालेखाकार महोदया

अंत्याक्षरी प्रतियोगिता के संचालकों के साथ हिंदी कक्ष के अधिकारी एवं कर्मचारीगण



धन्यवाद ज्ञापन करते श्री प्रशांत कुमार, हिंदी अधिकारी (स्थानीय लेखापरीक्षा विभाग)

हिंदी कक्ष के अधिकारी एवं कर्मचारीगण





प्रमोद कुमार दास
कनिष्ठ अनुवादक

तीसरा पहलू

एक बात सर्वमान्य सत्य है कि हर कोई सब कुछ नहीं जानता है और इसलिए प्रत्येक व्यक्ति को किसी न किसी ऐसे जानकार की जरूरत पड़ती है जो उस विशेष कार्य में उसका मार्गदर्शन कर सके। इसी क्रम में यह भूल जाते हैं कि क्या उस जानकार व्यक्ति को भी विषय की पूरी समझ या जानकारी होगी? हमसे पहले उसने उस विषय को पढ़ा है तो उसको उस विषय की पूरी समझ है, यह मान लेना भी कम खतरनाक नहीं है। दूसरी बात यह है कि वह व्यक्ति किस रूप में उस जानकारी को आप तक पहुंचाता है और किस इरादे से उस तथ्य की व्याख्या करता है, इस पर भी ध्यान रखना चाहिए। क्या ऐसा नहीं हो सकता है कि उसने विषय को ठीक से समझा ही नहीं और आपको गलत समझा रहा है या फिर गलत इरादे के साथ जानकारी को आप तक पहुंचाया जा रहा है ताकि आप उसके मुरीद हो जाएं।

एक गलत जानकारी अगर किसी एक के मुख से निकलती है तो वह आगे किस रूप में कहाँ तक जाती है, इसके बारे में कोई सटीक रूप से कुछ कह नहीं सकता। इसलिए प्रत्येक व्यक्ति की यह नैतिक जिम्मेदारी है कि वह जब भी कोई जानकारी आगे बढ़ाए तो उसे उसकी सत्यता का बोध हो अन्यथा वह किसी भी बात को बिना किसी प्रमाण के आगे न पहुंचाए। यह बात इसलिए भी आवश्यक है कि बीते किसी समय में रचित कोई कल्पित कथा जिसे आज मिथ कहा जाता है कहीं किसी समय में यह सत्य प्रतीत न होने लगे और न ही किसी सत्य को बार-बार मिथ्या के रूप में प्रचार करते-करते वह असत्य के रूप में स्थापित हो जाए।

तात्पर्य यह है कि चीजों को तर्क की कसौटी पर परखा जाना चाहिए तत्पश्चात विवेक का प्रयोग कर चीजों को सही या गलत मानना चाहिए। ऐसा नहीं करने से पीढ़ी दर पीढ़ी गलत जानकारी का संचार होता रहेगा और फिर एक समय कोई गलत बात भी सही और सत्य लगने लगेगी। यह बात उन सब मिथक कहानियों के संदर्भ में भी कही जा सकती है जो कभी-कभी सत्य होने का भ्रम पैदा करती हैं, जबकि वैसा कोई साक्ष्य इतिहास में है ही नहीं। कई बार लेखक कल्पना का सहारा लेकर कोई बात समाज तक पहुंचाने का प्रयास करता है और फिर बाद में उस कल्पना को ही सत्य मान लिया जाता है। जैसे वैतरिणी नदी, स्वर्ग लोक, नर्क लोक, पाताल लोक, इत्यादि का होना। पुरातन काल में स्थापित किए गये धार्मिक मिथकों का मंतव्य स्वर्ग का लोभ तथा नरक का भय दिखाकर लोगों को विसंगतियों से दूर रखना था। लेकिन बाद के समय में इनका लालच और डर दिखा कर कुछ लोगों ने स्वयं को समाज के शीर्ष पर स्थापित कर लिया तथा अपने वर्चस्व को कायम रखने के लिए इन बातों का खूब प्रचार-प्रसार किया। मृत्यु के बाद कोई भी लौट कर नहीं आ सकता है तो फिर इन सब बातों की जानकारी किसने दी होगी? जहाँ तक इनकी बात है तो हो सकता है कि समाज को नैतिकता का पाठ पढ़ाने के लिए इन सभी अवधारणाओं को गढ़ा गया हो।

उदाहरण के तौर पर हम देखते हैं कि विभिन्न शिल्पकार किसी भी इमारत को अपने नजरिये से देखते हैं, आंकलन करते हैं और उसकी खूबियों तथा खामियों पर टिप्पणी करते हैं। उस जानकारी के पीछे उनका स्वार्थ, समझ, रुचि, इत्यादि रहती है। एक राजमिस्त्री देखता है कि इमारत का निर्माण किस ढंग से किया गया है, क्या उसमें वे सभी हिस्से हैं जो एक इमारत के अभिन्न अंग होते हैं, क्या उसके निर्माण में उसकी मजबूती को महत्व दिया गया है, क्या उसकी बुनियाद मजबूत है, क्या उस पर वैसी नक्काशी की गयी है जो उसकी शोभा पर चार चांद लगाती है? एक बढ़ई देखता है कि क्या उसके दरवाजे और खिड़कियों के लिए उपयोग की गयी लकड़ी सही है, क्या उस पर जो डिजाइन होना चाहिए था, वो उस पर बना हुआ है, क्या उसका रंग सही है, इत्यादि। एक पेंटर उसका रंग देखता है। एक इलेक्ट्रीशियन उसके विद्युत तारों और विद्युत उपकरणों को देखता है, इत्यादि। तात्पर्य है कि इमारत एक ही है लेकिन उसको देखने वाले अपने-अपने तरीके से उसको देखते हैं और उसके बारे में अपनी राय देते हैं।

उन सभी कारीगरों में से यदि कोई अपनी जानकारी से इतर कोई बात सामने वाले को नहीं बताता है तो क्या यह समझा जाएगा कि वह इमारत उस खूबी से रहित है? अर्थात् एक ही सत्य को सभी अलग-अलग तरीके से देखते हैं, समझते हैं और उसकी व्याख्या करते हैं। सब कुछ अपनी-अपनी रुचि पर निर्भर करता है कि सामने रखे हुए व्यंजनों में से कौन क्या खाता है और क्या छोड़ देता है। इसलिए जो आपको पसंद है उसके अस्तित्व को स्वीकार करना और सत्य मानना तथा जो पसंद नहीं है उसके अस्तित्व को नकार देना किसी भी रूप में सही नहीं है।

उचित तो यह है कि जितनी जानकारी आपको है, उसकी सत्यता की परख कर के ही उस तथ्य को किसी दूसरे तक पहुंचाना चाहिए अन्यथा उस बात को वहीं छोड़ देना चाहिए। अब तक तो यही बताया गया है और हम जानते हैं कि एक सिक्के के दो पहलू होते हैं, लेकिन एक तीसरा पहलू भी होता है जिसकी चर्चा कम ही होती है और वह है सिक्के का वह हिस्सा जिस पर वह खड़ा होता है। वहीं से उसकी दोनों सतहों को देखा जा सकता है और उस किनारे वाली सतह से ही दोनों सतहों को देख कर फिर अपने तर्क के आधार पर सही गलत का फैसला किया जा सकता है।

किसी भी कथन, मान्यता, परंपरा, रीति-रिवाज, विश्वास के पीछे कोई न कोई अवधारणा जरूर रहती है। चूंकि वे सब मान्यताएं हैं और सदियों से चली आ रही हैं, इसलिए उनका अंधानुकरण करते रहना जरूरी नहीं है। उसे मानने से पहले उसके पीछे के रहस्य को अवश्य जानना चाहिए। यदि वह सही है और समयानुकूल है और उसी में सबका हित निहित है तो उसे अवश्य मानना चाहिए, अन्यथा उसके दोनों पहलुओं को ध्यान में रखते हुए तर्क करना चाहिए, फिर जो सही लगे वह करना सही है। यदि ऐसा नहीं होता तो पूर्व की भांति आज भी सती प्रथा, बाल विवाह, घूंघट प्रथा, दास प्रथा, बेगार प्रथा, डाकन प्रथा, पर्दा प्रथा, बंधुआ मजदूर या सागड़ी प्रथा, कन्या वध, जौहर जैसी बहुत सारी सड़ी-गली मान्यताएं समाज में प्रचलित रहती जिनका उन्मूलन हमारे महापुरुषों ने किया। उक्त रीतियों के खण्डन से लेकर विधवा पुनर्विवाह को समाज में स्थापित करने, स्त्री शिक्षा, स्त्रियों, दलितों, अछूतों को मूलभूत अधिकार तथा समाज में उनको समानता का अधिकार दिलाने में कई महापुरुषों ने उस समय के रूढ़िवादी समाज में जिन मुश्किलों का सामना किया होगा उसकी कल्पना कर पाना आज के समय में मुमकिन नहीं है। राजा राममोहन राय, पं. ईश्वरचंद्र विद्यासागर, महात्मा गांधी, ज्योतिबा फुले, सावित्री बाई, डॉ. भीमराव अंबेडकर जैसे महामानवों के अथक प्रयासों का ही परिणाम है कि वे मान्यताएं आज हमारी प्रगति में बाधक नहीं हैं। कानून बना कर कई मूलभूत अधिकार सब को दिए गए, तो कानून के द्वारा ही कई कुरीतियों का अंत किया गया। संविधान में उल्लिखित 11 मौलिक कर्तव्यों में से एक यह भी है - वैज्ञानिक दृष्टिकोण और ज्ञानार्जन की भावना का विकास करें। इसी वैज्ञानिक दृष्टिकोण का अनुसरण करते हुए आज फिर से समाज का मूल्यांकन नए सिरे से करने की आवश्यकता है। मूल्यांकन और विश्लेषण किए बिना वर्तमान समय में प्रचलित तथाकथित परंपराओं, अंधविश्वासों जैसे जाति प्रथा, देवदासी प्रथा, पशुओं के विवाह से वर्षा के देवता का खुश होना, घर से निकलते समय छींक आने को अशुभ मानना, बिल्ली द्वारा रास्ता काट देने को अपशकुन मानना इत्यादि जैसे कई और अंधविश्वास-मान्यताएं हैं, जिनका पुनर्मूल्यांकन किया जाना चाहिए। जब हम मृत सगे-संबंधियों का ही अंतिम संस्कार कर देते हैं तो ये तो ऐसी परंपराएं हैं जिनको ढोने से अपने ही समाज का नुकसान है। अतः इनका अविलंब उन्मूलन किया जाना अनिवार्य है।

“देवनागरी लिपि की वैज्ञानिकता स्वयं सिद्ध है।”

- महावीर प्रसाद द्विवेदी



स्मृति कुजूर

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

इतिहास - अपनी आँखों से

कोलकाता की ऐतिहासिक अलीपुर जेल को एक संग्रहालय में बदल दिया गया है और सितंबर 2022 में इसे आम जनता के भ्रमण के लिए खोल दिया गया है। हाल ही में मुझे इस ऐतिहासिक और भारत के स्वतंत्रता संग्राम की भावना से भरी जगह का दौरा करने का मौका मिला।

1906 में स्थापित, इस दुर्जेय जेल का निर्माण अंग्रेजों ने भारत में अपने शासन के दौरान किया था। मूल रूप से दोषियों को रखने के इरादे से बनाई गई अलीपुर जेल जल्द ही भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान प्रतिरोध का एक महत्वपूर्ण प्रतीक बन गई।

इस संग्रहालय में मौजूद प्रदर्शनी वाच टावर, आई. एन. ए. थीम कैफे, नेताजी प्रदर्शनी कक्ष, विशेष कक्ष, तांतकल बुनाई कक्ष, पुस्तकालय, स्मारिका दुकान, गैलोज क्षेत्र, लाइट एंड साउंड शो और बहुत कुछ देखने लायक है। हालाँकि, इस लेख में मैं उन चीजों के बारे में अपनी भावनाएं साझा करना चाहूँगी जिसने वास्तव में मेरे विचारों पर गहरा प्रभाव छोड़ा है।

सबसे पहले और सबसे महत्वपूर्ण संग्रहालय का गैलोज खंड जिसके प्रांगण में प्रवेश करते ही मानो डर की एक लहर-सी मेरे अंदर दौड़ गयी। यह भारत के कुछ स्वतंत्रता सेनानियों द्वारा किए गए सर्वोच्च बलिदानों की गंभीर वास्तविकता और फांसी का सामना करने वालों द्वारा दिखाए गए अपार साहस की अंतर्दृष्टि प्रदान करता है। 19वीं शताब्दी के दौरान, जब जल के भीतर मृत्युदंड दिया जाता था, तो जेल परिसर के भीतर पेड़ों को अस्थायी फांसी के तख्ते के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। जब आप संग्रहालय का निरीक्षण करते हैं और जेल में बंद लोगों के संघर्षों की कल्पना करते हैं, तो इन पेड़ों की मूक गवाही उनके बलिदानों और प्रतिकूल परिस्थितियों में भी कायम अदम्य भावना की याद दिलाती है।

खुले क्षेत्र में से एक में ऊँचा खड़ा प्रतिष्ठित वाच टावर है, एक प्रमुख संरचना जो पूरे जेल परिसर का एक शानदार दृश्य प्रस्तुत करती है। इस टावर ने जेल अधिकारियों को जेल की दीवारों के भीतर की गतिविधियों पर कड़ी नजर रखने में सक्षम बनाया। निचली मंजिल पर सफेद संगमरमर से बना एक छोटा-सा प्रार्थना घर है जहाँ मैंने शांति का अनुभव किया।

अलीपुर जेल संग्रहालय के भीतर, विशेष कक्ष गहरा महत्व रखते हैं जो उन प्रतिष्ठित व्यक्तियों की स्मृति का सम्मान करते हैं जो कभी इन दीवारों के भीतर कैद थे। नेताजी कक्ष, नेहरू कक्ष, चितरंजन दास कक्ष, बिधान चंद्र रॉय कक्ष और जतींद्र मोहन सेनगुप्ता कक्ष उन उल्लेखनीय कक्षों में से हैं जो भारत के स्वतंत्रता संग्राम की प्रतिष्ठित शख्सियतों की श्रद्धांजलि के रूप में खड़े हैं। इन कक्षों में जाकर जब मैंने इन सम्मानित नेताओं की विरासतों, उनकी अटूट भावना, भारत के इतिहास को आकार देने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिकाओं पर विचार किया तो मुझे अपार उपलब्धि की अनुभूति हुई।

जेल के अस्पताल की इमारत को मुख्य प्रदर्शनी भवन में बदल दिया गया है जहाँ मैंने नेताजी सुभाष चंद्र बोस, ऋषि अरबिंदो, दिनेश गुप्ता, बंगाल की महिला शहीदों और 18वीं एवं 19वीं सदी के इतिहास की प्रदर्शनियाँ देखीं।

इन सभी असाधारण चीजों के बीच, अलीपुर सेंट्रल जेल की घंटी ने मेरा ध्यान आकर्षित किया। इसने मुझे अपने कॉन्वेंट स्कूल की याद दिला दी जहाँ हर काम घंटी के बजने से शुरू या खत्म होता था। अलीपुर जेल में घंटी का निर्माण 1909 में किया गया था। यह सुबह 6 बजे कैदियों को जगाने के लिए बजाई जाती थी और फिर 6.30 बजे बजाई जाती थी, जिस समय तक कैदियों को अपना सुबह का स्नान पूरा करना होता था और नाश्ते व सुबह की ड्यूटी के लिए तैयार होना होता था। रात्रि भोज के लिए 7 बजे और 7.30 बजे अपने कक्षों में वापस भेजने के लिए घंटी बजाई जाती थी। प्रवेश ब्लॉक के पास खुले में रखी यह घंटी भारत के स्वतंत्रता संग्राम के दिग्गजों और गुमनाम नायकों से जुड़ी घटनाओं की गवाह रही है। इसने वार्डन की गुस्से भरी चीखें, स्वतंत्रता सेनानियों की पीड़ा और दर्द की चीखें और शहीदों की आखिरी सांसें सुनी हैं। सौ से अधिक वर्षों के बाद, यह अब हमारे स्वतंत्रता संग्राम के एक महत्वपूर्ण चरण का मूक गवाह बनकर खड़ा है।

मुझे यह स्वीकार करना होगा कि यह स्थान देखने लायक है क्योंकि यह हमें हमारे अस्तित्व की जड़ों की सही पहचान करवाता है एवं मजबूत बनाता है।



गोमा देवी सामंत
पत्नी- श्री राजर्षि सामंत
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

कोलकाता के छुपे हुए आनंद

मैं सिक्किम के पश्चिमी भाग में भारत नेपाल सीमा के एक गाँव उत्तरे से हूँ। उत्तरे युक्सोम के पास है और चेयभंजन से सिंगालीला तक अपने ट्रेकिंग मार्ग और मेनबास झरने के लिए प्रसिद्ध है जो कलेज खोला नदी के किनारे पहाड़ों के भीतर छुपा हुआ है। यहां ज्यादातर समय कड़ाके की ठंड रहती है, मई और जून में हमें रात के समय मोटा कंबल ओढ़ना पड़ता है और मॉनसून के दौरान यहां भारी बारिश होती है। उत्तरे हरियाली से भरपूर है, यहां के लोग हमेशा शांतिपूर्ण रहते हैं और आपको अपनी दैनिक जरूरतों के लिए कुछ ही दुकानें मिलेंगी। यहां का जीवन किसी भी बाहरी व्यक्ति के लिए एक ठहराव जैसा प्रतीत होता है। हालांकि मैं बचपन से इसी स्थान पर बड़ी हुई हूँ, इसलिए स्कूली शिक्षा और घरेलू काम-काज ने मुझे और मेरी बहनों को दिन भर व्यस्त रखा। हम शाम को साढ़े सात बजे तक खाना खा लेते थे और उसके बाद जैसे सूरज ढलते ही पहाड़ों पर कोहरा छा जाता है, वैसे ही दिन भर की मेहनत के बाद नींद भी हमें घेर लेती थी।

अब पाठक मुझसे पूछ सकते हैं कि मैंने यह सब क्यों लिखा, जबकि विषय कोलकाता की छुपी खुशियों के बारे में है। मैं बस अपने पाठकों को उस स्थान के बारे में एक झलक देना चाहती हूँ जहां की मैं रहने वाली थी और जहां मैं वर्तमान में पहुंची हूँ। जिस कारण ने मुझे कोलकाता आने के लिए प्रेरित किया, वह मेरी शादी है और वह भी एक बंगाली से। वो और उसका पूरा परिवार मेरी भाषा नहीं जानते, न ही मैं उसकी भाषा जानती थी। हमारे रिश्ते को जोड़ने का एकमात्र माध्यम हिंदी है और शादी के शुरुआती दिनों में मेरे पति जिस तरह मुझसे बात करते थे उससे मुझे आश्चर्य होता था कि क्या वह टॉम ऑल्टर से बेहतर हिंदी बोल रहे हैं या नहीं। शुरू में मुझे इस 'ग्रह' पर किसी अजनबी जैसा महसूस हुआ...मई और जून में मुझे लगा कि मुझे माइक्रोवेव ओवन में डाल दिया गया है...मॉनसून की शुरुआत में यहां की नमी ने मेरे भीतर की सारी ऊर्जा सोख ली। उस समय मुझे अपने गांव की ठंडी हवा बहुत याद आती थी। हालांकि, इन सभी बाधाओं के बावजूद, समय बीतने के साथ और थोड़े प्रयास से मुझे बंगाली भाषा से प्यार हो गया और मैंने इसे दो महीने के भीतर ही सीख लिया। समय के साथ मुझे शहर की हलचल, बाजार, मॉल, स्वादिष्ट भोजन पेश करने वाले फूड स्टॉल, पार्क और विशेष रूप से हुगली नदी में नदी यात्रा पसंद आने लगी। जैसे एक मां लंबे समय से अलग होने के बाद अपनी बेटी को गले लगाती है मुझे लगा कि कोलकाता ने मुझे उसी तरह गले लगाया है। मेरे पति मुझे बिग बॉस, गोल्डन जॉय, बीजिंग जैसे चाइना टाउन के कुछ प्रसिद्ध भोजनालयों में ले जाते थे, जहां चीनी व्यंजन मिलता है। मुझे ऐसा लगता था ये व्यंजन स्वर्ग में बनाए जा रहे हैं। पार्क सर्कस में अर्सलान बिरयानी, खिदिरपुर में द इंडियन, पार्क स्ट्रीट में द शिराज, रिपन स्ट्रीट पर ज़म ज़म और कई अन्य आउटलेट्स पर ऐसा लगता था मानो नवाब की रसोई से गर्म और ताज़ा परोसा जा रहा हो।

विशेष रूप से तैयार किए गए कोलकाता के विशेष फुचकों को भूलना नहीं चाहिए, जिनमें आलू धनिया की पत्तियों को इमली के पानी के साथ डाला जाता था, जिसको चख के मैं खुशी से पागल हो गयी और अधिक के लिए उत्सुक हो गयी। इसके साथ ही जिस चीज ने मुझे सबसे ज्यादा चौंकाया, वह थी कोलकाता के विभिन्न फूड जॉइंट्स के मोमो क्योंकि पहले मुझे लगता था कि एक बार जब आप तीस्ता पार कर जाएंगे, तो आप मोमो का स्वाद नहीं ले पाएंगे। मुझे गरियाहाट के पास गोलपार्क में ग्रब क्लब, डेन्जोंग की रसोई और मैदान मेट्रो के पास सिक्किम हाउस के अंदर द गैंगटोक किचन और एक्साइड मोड़, हिंदुस्तान पार्क, जादवपुर, इत्यादि में कई स्ट्रीट मोमो कॉर्नर भी बहुत पसंद हैं।

अंत में अगर मैं कोलकाता के प्रसिद्ध तले हुए खाद्य पदार्थों का जिक्र नहीं करूंगी, तो मैं इस शहर के पाक गौरव के साथ घोर अन्याय करूंगी। कोलकाता का गौरव उसकी अपनी फिश फ्राई, फिश कबीराजी, चिकन कटलेट, मटन शम्मी कबाब, एग डेविल, मोगलाई पराठा, कोचुरी और आलू सब्जी के जिक्र के बिना पूरा नहीं होगी। कुछ प्रसिद्ध फ्राइड फूड कॉर्नर जो मैंने देखे वो हैं कालीघाट में अपोनजोन, गरियाहाट में कैपारी और दास केबिन, गोलपार्क में मित्रा कैफे, त्रिकोणीय पार्क में शंकर फ्राई, एस्प्लेनेड में डेकर्स लेन में चित्तोडा और सुरुचि। इन तली हुई चीजों को बनाने में उन सभी की अपनी-अपनी शैली और पहचान है।

अगर आप रविवार का नाश्ता कचौरी और आलू सब्जी के साथ जलेबी से करना चाहते हैं तो देशप्रिया पार्क में महाराजा, विभिन्न स्थानों पर शर्मा, गरियाहाट में बीनापानी, लेक व्यू के पास जुगल हैं।

अंत में जो चीजें मैंने शाम को घर लौटते समय लोगों को खाते हुए देखी हैं वे मुख्य रूप से रोल्स, झाल मुरी, आलू काबली और विभिन्न पकौड़े हैं। मुझे लगता है कि ये आइटम सच्चे दोस्तों की तरह हैं जो मुसीबत में हमेशा आपके साथ होते हैं। इसलिए कोलकाता में इन बारह वर्षों के बीतने के साथ-साथ इसकी व्यस्त सड़कें, बारिश से भीगा मैदान, भीड़ भरी बसें, नियमित देरी से चलने वाली मेट्रो और यात्रियों से लड़ते हुए ऑटो रिक्शा जैसे कि यह उनकी आखिरी यात्रा है, कछुओं की तरह चलती ट्राम भी मुझे अच्छी लगने लगी, मेरे जीवन का जरूरी हिस्सा बन गई। याद नहीं आता जब सिक्किम की एक महिला को कोलकाता की गोद में आश्रय मिला, उसके हाथ उसके बालों को सहला रहे थे और उसके होंठ उसके कान में अनुपम राय द्वारा रचित गीत की प्रसिद्ध पंक्ति बुदबुदा रहे थे... “कोलकाता, तुमियो हेटे देखो, कोलकाता तुमियो भेबे देखो जाबे की ना जाबे आमार साथो”



“राष्ट्रीय व्यवहार में हिंदी को काम में लाना देश की शीघ्र
उन्नति के लिये आवश्यक है।”

- महात्मा गांधी



बिपुल कुमार साव
कनिष्ठ अनुवादक

भावनाएं और कर्म

हैसियत से काफी ऊंचे घराने में शादी की थी जसोदा ने अपनी बेटी कोमल की। मुहमांगा दहेज देने की हैसियत थी नहीं, ऊपर से इसे बिटिया की तकदीर समझ लें या फिर वर पक्ष के संस्कार, उन्होंने भी बगैर किसी तोल-मोल के शादी के लिए हामी भर दी। कोमल जसोदा की इकलौती बेटी थी। जब वह सिर्फ पांच साल की थी तभी उसके पिता का देहांत हो गया था। मां ने काफी मुश्किलों का सामना करके कोमल की परवरिश की थी। पति की बचत और अपनी सारी जमा पूंजी जसोदा ने अपनी बेटी की शादी में लगा दी थी।

आखिरकार शादी की घड़ी आयी और कोमल ससुराल को विदा हो गयी। ससुराल में सब कुछ अच्छा था। चूंकि उसका पति रमेश भी अपने माता-पिता का एकलौता पुत्र था, अतः ससुराल में कोमल और रमेश के अलावा सिर्फ कोमल के सास-ससुर ही थे। सभी ने नयी बहू का अच्छी तरह स्वागत किया। रमेश भी काफी खुश था। दिन बीतते गए। दो साल बाद रमेश को पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई। नए मेहमान के आने से पूरे परिवार की खुशियाँ दुगुनी हो गयी।

लेकिन नियति बड़ी क्रूर होती है। कभी-कभी यह हमारे जीवन को सुख-समृद्धि से भर देती है और कभी-कभी हमारे जीवन को कभी न भरने वाला जख्म भी दे जाती है। कल रात रमेश की सड़क दुर्घटना में मौत हो गयी। शव घर में रखा हुआ है... पुरुष शव के अंतिम संस्कार की तैयारी कर रहे हैं... सुमित्रा (रमेश की मां) और दूसरी महिलाएं विलाप कर रही हैं। लेकिन वो नहीं रो रही... सिंदूर पोंछ कर उसे सफेद लिबास से लपेट दिया गया है... लेकिन उसकी आँखों से आँसू नहीं टपक रहे... वैधव्य का बोझ नियति ने उसके कंधों पर डाल दिया है... लेकिन वह टूट नहीं रही क्योंकि उसकी गोद में है उसकी नयी जिम्मेदारी जो अभी सिर्फ चार महीने का है... उसका बेटा।

आदमी की मानसिकता बहुत कुछ परिस्थितियों पर भी निर्भर करती है। दूसरे व्यक्ति के कथन भी काफी हद तक मानसिकता को प्रभावित करने की क्षमता रखते हैं, खासकर जब गुजर रही परिस्थिति प्रतिकूल हो। दरअसल प्रतिकूल परिस्थिति में आदमी अच्छे-बुरे में अंतर नहीं कर पाता और इस स्थिति में उसकी सोच बाह्य कारकों से प्रभावित होती है और उसकी स्व-प्रकृति को पूरी तरह से परिवर्तित कर देती है।

“...अभी जाने की उम्र नहीं थी रमेश की...बेचारा कितना छोटा है उसका बेटा...” “कैसे संभाल पाएगी कोमल अब अपने बेटे को...बेचारी का सुहाग उजड़ गया...” महिलाओं की इस प्रकार की उक्तियों से सुमित्रा की वेदना और अधिक बढ़ जाती थी। “...बहू का आना शायद शुभ नहीं हुआ...बेचारी का जवान बेटा चला गया...” यह आखिरी उक्ति सुमित्रा को जहर के उस कड़वे घूंट के समान प्रतीत हुई जिसे वह गटकना तो नहीं चाहती थी परंतु परिस्थितिवश मजबूरी में उसे गटकना पड़ा था। “शुभ नहीं हुआ” “बेटा चला गया” इन दो कथनों ने सुमित्रा के मन-मस्तिष्क में एक गांठ-सी बना ली।

कोमल की जिंदगी अब पहले सी नहीं रही। सुमित्रा के मन में पड़ी हुई गांठ का प्रभाव निश्चित रूप से उसे ही झेलना पड़ रहा था। क्या किसी का होना या न होना जीवन के शाश्वत सत्य को प्रभावित कर सकता है? उसकी शादी अगर रमेश से न हुई होती तो क्या आज रमेश जिंदा होता? ऐसे ही कुछ अनुत्तरित प्रश्नों की उधेड़बुन में वो उलझी रहती। हाँ, लेकिन वो अपनी जिम्मेदारी बखूबी निभा रही थी; अपने परिवार, खासकर अपने बेटे के प्रति। सुमित्रा के मन में पड़ी गांठ से रिसता हुआ विष मानों उसकी जिह्वा पर आ गया था, जो अनायास ही कोमल को पीड़ित करता रहता था। विष-बाणों को सहना अब कोमल की नियति बन गयी थी। वह न तो अपने मायके जा सकती थी और न ही अपना जीवन समाप्त कर सकती थी।

इसी तरह एक वर्ष बीत गया। घर में सुमित्रा की चचेरी बहन रेखा आयी हुई है। कोमल हमेशा की तरह चूल्हे-चौके में व्यस्त। बीच-बीच में अपने बेटे को गोद में लेकर खिला भी रही है।

“क्यों न कोमल की दूसरी शादी कर दी जाए?”, बरामदे में अपने बच्चे के साथ बैठे कोमल को देखकर रेखा ने सुमित्रा से कहा।

“क्या? यह क्या कह रही हो तुम? अभी तो एक साल ही हुआ है रमेश को गए हुए; बच्चा भी अभी छोटा है। ऐसी हालत में शादी?”, सुमित्रा ने कहा।

“एक साल ही हुआ है, और बच्चा भी छोटा है, तभी तो शादी के लिए कह रही हूँ। बच्चे की अच्छी परवरिश भी हो जाएगी। आखिर वो तुम्हारे खानदान का ही तो अंश है। कहीं ऐसा न हो कि समय निकल जाए और जब शादी की सोचो तो कोई हाथ पकड़ने वाला ही न मिले।”, रेखा का तर्क था।

“बात तो ठीक है तुम्हारी, पर शादी पर खर्च कहां से किया जाए? रमेश और इनकी जो थोड़ी-सी जमा पूंजी है उसी से तो सारा घर चल रहा है। अब शादी का खर्च कैसे उठाए। और रही बात इसकी मां की तो उससे बोलकर भी कोई फायदा नहीं होने वाला। वह खुद ही अपना खर्च बमुश्किल उठा रही है”- कोमल की तरफ आँखों से इशारा कर सुमित्रा ने अपनी चिंता व्यक्त की।

“अरे वो अपना रोशन है न, उसी से शादी करवा दो। उतना खर्च भी नहीं करना पड़ेगा, और बच्चे तथा कोमल की देख-रेख के लिए एक मर्द का सहारा भी मिल जाएगा। बच्चे की परवरिश से तुम्हें छुटकारा मिलेगा और अपनी जमा पूंजी से तुम बूढ़ा-बूढ़ी अपनी जिंदगी काट लोगे।”- रेखा ने कहा।

रोशन सुमित्रा के दूर के रिश्तेदारी का था। शादी के चार महीने बाद पत्नी चल बसी थी। उसकी अपनी एक छोटी-सी किराने की दुकान थी और यही उसकी कमाई का मूल स्रोत था। माँ बाप गुजर चुके थे अतः वह अकेला ही जिंदगी गुजार रहा था।

आखिरकार रोशन और कोमल की शादी कर दी गयी। हालांकि दोनों की उम्र में काफी अंतर था लेकिन ज़िम्मेदारी ने इस अंतर को भर दिया था। कोमल की माँ को इस शादी से भला क्या आपत्ति हो सकती थी? कोमल बच्चे के साथ रोशन के घर आ गयी। परिवार बढ़ जाने से रोशन की कमाई अपर्याप्त पड़ने लगी अतः कोमल भी आस-पास के घरों में काम करने लगी। इस तरह उन लोगों का गुजारा होने लगा।

वर्ष बीतते गए। कोमल का बेटा राकेश बड़ा हो गया और उसकी परवरिश करने वाले बूढ़े होते गए। उधर सुमित्रा का पति भी चल बसा था और सुमित्रा रोग से जर्जर हो चुकी थी। राकेश ने खूब मन लगाकर पढ़ाई की और अपनी मेहनत व लगन से आज वो एक अच्छे पद पर नौकरी कर रहा है। हालांकि वह अपनी पिछली जिंदगी से पूरी तरह से अवगत है, उसके पिता का निधन, उसकी माँ का संघर्ष, माँ की दूसरी शादी - सारी बातें वह जानता है। उसे नहीं मिला तो सिर्फ बाप का प्यार। वह जिसका अंश है उसे तो वह होश संभालने के पहले ही खो चुका था, दूसरे ने तो सिर्फ उसे ज़िम्मेदारी समझकर उसकी परवरिश की लेकिन उसे एक बाप का प्यार नहीं दिया। उसके लिए तो उसकी माँ ही सब कुछ थी जिसने सदैव मौन रहकर जिंदगी के सभी थपेड़ों को सहते हुए आज उसे अपने पैरों पर खड़ा किया था। लेकिन आज वह अपनी माँ से भी असहमत था। कारण उसकी माँ ने उसकी दादी सुमित्रा की भी देखभाल करने और उनकी दवाइयों का खर्च उठाने का उससे अनुरोध किया था। राकेश का तर्क स्पष्ट था और उसकी व्यवहारिकता यह कहती थी कि जब जरूरत के समय उसकी दादी ने उससे मुंह फेर लिया तो फिर वह क्यों अपनी दादी की ज़िम्मेदारी संभाले? क्या सिर्फ इसलिए कि वह उसके खानदान का अंश है? इसी दुविधा में राकेश फंसा हुआ था।

इसी दुविधा को लेकर वह अपने गुरुजी के पास पहुंचा जिनसे उसने शिक्षा प्राप्त की थी। उसके गुरु ने उसे समझाया कि मानव जीवन एक वृक्ष की भांति होता है। जिस व्यक्ति ने मिट्टी में बीज बोया वो तुम्हारी देखभाल नहीं कर सका अर्थात् तुम्हारे अपने पिता। एक दूसरा शख्स तुम्हें तुम्हारे स्थान से स्थानांतरित कर देता है यानि तुम्हारी दादी। भले ही उसकी मंशा कुछ भी रही हो लेकिन अगर हम इसको सकारात्मक नजरिए से देखें तो हो सकता है कि तुम पूर्ववर्ती स्थान पर अपना विकास भली भांति न कर

पाते और इसी कारण तुम्हें तुम्हारे स्थान से स्थानांतरित किया गया हो। एक अन्य व्यक्ति जिसने तुम्हें अपनी बगिया में स्थान दिया और तुम्हें पूरी तरह विकसित होने का मौका दिया यानि तुम्हारे वर्तमान पिता। लेकिन एक चीज जो इन सारी घटनाओं में सदैव तुम्हारे साथ रही और जिसकी वजह से तुम आज काबिल हो पाये हो वह है तुम्हारी जड़ें मतलब तुम्हारी माँ। वह हमेशा तुम्हारी पालन-पोषण करती रही और तुम्हें इस काबिल बनाया कि तुम विकसित होकर फल-फूल सको। आज जब तुम एक फलदार वृक्ष बन चुके हो तो तुम्हारी सोच यह होनी चाहिए कि तुम सबको अपनी छाँव में पनाह दो क्योंकि एक वृक्ष कभी भेद-भाव नहीं करता भले ही किसी ने उसकी देख भाल की हो या किसी ने उसे पत्थर मारे हो। हाँ लेकिन इसमें अपनी जड़ों को कभी मत भूलना क्योंकि आज जो तुम हो वो उसकी वजह से ही हो। यही जिंदगी है, यही निस्वार्थता है। हमें अपना कर्म निस्वार्थ भाव से करते जाना चाहिए। इसमें तुम्हारी व्यवहारिकता यदि आड़े आ रही हो तो ये मत भूलो एक व्यक्ति की भावना उसकी व्यवहारिकता से काफी बड़ी होती है। उसकी भावना ही उसके कर्म को, उसके व्यवहार को नियंत्रित करती है। इसलिए अपनी भावना बदलो, तुम्हारी भावना ही तुम्हें उचित व्यवहार की ओर अग्रसर करेगी।

गुरुजी के कथन से राकेश को अपने सभी प्रश्नों के उत्तर मिल गए थे। उसने गुरुजी से विदा ली। वह समझ चुका था कि उसे अपनी भावना कैसे बदलनी है और उसके अनुरूप कैसे कर्म करने हैं।





किशन राम
कनिष्ठ अनुवादक

यमुना की पुकार

जहाँ सहनशीलता की सीमा समाप्त होती है, वहाँ से प्रतिकार की भावना जन्म लेती है; जहाँ समायोजन की गुंजाइश नहीं बचती, वहाँ से बदलाव का प्रादुर्भाव होता है; जहाँ दयाभाव अपनी अंतिम सांस लेता है, वहाँ से क्रोध जन्म लेता है। भारत की सभी मुख्य नदियाँ उपर्युक्त तीनों स्थितियों से गुजरकर अपनी परिणति तक आ पहुँची हैं। दशकों से अपने अस्तित्व में सिकुड़ती जा रही लाचार, कुंठित वृद्ध-सी दिखने वाली नदियाँ एकदम से नागराज की तरह फुफकारते हुए अपने कंठ तक मानवीय प्रदत्त गरल का मंथन कर उसे और अधिक विषैला बनाकर समूची मानव सभ्यता को डसने के उद्देश्य से बेलगाम निकल पड़ी हैं। उनका गुस्सा जायज भी है। नदियों ने सर्वप्रथम मानव सभ्यता को पनपने में अपना भरपूर योगदान दिया। उन्होंने अपनी गोद में गाँव बसाए। कुछ गाँवों को शहर बनने का पूरा मौका दिया। यहाँ तक कि मानवीय कल्पना भी नदियों के अस्तित्व के बिना अधूरी-सी लगती थी। जब किसी कवि या साहित्यिक व्यक्ति के मन में कल्पनाओं का अनियंत्रित सैलाब बहने लगता था तो वह अपना मानसिक संतुलन बनाए रखने के लिए अपनी कल्पना को किसी नदी में छोड़ देता था। फिर नदी उसकी कल्पना को एक मूर्त कहानी का रूप देती थी जिसमें नदी के इस पार नायक का घर है; दूसरे पार नायिका अपनी अट्टालिका में एक दीपक के संकेत से अपने प्रिय को अपनी उपस्थिति का अहसास करा रही है। बीच में बहती हुई नदी उनके भावों की तरलता से जनित प्रेमपूर्ण उमंग को अपनी तरंगों के मार्फत चाँदनी की स्वच्छ आभा में धीरे-धीरे बहा ले जा रही है। प्रेम कहानियों की इस प्रकार की पृष्ठभूमि पाठक को एक अलग प्रकार की अनुभूति का अहसास कराती थी। साधुओं ने तपस्याएं नदियों के किनारे की। गुरुओं ने अपने शिष्यों को उपदेश नदियों के किनारे दिए। अन्न का पहला दाना नदियों की झोली से निकाला गया। वस्त्र धारण करने लिए कपास और रेशम नदियों की कृपा से नसीब हुए। स्थायी निवास बनाने के लिए कच्चे मकानों में लगने वाली चिकनी मिट्टी से लेकर पक्की इमारतों में प्रयोग होने वाली बालू, आदि भी नदियों के दामन से निकाली गई। मनुष्य नदियों के सारे उपकार भूल गया। साथ ही साथ वह अपने अस्तित्व में नदियों के योगदान को भूल गया। वह भूल गया कि सभ्यता के अस्तित्व को बचाने के लिए अधिकांश युद्ध नदियों के लिए या नदियों के तट पर ही लड़े गए हैं। वह भूल गया कि इन उपकारी नदियों का रौद्र रूप कितना विकराल हो सकता है। दरअसल वह यह भी भूल गया कि पृथ्वी पर नदी नाम का भी कुछ होता है। उसने नदियों के सारे उपकारों के बदले में उन्हें क्या दिया? नदियों के सभी अहसानों के बदले मनुष्य ने नदियों को दिया- घर से निकलने वाला मल-मूत्र, कल-कारखानों से निकलने वाला अपशिष्ट, जीवनभर पाप कमाकर बैकुंठ की लालसा रखने वाली लाशें, शहर की गंदगी को ढोने वाले नाले, जूठी पन्नियों एवं कागजों के गगनचुंबी ढेर। मानव ने नदियों की पीठ पर अपनी बस्तियाँ लाद दीं। उनके बोझ तले वे दबने लगीं। उनका बदन दुखने लगा। उनका अस्तित्व सिमटकर सिल्ट और गाद से नाक तक भरे नालों में तब्दील हो गया। नदियाँ यह सब सहती रहीं। जैसे-तैसे अपना बसर करती रहीं। फिर जैसे-जैसे मानवजनित गंदगी उनके गले से ऊपर जाने लगी और उनका दम घोटने लगी वैसे-वैसे नदियों ने मनुष्य को सबक सिखाना आरंभ कर दिया। उन्होंने अपने गुस्से को कई बार कई प्रकार से प्रकट किया। लेकिन उनके इस गुस्से से मानव ज्यादा प्रभावित नहीं हुआ। उसने नदियों के गुस्से को अधिक समय तक दिमाग में नहीं रखा और जल्द ही नजरअंदाज भी कर दिया। अपनी अवहेलना होता देख नदियाँ अपने गुस्से को नागराज की तरह अपने अंदर प्रवाहित कर मौके की तलाश करने लगीं।

इन्ही नदियों में से एक है यमुना। यमुनोत्री से निकलकर उत्तराखंड, हरियाणा, उत्तर प्रदेश जैसे राज्यों में बहने वाली यह नदी देश की राजधानी शहर दिल्ली को अपने किनारे पनाह देती है। यह कभी सियासत की नगरी दिल्ली का मान हुआ करती



थी। न जाने कितने शायरों ने इसके किनारे बैठ अपनी माशूकाओं के इश्क में शायरियाँ लिखी थी। न जाने कितने लोगों के दर्द एवं अवसाद इसमें बहकर कहीं दूरस्थ इलाकों में मिट्टी में लीन हो गए। इसकी रक्षा एवं साफ़-सफाई के मुद्दे को लेकर न जाने कितने चुनाव जीते गए। इतनी आलीशान जिंदगी जीते वक्त यमुना ने कभी नहीं सोचा था कि जिस शहर को बसाने में उसका अहम् योगदान रहा है वही शहर एक दिन उसे समाप्त कर देगा। यमुना की अवहेलना इस कदर की गयी कि कवियों ने अपनी कविताओं में उसका जिक्र करना छोड़ दिया। शायर अपनी माशूकाओं को लेकर चाँद की यात्रा पर निकल गए। चुनावी भाषणों में अब उसकी साफ़-सफाई के स्थान पर “मरने नहीं देंगे” जैसे शब्दांशों का प्रयोग होने लगा। जब यमुना के अस्तित्व का मतलब एक नाले के रूप में सिमटकर गाद और मल-मूत्र बहाने एवं राजनैतिक मंचों पर एक मुद्दे के रूप में प्रयोग किए जाने तक सीमित रह गया तब यमुना के मन में प्रतिकार की भावना उपजी। एक ऐसी भावना जो किसी भी दमित आत्मा के अंदर उपज सकती है। उसने अपने अस्तित्व के मायने सिखाने एवं उसकी अवहेलना के दुष्परिणाम दिखाने की ठान ली और लालची एवं अतिभोगी मानव सभ्यता को एक अप्रत्याशित सबक सिखाने के उद्देश्य से वह एक सर्पिणी की तरह बिजली के वेग सी उनकी बस्तियों में घुसने लगी। अपने गुस्से के शुरुआती चरण में उसने अपनी पीठ पर बनी सभी बस्तियों को बहाया। फिर निकल पड़ी अपने पैतृक क्षेत्र की सफाई एवं दावेदारी करने के लिए। मानव सभ्यता ने उसे अब तक जितने उपहार भेंट किए थे वह सब उनके मुँह पर मारकर वापस करने लगी। पहले उसने सबसे अपनी दयनीयता की गुहार लगायी। इस बार वो आकाओं और हुजूरों के पैर नहीं पड़ी बल्कि उनकी छाती पर सवार हो गयी। उसने उनकी नाक में घुसकर उनके उपहारों की गंध का अहसास कराया। अपनी बस्तियाँ बसाने के उद्देश्य से मानव ने जितना उसको काटा-छांटा था उससे भी दोगुनी भीतर मानव बस्ती में उसने तबाही मचा दी। उसने मानव प्रदत्त गन्दगी, पन्नी थैले, बोरियाँ, जूते एवं गिलास, इत्यादि सब उसके मुँह पर मार वापस कर दिए। सारे सरकारी विभागों, विशेषतौर पर निर्माण कार्य से सम्बंधित विभाग, में उसने तबाही मचा दी। चारों तरफ खबर फैल गयी कि यमुना घरों में घुस आयी है। परन्तु सत्य यह था कि यमुना से उसका घर छीन लिया गया है। वह केवल अपना घर वापस चाहती है। शायद इसलिए वह दर-दर जा रही है कि कोई तो उसकी पीड़ा को समझेगा। अपने गुस्से को निकालने के लिए उसने वे सारी ऐतिहासिक इमारतें अपनी चपेट में ले लीं जिनकी लोकप्रियता एवं देखरेख के चलते उसकी अवहेलना की गयी। वह सियासत के उन झूठों के पास भी गयी जिन्होंने उसकी जिंदगी बचाने का वचन लिया था किन्तु कुछ समय बाद भूल गए। जब उसके गुस्से की फुफकार पूर्णरूप से शांत नहीं हुयी तो वह देश के सबसे बड़े एवं अंतिम न्याय-मंदिर का दरवाजा खटखटाने लगी। उसने दोनों हाथ फैलाकर भरे दरबार में न्यायमूर्तियों से गुहार लगाई कि उसे उसका घर वापस किया जाए। यमुना की आँखों में चेतावनी देने वाला गुस्सा था। यमुना अभी सर्वोच्च न्याय मंदिर के द्वार पर बैठी है। उसे पूरी उम्मीद है कि उसके साथ न्याय होगा। अन्यथा की स्थिति में कोई नहीं बता सकता कि अगली बार उसका रौद्र रूप कितना प्रचंड होगा।

नदियों को संरक्षण देने से बेहतर है कि उनके रास्ते न रोके जाएँ। अपना संरक्षण वे खुद कर लेती हैं।

“भाषा देश की एकता का प्रधान साधन है।”

- (आचार्य) चतुरसेन शास्त्री



रवि पासवान
कनिष्ठ अनुवादक

स्वास्थ्य व्यवस्था

वर्तमान समय में एक व्यक्ति के जीवन की महत्वपूर्ण जरूरत क्या है? यह प्रश्न हमें हमेशा परेशान करता है। सरकार की माने तो एक व्यक्ति के जीवन में रोटी, कपड़ा और मकान ही सबसे महत्वपूर्ण जरूरत है। क्या सिर्फ रोटी, कपड़ा और मकान होने मात्र से किसी व्यक्ति को सुखी कहा जा सकता है? अच्छे स्वास्थ्य के बिना कोई व्यक्ति कैसे सुखी हो सकता है? अमर्त्य सेन के अनुसार “स्वास्थ्य एक सामाजिक वस्तु है। एक व्यक्ति को स्वस्थ तभी कहा जाना चाहिए यदि वह समाज में सक्रिय रूप से भाग लेने में सक्षम है।” आज हम स्वास्थ्य संबंधी समस्या को बहुत बड़ी चुनौती के रूप में देख रहे हैं। खासकर

भारत या अन्य विकासशील देश जिनके पास संसाधन सीमित हैं एवं अपार जनसंख्या है जिसको एकसाथ उपचार दे पाना संभव नहीं है।

विश्व में प्रत्येक वर्ष 21 जून योग दिवस के रूप में मनाया जाता है। इस क्षेत्र में डब्ल्यू. एच. ओ. ने अनेक प्रयत्न किए हैं। सन् 1948 ई० में डब्ल्यू. एच. ओ. की स्थापना विश्व के अनेक देशों के सहयोग से की गई थी जिसका मुख्यालय जेनेवा में स्थित है। वर्तमान में कुल 194 देश इसके सदस्य हैं। विश्व में व्याप्त किसी महामारी से बचाव की योजना बनाना इसका मुख्य उद्देश्य है जिसका प्रमुख उदाहरण हमें कोरोना महामारी काल में स्पष्ट रूप से मिला है। 150 देशों में इसके कार्यालय होने के साथ-साथ छः क्षेत्रीय कार्यालय भी हैं। इस संगठन के अनुसार किसी व्यक्ति की संपूर्ण शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्थिति को स्वास्थ्य में शामिल किया गया है न कि केवल बीमारी का अभाव। इसे लंबे समय के लिए अव्यवहारिक मान कर खारिज कर दिया गया था। सन् 1980 में स्वास्थ्य की नई अवधारणा लाई गई। इसके तहत स्वास्थ्य को एक संसाधन माना गया है। यह एक अंतर-सरकारी संगठन है तथा सामान्यतः अपने सदस्य राष्ट्रों के स्वास्थ्य मंत्रालयों के सहयोग से कार्य करता है।

सामाजिक कल्याण का आशय ऐसे कल्याण से है जो समाज के सभी समुदाय के लोगों का कल्याण कर सके। इसमें शिक्षा, कौशल इत्यादि इसके विभिन्न स्वरूप हैं। सामाजिक कल्याण में सबसे अधिक महत्व स्वास्थ्य को देना अनिवार्य है क्योंकि एक अच्छे समाज में स्वस्थ लोगों के सहयोग से सामाजिक कल्याण करना सरल हो जाता है।

राजनीतिक कल्याण में भी स्वास्थ्य का एक अपना अलग महत्व है। राजनीतिक कल्याण के रूप में स्वास्थ्य किसी समाज के राजनीतिक संवाद को और अधिक लोकतांत्रिक, उत्तरदायी एवं विकेन्द्रीकृत करने में सक्षम करता है। इसके अतिरिक्त, महत्वपूर्ण मुद्दों पर विशेष रूप से स्वच्छ ऊर्जा, सतत विकास, आदि पर सर्वसम्मति विकसित करना अत्यधिक सरल हो जाता है।

आर्थिक कल्याण में स्वास्थ्य का विशेष स्थान है। किसी देश के आर्थिक विकास में सबसे अधिक बाधा स्वास्थ्य की होती है। विकसित देशों की स्वास्थ्य व्यवस्था में अत्याधुनिक तकनीकों का प्रयोग किया जाता है। वहीं विकासशील देशों में इसका अभाव है। स्वास्थ्य पर अत्यधिक व्यय से देश की कल्याण व्यवस्था पर गहरा प्रभाव पड़ता है। इसके अतिरिक्त स्वास्थ्य पर कम व्यय परिवार, सरकार और व्यापक रूप से समाज के भार को कम करता है। अमेरिका के सेंटर फॉर डिजीज कंट्रोल एण्ड प्रिवेंशन के अनुसार, बाल्यावस्था में टीकाकरण पर प्रत्येक एक डॉलर में निवेश से दस डॉलर का प्रतिफल प्राप्त होता है।

पारिस्थितिक कल्याण के रूप में स्वास्थ्य, सतत विकास, सतत उपभोग और पर्यावरण अनुकूल नीति निर्माण को संभव बनाता है। प्रदूषण में वृद्धि और स्वास्थ्य पर बढ़ते प्रतिकूल प्रभाव के कारण जगह-जगह विरोध प्रदर्शन किया जाता रहा है। जिसका उदाहरण हमारे देश के विभिन्न प्रदेशों में विशेष रूप से देखने को मिलता है।



वर्तमान में स्वास्थ्य का अधिकार एक मूलभूत मानव अधिकार के रूप में तेजी से स्वीकार किया जा रहा है। सतत विकास का लक्ष्य स्वास्थ्य को मूलभूत मानव अधिकार प्रदान करता है। मानवाधिकारों की सार्वभौमिक घोषणा, आर्थिक, सामाजिक और सांस्कृतिक अधिकारों पर अंतर्राष्ट्रीय अनुबंध, आदि ने स्वास्थ्य को एक मूलभूत मानव अधिकार के रूप में मान्यता प्रदान की है। स्वास्थ्य का संबंध केवल शरीर से ही नहीं बल्कि मन की दृढ़ता से भी है। भारतीय संविधान के भाग-III के अंतर्गत मौलिक अधिकारों के एक भाग के रूप में स्वास्थ्य के अधिकार को घोषित करने हेतु भारत में सर्वसम्मति विकसित हो रही है। अतः इस अधिकार की पूर्ति का दायित्व समाज और सामाजिक संस्थानों पर है।

भारत में सार्वजनिक सेवाएं असमान रूप से वितरित हैं। भारत की जनसंख्या के अनुपात में डॉक्टरों और अस्पतालों की संख्या निराशाजनक है। अस्पतालों में मरीजों के लिए पर्याप्त बेड उपलब्ध नहीं हैं। जहां गोवा में 614 व्यक्तियों पर 01 बेड वहीं बिहार में 8789 व्यक्तियों पर 01 बेड उपलब्ध है।

स्वास्थ्य देखभाल पर होने वाले व्यय के कारण भारत में लगभग 5 करोड़ लोग गरीबी में जीवन व्यतीत करने के लिए विवश होते हैं। कोरोना महामारी में इसका विशेष प्रभाव पड़ा। लगभग सभी देशों को इसके कारण आर्थिक संकट का सामना करना पड़ा। भारत भी इससे बच नहीं पाया। भारत में कोरोना की वजह से सकल घरेलू उत्पाद में व्यापक गिरावट देखने को मिली। भारत में स्वास्थ्य देखभाल पर होने वाला सरकारी व्यय निराशाजनक रूप से सकल घरेलू उत्पाद का केवल 1.28% है, जो कुल स्वास्थ्य संबंधी व्यय के 30% से भी कम है। भारत में इस क्षेत्र में प्रत्येक नागरिक पर प्रतिव्यक्ति व्यय केवल तीन रुपये प्रतिदिन है। भारत में स्वास्थ्य संबंधी नियामक ढांचा आज भी व्यवस्थित नहीं है। किसी व्यक्ति का स्वास्थ्य बिगड़ जाने पर वे गैर-सरकारी अस्पताल, प्राइवेट क्लिनिक में जा कर डॉक्टरों से दिखाते हैं। जहां भारत के गांवों में आज भी स्वास्थ्य व्यवस्था चरमराई हुई है, डॉक्टरों, दवाइयों एवं उच्च स्तरीय आधुनिक जांच मशीन उपलब्ध नहीं है, वहीं बड़े शहरों के अस्पतालों में दूसरे देशों से चिकित्सा के लिए आते हैं। भारत की जलवायु, सुचारु यातायात, अनुभवी डॉक्टरों एवं अस्पतालों, दवाइयों की सुविधा के साथ-साथ इलाज में आने वाला कम खर्च भी विदेशी मरीजों को आकर्षित करता है। लगभग पांच लाख से ज्यादा विदेशी मरीज प्रतिवर्ष भारत में इलाज कराने आते हैं। भारत सरकार द्वारा अपनी जनता के इलाज हेतु आयुष्मान भारत हेल्थ कार्ड जारी किया गया है जिसके तहत गैर-सरकारी अस्पतालों में इलाज कराने के लिए रु. 500000 तक प्रति व्यक्ति कार्ड की व्यवस्था की गयी है। उसी तर्ज पर पश्चिम बंगाल सरकार द्वारा स्वास्थ्य साथी कार्ड संचालित किया जा रहा है।

वैश्विक दवा उद्योग में भारत की भागीदारी लगभग 10 प्रतिशत तथा जेनेरिक दवा निर्यात के लिए 20 प्रतिशत है। भारत में दवा उद्योग में नई-नई कम्पनियां अपनी नई-नई तकनीकों के साथ उभर रही हैं। जिसके परिणामस्वरूप भारत को विश्व में एक विशेष स्थान प्राप्त हुआ है। कोरोना की दवा बनाने में भारत ने भी बढ़ चढ़ कर सहयोग प्रदान किया है। अनेक गरीब देशों में लोक कल्याण के लिए मुफ्त में दवाइयाँ उपलब्ध कराई गई हैं।

भारत के समक्ष स्वास्थ्य देखभाल एक महत्वपूर्ण प्रश्न है। अमर्त्य सेन के अनुसार, भारत की स्वास्थ्य देखभाल प्रणाली कैलिफोर्निया के एक द्वीप और उप-सहारा अफ्रीका के क्षेत्र का प्रतिनिधित्व करती है। वर्तमान में भारत में स्वास्थ्य सेवा के आधारभूत ढांचे में परिवर्तन की आवश्यकता है और इसमें भारत अथक प्रयास भी कर रहा है। महिलाएं इस क्षेत्र में आशाकर्मी के रूप में विशेष योगदान दे रही हैं। वर्तमान शिक्षा नीति में परिवर्तन ने भी विशेष योगदान दिया है जिसका उदाहरण नई-नई दवाइयों की खोज है। वर्तमान विश्व में जहां अधिकाधिक लोग धन अर्जन के पीछे लगे हैं और धन ही उनकी अंतिम इच्छा बन कर रह गई है, ऐसे में राष्ट्रपिता महात्मा गांधी के एक कथन को उद्धृत करना महत्वपूर्ण है - 'केवल स्वास्थ्य ही वास्तविक संपत्ति है'। अतः इस पर विचार कर जीवन संबंधी निर्णय लिए जाने चाहिए।



जितेन्द्र कुमार

सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

समय

मैं समय हूँ, सृष्टि के उत्थान, विकास और विनाश का एक मात्र साथी। एक ओर ब्रह्मांड के गर्भ में छुपे हुए अद्भुत रहस्य का गवाह, साथ ही साथ पृथ्वी के जीवन का आधार। जहाँ पृथ्वी पर अनेक जीव-जन्तु का जन्म, विकास और विनाश हुआ वहीं दूसरी ओर सबसे श्रेष्ठ रचना “मानव” एवं “मानव सभ्यता का गवाह हूँ”।

मनुष्य ने एक ओर जहाँ स्वयं को बचाये रखने के लिए पशुओं का शिकार किया, आग, पहिए का आविष्कार किया, वहीं कालांतर में मानव सभ्यता का विकास किया। इसके लिए उसने नदी, जंगल, पेड़-पौधे तथा अनेक जीव जन्तुओं के सहयोग से अपना विकास किया, साथ ही साथ अपने जीवन को मूल्यवान बनाया, परन्तु वह भूल गया कि सृष्टि के निर्माण के साथ-साथ उसका विनाश भी होना तय है तथा मनुष्य निरंतर उसकी ओर अग्रसर है। मनुष्य ने जंगलों की अंधाधुंध कटाई की, नदियों का रुख मोड़ा, उस पर बांध बनाकर कल-कारखानों का निर्माण किया। यातायात की सुगमता के लिए रेलगाड़ी, बसों, मोटर-कारों का आविष्कार किया तथा अपना जीवन आनंदमय व आकर्षक बनाया। यहाँ तक कि पृथ्वी के अलावा अंतरिक्ष में भी वर्चस्व साबित करने की दौड़ में लग गया। इसके लिए अनेक सैटेलाइटों, रॉकेटों, कृत्रिम उपग्रहों का निर्माण किया, परन्तु इससे होने वाले नुकसान को समझने में कुछ कसर रह गयी है। आज मनुष्य अपने आप से ही प्रतिस्पर्धा करने को आतुर हो गया है। मनुष्य जाति, धर्म, समाज क्षेत्र, शहर, देश-विदेश में बंट गया और खुद को श्रेष्ठ साबित करने की अंधाधुंध दौड़ में लग गया। एक देश दूसरे देश को कमतर करने की होड़ में शामिल हो गया है। इसके लिए उसने हानिकारक रासायनिक हथियारों का निर्माण किया है। यहां तक कि जैविक हथियारों का प्रयोग भी आरंभ कर दिया है। रूस-यूक्रेन युद्ध, इजराइल-तुर्की, अफगानिस्तान, इसके ज्वलंत उदाहरण हैं, जो किसी न किसी रूप में मानव द्वारा निर्मित समस्याओं का प्रतीक है। यही नहीं, हाल ही में वैश्विक महामारी कोविड-19 इसका एक ज्वलंत उदाहरण है जिसमें लाखों लोग काल के कपाल में समाहित हो गये और यह प्राकृतिक नहीं अपितु कृत्रिम मानव संहार था। अब मानव ने अपने मस्तिष्क का विकास कर रोबोट तथा कृत्रिम बुद्धिमत्ता का प्रयोग आरंभ कर दिया है जिसके चलते भविष्य में मनुष्य मनुष्य को नहीं पहचान पाएगा क्योंकि कृत्रिम बुद्धिमत्ता मनुष्य की तरह सोचेगी, समझेगी तथा व्यवहार करेगी। हाल ही में कृत्रिम बुद्धिमत्ता के आविष्कारक जॉन मैकार्थी ने आशंका व्यक्त की है कि यह विकास की सीढ़ी आखिरी सीढ़ी न हो, साथ-ही-साथ कार्बन उत्सर्जन में वृद्धि, समुद्र का बढ़ता जल स्तर, पृथ्वी का बढ़ता तापमान, असमय वर्षा और अंधाधुंध निर्माण प्रकृति का संतुलन ही खराब कर देगा जो मानव जीवन की समाप्ति का आधार न हो। अतः मैं ‘समय’ भयभीत हूँ कि कहीं विकास के पहिए के अंदर सृष्टि की श्रेष्ठ संरचना ‘मानव’ का अस्तित्व ही खतरे में न पड़ जाए जिसका गवाह मुझे ही बनना पड़ेगा।

“भाषा ही राष्ट्र का जीवन है।”

— पुरुषोत्तमदस टंडन



सोनु कुमार चौधरी
डी.ई.ओ.

अपना शहर 'बांका'

बांका बिहार राज्य में स्थित एक महत्वपूर्ण जिला है। यह शहर राजधानी पटना से करीब 270 किमी. दक्षिण में स्थित है। इस शहर को पर्यटन के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण स्थान मिला है। इस शहर के मुख्य आकर्षण केंद्र निम्नलिखित हैं-

मंदार पर्वत:- बिहार के बांका जिले के बौंसी-बाराहाट प्रखंड की सीमा में स्थित मंदार पर्वत विश्व-सृष्टि का एकमात्र मूक गवाह है। इतिहास में आर्य और अनार्य के बीच सौहार्द बनाने के लिए समुद्र मंथन किया गया था, जिसमें मंदार मथानी के रूप में प्रयुक्त हुआ। अपार घर्षण और पीड़ा झेलकर भी उसने सागर के गर्भ से चौदह महारत्न निकालकर मानव

कल्याण के लिए संसार को दिए। इसके शीर्ष पर भगवान मधुसूदन, मध्य में सिद्धसेनानी कामचारिणी, महालक्ष्मी, महाकाली और महासरस्वती अवस्थित हैं। पर्वत पर दुर्गम ऋषि-कुण्ड और गुफाएं हैं, जिसमें सप्तर्षियों का निवास स्थान है। मंदार पर्वत 750 फीट का सुडौल पर्वत है। इसमें पूर्व से पश्चिम की ओर अवरोही क्रम में कुल सात श्रृंखलाएं हैं। पर्वत के नीचे पूर्व की ओर एक पापहरणी नामक सरोवर है जिसका निर्माण राजा आदित्य सेन की पत्नी रानी कोण देवी ने अपने पति की चर्म-व्याधि से मुक्ति के उपरांत कराया था। इस तालाब के बीच में विष्णु भगवान एवं लक्ष्मी माता के मंदिर का निर्माण कराया गया है। माना जाता है कि इस सरोवर में स्नान करने से सारे कष्ट दूर हो जाते हैं। पर्वत पर चढ़ने के लिए सीढ़ियां बनाई गई हैं। मध्य पर्वत स्थित भगवान नरसिंह गुफा तक जाने के लिए 300 से अधिक सीढ़ियां बनी हुई हैं। इस सीढ़ी का निर्माण मौर्य काल के राजा उग्रभैरव ने कराया था। मकर संक्रांति के अवसर पर प्रत्येक वर्ष यहां करीब एक महीने के मेले (मंदार महोत्सव) का भी आयोजन किया जाता है। वैसे तो इस पर्वत पर भ्रमण करने के लिए साल भर देश-विदेश से अनेक सैलानियों का आना-जाना लगा रहता है, परंतु मकर संक्रांति पर इस पर्वत का कुछ अलग ही महत्व है। इस पर्वत की मथानी तक जाने के लिए हाल ही में रोप-वे का भी निर्माण कराया गया है, जिससे आसानी से पूरे पर्वत का भ्रमण किया जा सकता है।

चांदन डैम:- चांदन डैम बांका शहर के बौंसी से करीब 20 किमी. की दूरी पर लक्ष्मीपुर नामक गांव में स्थित है। इस डैम का निर्माण 1968 ई. में किया गया था। इस डैम की ऊंचाई 40.4 मीटर एवं लंबाई 1555 मीटर है। यह क्षेत्र प्राकृतिक दृष्टि से काफी सुंदर एवं हरियाली से पूर्ण है। डैम का निर्माण भी काफी बड़े क्षेत्रों में कराया गया है। यहां के आस-पास के क्षेत्र काफी हरे-भरे दिखते हैं। इस डैम के आस-पास घना जंगल एवं पहाड़ भी है। इस डैम के किनारे सुप्रसिद्ध नवोदय विद्यालय भी है। इस डैम से चांदन नदी का निर्माण होता है जो करीब 70 कि.मी. जाकर भागलपुर में गंगा नदी में मिल जाती है। इस स्थान पर भी हजारों पर्यटक आते हैं और यहां की सुंदरता का लुत्फ उठाते हैं। इस डैम में जमा पानी इलाके के किसानों के लिए काफी उपयोगी है। यह जलाशय जब ओवरफ्लो होकर बहता है तब बहुत ही सुंदर नजारा दिखता है।

ओढनी डैम:- जिला मुख्यालय से करीब 12 किमी. के दूरी पर स्थित ओढनी डैम बांका के एक महत्वपूर्ण पर्यटन स्थल के रूप में जाना जाता रहा है। इस डैम का निर्माण 2000 ई. में कराया गया था। इस डैम की ऊंचाई 23.77 मीटर एवं लंबाई 686 मीटर है। हाल ही में इस डैम में नौका विहार भी शुरू किया गया है जिसमें सैलानी नौका विहार का आनंद लेते हैं। इस डैम का नजारा काफी खूबसूरत है। इस डैम के पानी से हजारों किसान लाभान्वित होते हैं। इस डैम का पानी ओढनी नदी से होते हुए भागलपुर में गंगा नदी में मिल जाता है।

हनुमना डैम:- हनुमना डैम जिला मुख्यालय से करीब 45 किमी की दूरी पर स्थित है। इस डैम का निर्माण 1962 में किया गया था। इस डैम को बिहार का सबसे बड़ा डैम कहा जाता है। इस डैम का दृश्य काफी सुंदर है। इस डैम का पानी काफी दूर तक जाता है।

बिलासी डैम:- बिलासी बांध बांका जिले का एक प्रमुख स्थल है। बिलासी बांध बांका जिले के फुल्लीडुमर गांव में स्थित है। इस बांध का निर्माण 2001 ई. में किया गया था। इसकी उंचाई 19.97 मीटर एवं लंबाई 1698 मीटर है। यह बांध चारों तरफ पहाड़ियों से घिरा हुआ है। यहां पर आपको बड़ी-बड़ी चट्टानें देखने के लिए मिलती है। यहां पर शाम के समय सूर्यास्त का सुंदर दृश्य देखने को मिलता है।

बदुआ डैम:- बदुआ जलाशय बांका जिले में घूमने लायक एक मुख्य स्थल है। यह जलाशय बांका जिले के बिजीरवोखा में स्थित है। इस जलाशय का निर्माण 1969 ई. में किया गया था। इस जलाशय की उंचाई 56.66 मीटर एवं लंबाई 457.32 मीटर है। यह जलाशय भी पहाड़ी क्षेत्रों से घिरा है।

बेलहरना डैम:- यह डैम बांका जिले से करीब 35 किमी. दूरी पर स्थित है। इस डैम का निर्माण 1987 ई. में किया गया था। इस डैम की उंचाई 30 मीटर एवं लंबाई 411.58 मीटर है। इस डैम को बिहार का सबसे छोटा डैम कहा जाता है। इस डैम की आकृति अर्ध चंद्राकार है। इस डैम के आसपास काफी चट्टानें दिखाई देती हैं। यह डैम भी सिंचाई की दृष्टि से बनाया गया है।

इस प्रकार कह सकते हैं कि बांका जिला बिहार का एक महत्वपूर्ण जिला है।



मंदार पर्वत का दृश्य



अयन दास
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

जल संरक्षण

प्रकृति ने हमें कई सारे उपहार प्रदान किए हैं। इनमें से सबसे महत्वपूर्ण है जल। एक समय था जब हमारी पृथ्वी पर पर्याप्त मात्रा में जल उपलब्ध था लेकिन वर्तमान में भारी मात्रा में इसे नष्ट करके हमने जल की उपलब्धता पर संकट खड़ा कर दिया है। न केवल तालाब, नहर, नदी और महासागर अपितु भूमिगत जल स्तर भी बिगड़ चुका है।

यदि यह समस्या ऐसी ही बनी रही तो पानी बहुत ही कम मात्रा में बचेगा या फिर बिल्कुल समाप्त हो जायेगा और हमारे अस्तित्व पर संकट उत्पन्न हो जायेगा।

पानी की बर्बादी के कई प्रभाव हैं जैसे:-

- 1) पेय जल की दिक्कत
- 2) जल में रहने वाले जीवों के लिए खतरा
- 3) कृषि गतिविधियों में नुकसान
- 4) पर्यावरण असंतुलन।

जल संरक्षण सभी संस्थानों एवं नागरिकों की प्रथम प्राथमिकता होनी चाहिए। कुछ सुझाव:-

- 1) घरेलू काम-काज में पानी को सोच समझ कर खर्च करना चाहिए।
- 2) पेड़ों की कटाई कम करके वृक्षारोपण करना।
- 3) नदी एवं समुद्र के प्रदूषण को रोकना।
- 4) बिजली की बचत करना क्योंकि कई बिजली उत्पादन केंद्र जल द्वारा बिजली उत्पन्न करते हैं।

यह जानते हुए भी कि पानी बर्बाद करना बहुत बुरी बात है, हममें से बहुत कम लोग इसे गंभीरता से लेते हैं। इस विषय को लेकर लोगों के बीच जानकारी का आदान-प्रदान बहुत ही आवश्यक है, तभी भविष्य में इस गंभीर संकट को टाला जा सकता है।

भारत सरकार को जल संरक्षण हेतु कड़े नियम लागू करने चाहिए ताकि आम जनता इसके प्रति जागरूक हो और सतर्कता से जल का संरक्षण करे। इतना ही नहीं, हमें अपने बच्चों को भी छोटी उम्र से ही संरक्षण का महत्व समझाना होगा जिससे वे कम उम्र से ही पानी बर्बाद न करके उसे बचाने वाले कार्य करें एवं अपने दोस्तों में भी यह आदत डलवा सके और पृथ्वी को इस समस्या से लड़ने में मदद कर सकें।

“जीवन के छोटे से छोटे क्षेत्र में हिंदी अपना दायित्व निभाने में समर्थ है।”

- पुरुषोत्तमदास टंडन



ओम प्रकाश चौधरी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सरल जीवन

प्रकृति के कई रूप होते हैं - कभी तप्त गर्मी तो कभी वर्षा की बूंदों में लिपटी मिट्टी का एहसास इसी तरह मानव जीवन में भी कभी एकरूपता नहीं रहती है। ये निरंतर कुछ न कुछ दिखाता रहता है, कभी हमारे मन की तो कभी ठीक उलटा। अतः कुछ भी प्रिय या अप्रिय नहीं होता है, जो होता है वो बस है। उसका हो ना ही यथार्थ है। जैसे हमारे एक मित्र हैं जो बहुत ही जोशीले और अतरंगी किस्म के हैं। जीवन में घटित होने वाली छोटी-छोटी घटनाओं से भी हास्य रस पैदा कर देना उनके लिए मामूली-सी बात है। लेकिन इसका मतलब ये नहीं है कि वे बिल्कुल अवधूत हैं। जीवन के थपेड़ों ने उनको अपनी बाहों में लेकर बहुत कुछ सिखाया है जो हम जैसे इन्सानों को निराशा के दलदल में धकेल देते। परंतु उनकी बेफिक्री ही उनको महान बनाती है। इसका अभिप्राय ये बिल्कुल नहीं है कि उन्हें कष्ट नहीं है। उनको समझने के लिए चंद पंक्ति -

थोड़े थोड़े में
जीवन को जीना ही
है उनका आधार
बात बड़ी हो या छोटी

बातों ही बातों में
कर देते हैं शत्रु का संहार
प्रिय अप्रिय का
नहीं कोई मलाल
सोमरस या कोई रस
पर है उनका अधिकार

जब गाँव के घरों में टेलीविजन बहुत ही कम हुआ करते थे या नहीं के बराबर तब लोगों के अंदर उतनी बेचैनी नहीं थी जितनी अब है। तनाव मुक्त जीवन ही लोगों का आधार था। अब तो विडंबना यह है कि सब कुछ होते हुए भी बेचैनी बनी हुई है। जीवन को सरलता से नहीं जीया जाता बल्कि सुविधाओं का इतना जुगाड़ कर लिया है कि अब एक सरल जीवन की कल्पना ही की जा सकती है। उसी तरह मोबाइल का आगमन हमारे जीवन में जहां एक तरफ वरदान सिद्ध हुआ है, वहीं दूसरी तरफ उसने हमारे जीवन को मशीन बना दिया है। वो इस तरह कि हम मोबाइल के इतने शौकीन हो गये हैं कि बिना मोबाइल के जीवन की कल्पना करना ऐसा है जैसे बिन पानी सब सूना। घंटो मोबाइल के स्क्रीन पर समय बिताना हमारी कार्य क्षमता को तो प्रभावित कर ही रहा है, साथ ही साथ हमारे सामाजिक जीवन को भी समेटता जा रहा है। आज जहां हम ऊंची-ऊंची अट्टालिकाओं में एक घरोँदा खरीद कर गौरवान्वित हो रहे हैं, वहीं उसकी ई.एम.आई. हमें अपने बोझ तले जीने पर मजबूर कर देती है। अतः जीवन की सत्यता को पाने के लिए हम अपने जीवन को जितना सरल कर सके उतना ही ये हमें सत्यता का एहसास दिलाएगी।

मोह-भंग



रानी भगत
पत्नी- श्री प्रमोद कुमार दास
कनिष्ठ अनुवादक

‘मृत्यु अंत नहीं, जीवन की पूर्णता है’- जिसने भी यह बात कही है, बहुत खूब कही है। लेकिन बात यह है कि हम अपनी संवेदनाओं पर काबू नहीं पा सकते और इसका अफसोस करते रहते हैं कि वे सारी सुविधाएं और अपेक्षाएं जो उनके रहते हुए थी, अब वे नहीं रहेंगी। किसी के होने से ऐसा तो नहीं है कि हमेशा उसे स्पर्श किया जाए तभी उसकी मौजूदगी का एहसास हो; वह कुछ समय तक इतना दूर भी रह सकता है कि उसे स्पर्श कर पाना तो दूर, उसे देखने और सुनने के भी लाले पड़ जाते हैं। फिर भी यह मालूम रहता है कि वह है। एक उम्मीद बनी रहती है कि कभी न कभी मुलाकात होगी ही और यह उम्मीद ही हमारे खुश रहने के लिए काफी है।

कोई भी बात अंतिम नहीं होती, अंतिम बात के बाद भी बातें होती रहती हैं। इसलिए किसी भी घटना को अंतिम मान लेना बेवकूफी है। समय चक्र चलता रहता है और उसके अनुसार चीजें भी बदलती रहती हैं और प्रत्येक परिवर्तन के बाद कुछ नया होता रहता है। जो इस बात को नहीं मानता और वहीं ठहर जाता है, वो जड़ हो जाता है। समय हमारे अनुसार नहीं चल सकता है, हमें समय के अनुसार चलना होगा। जिस प्रकार हम किसी गतिशील ट्रेन पर चढ़ते हैं या फिर उससे उतरते हैं तो हमें भी उसी दिशा में दौड़ना पड़ता है अन्यथा हम गिर जाते हैं, उसी प्रकार हमें भी समय के साथ चलना चाहिए अन्यथा हम मुँह के बल गिरते हैं।

हम ऐसा कभी नहीं करते हैं कि गर्मी में स्वेटर, कंबल, रजाई इत्यादि का प्रयोग करें या फिर ठंड को इनके बिना गुजार दें या वर्षा में छाता, रेनकोट आदि का प्रयोग नहीं करते हों। अर्थात् एक ही इंसान अलग-अलग ऋतु में अलग-अलग कपड़ों का प्रयोग करता है तो फिर वह अलग अलग परिस्थिति में अर्थात् सुख/दुःख के समय में उसी के अनुसार स्वयं को क्यों नहीं ढाल पाता है? क्यों किसी और की जरूरत आ पड़ती है?

हमें अपने अंदर ही इस भाव को पैदा करना होगा कि सब कुछ नश्वर है, सब कुछ मिट जाना है। हमने जो कार्य किया वो और उसका श्रेय भी समाप्त हो जाएगा क्योंकि इतने बड़े-बड़े राजाओं- महाराजाओं द्वारा कायम किए गए साम्राज्य का भी अंत हो गया है। जब वो खुद को और अपने साम्राज्य को भी नहीं बचा पाए तो फिर हम और आप क्या चीज हैं। जीवन जीने के लिए जब तक मूलभूत सुविधाएं मिल रही हैं, सांस ले रहे हैं, खाना खा रहे हैं तब तक हम जीवित हैं और तब तक अपनी काबिलियत के अनुसार सब कुछ कर सकते हैं। किसी के भी सामने हाथ फैलाने की कोई आवश्यकता नहीं है। परिस्थितियों को न समझने और स्वीकार न करने से ही निराशा और हताशा होती है। अतः किसी भी बात के लिए स्वयं को कोसना, स्वयं को तुच्छ समझना, स्वयं को हीन भावना से ग्रस्त कर लेना, हतोत्साहित हो कर उम्मीद मार कर बैठ जाना किसी भी रूप में ठीक नहीं है।

किसी भी रात को अंतिम रात मान लेना ठीक नहीं है क्योंकि हर रात के बाद सूरज निकलता है, सवेरा होता है। जब इस परिवर्तन को होते हुए हम देख रहे हैं और इस परिवर्तन को हम स्वीकार कर रहे हैं तो इस बदलाव को भी स्वीकार कर लेना चाहिए कि परिस्थिति, इंसान, साधन, रुचि, आर्थिक-सामाजिक-राजनीतिक स्थिति, व्यक्ति विशेष की मनोदशा, इत्यादि में भी बदलाव होता है।

जब एक ही कपड़े को हम आजीवन नहीं पहनते हैं, चाहे वह कितना भी सुंदर और प्रिय क्यों न हो; एक ही तरह के खाद्य पदार्थ को आजीवन नहीं खाते हैं, चाहे वह कितना भी स्वादिष्ट और पोषक तत्व से परिपूर्ण क्यों न हो; जब हम स्वयं ही अपने खान-पान और पहनावे पर हमेशा कायम नहीं रहते; हम अनजाने रूप में हर रोज बदल रहे हैं तो फिर किस मुंह से यह कह सकते हैं कि हम नहीं बदलते हैं और जब हम खुद को बदलते हुए देख रहे हैं तो फिर इसे मानसिक रूप से स्वीकार क्यों नहीं कर लेते हैं कि सब कुछ का बदलना स्वाभाविक है और यह एक नियम है जो निरंतर चलता ही रहता है।

इसलिए किसी भी व्यक्ति, वस्तु, रुचि, दशा, मनोदशा इत्यादि के बदलने पर दुःखी नहीं होना चाहिए और उस बदलाव को स्वीकार करके स्वयं में भी उसी के अनुसार बदलाव कर स्थिति के अनुसार बर्ताव करना उचित है।



अर्णव पॉल
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

बचपन और किशोरावस्था में मोबाइल फोन की भूमिका

आज मोबाइल फोन हमारे दैनिक जीवन से अभिन्न रूप से जुड़ा हुआ है। हम मोबाइल के बिना कुछ मिनटों की कल्पना भी नहीं कर सकते। मोबाइल फोन के फायदे और नुकसान के बारे में कई लेख लिखे गए हैं। आज हम बचपन और किशोरावस्था में मोबाइल फोन के प्रभावों पर चर्चा करेंगे।

आज के समाज में ज्यादातर मामलों में देखा जाता है कि पति-पत्नी दोनों नौकरी करते हैं। ऐसे में व्यस्त जिंदगी में समय की कमी के कारण वे अपने बच्चों को पर्याप्त समय नहीं दे पाते हैं एवं जितना भी खाली समय मिल पाता है वो घर के विभिन्न कार्यों में बीत जाता है। फलस्वरूप वे बच्चों को शांत रखने के लिए उनके हाथ में मोबाइल फोन थमा देते हैं।

आजकल का व्यस्त जीवन माता-पिता को अपने बच्चों से दूर कर रहा है और साथ ही संयुक्त परिवार भी एकल परिवारों में बदल रहे हैं। पहले, बच्चे अपने दादा-दादी या परिवार के किसी वरिष्ठ सदस्य से परियों, भूत-प्रेत की कहानियाँ या कोई अन्य कहानियाँ सुनने में बहुत समय बिताते थे। लेकिन अब परिवार इतने छोटे हो गए हैं कि वो लोग आज मुश्किल से ही मिल पाते हैं, इसलिए कहानियाँ सुनने की जगह मोबाइल फोन ने ले ली है। प्रौद्योगिकी बचपन को लील रही है। बचपन मोबाइल में खो गया है। आज सामान्य विचार शक्ति का भी हास हो रहा है।

बचपन के बाद किशोरावस्था आती है। किशोरावस्था मतलब सबसे पहले हमारे दिमाग में मैदान अर्थात खेल-कूद एवं व्यायम का ख्याल आता है। स्कूल से वापस आकर दोस्तों के साथ मैदान में खेलने जाना एक नशे जैसा था अथवा कहानियों की किताबों में डूबे रहना एक आदत-सी थी। लेकिन अब सब लड़के-लड़कियों को पूरे दिन में समय ही नहीं मिल पाता है। रोज स्कूल से वापस आकर प्राइवेट ट्यूशन के साथ-साथ बहुत सारे दूसरे विषयों की कोचिंग के कारण उनको व्यक्तिगत समय काफी कम मिलता है, और जितना समय मिलता है वो मोबाइल में व्यतीत हो जाता है। फलस्वरूप किताबें पढ़ना, चित्रकारी, कविता-पाठ, खेल-कूद, व्यायाम, इत्यादि विषय धीरे-धीरे किशोर-जीवन से विलुप्त होते जा रहे हैं। उनके स्थान पर मोबाइल ने घुसपैठ ली है।

अभी तक केवल बचपन और किशोरावस्था में मोबाइल फोन के नकारात्मक प्रभाव पर ही चर्चा हुई है। परंतु इसके कुछ सकारात्मक प्रभाव भी हैं। जैसे मोबाइल के कारण पढ़ाई के स्तर में बदलाव आया है। काफी नई जानकारी आजकल मिनटों में हमारे सामने होती है। किशोरावस्था की बहुत सारी प्रतिभाओं को मोबाइल के माध्यम से ही पहचान प्राप्त होती है। मोबाइल इंटरनेट के माध्यम से ही लड़के-लड़कियाँ अपनी प्रतिभा अपलोड करते हैं एवं उसके क्षण-भर में वो पूरे देश में फैल जाता है तथा इसी के बदौलत काफी लड़के-लड़कियाँ भीड़ में से चमक उठते हैं।

अंत में यह कहा जा सकता है कि यदि मोबाइल का उपयोग ठीक तरीके से नियंत्रण के साथ किया जाए तो वर्तमान किशोर-युवा पीढ़ी मोबाइल के भयंकर प्रभावों से मुक्त हो पाएगी।



चंदन बनर्जी
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

मध्य जीवन की संकट

◆ मध्य जीवन संकट क्या है?

‘मध्य जीवन संकट’ की परिभाषा ‘जीवन में परिवर्तन की अवधि है’, जहां कोई व्यक्ति अपनी पहचान और आत्मविश्वास के साथ संघर्ष करता है। देखा गया है, यह 40 वर्ष से 60 वर्ष की आयु के बीच होता है। यह कोई विकार नहीं है, बल्कि मुख्यतः मनोवैज्ञानिक है। ऐसा तब होता है जब ‘अपनी वर्तमान स्थिति’ की तुलना ‘मुझे कहाँ होना चाहिए’ के साथ की जाती है। जीवन के इस अध्याय में आकर ‘जीवन’ के मतलब और उद्देश्य को वो पुनःपरिभाषित तथा उसका पुनःमूल्यांकन करते हैं, जो उनके पिछले मूल्यांकन से सम्पूर्ण अलग होता है। हममें से कुछ लोग इन वर्षों में प्रवेश करते ही नए तनावों का सामना करते हैं। वे अपने करियर पथ पर पछतावा करना शुरू कर सकते हैं और स्वयं द्वारा लिए गए वित्तीय निर्णयों में फंसा हुआ महसूस कर सकते हैं। इस समय, अपनी शारीरिक क्षमताओं में गिरावट महसूस की जाती है और जिम्मेदारियों में वृद्धि तथा बच्चों के अधिक स्वतंत्र होने से अत्यधिक चिंता भी देखी जाती है।

◆ मुझे कैसे पता चलेगा कि मैं मध्य जीवन संकट का सामना कर रहा हूँ?

यह एक तनावपूर्ण और भ्रमित करने वाला समय हो सकता है। लेकिन मध्य जीवन विकास, स्थिरता और खुशी का समय भी हो सकता है। यह देखनेवालों की नजर पर निर्भर करता है। इस समय के संकट के संकेतों को समझने से आपको अपने जीवन में आने वाले सामान्य तनावों से निपटने के तरीकों की पहचान करने और आगे बढ़ने के तरीके खोजने में मदद मिल सकती है। मध्य जीवन संकट के सामान्य लक्षण (संकेत) कुछ इस प्रकार हैं:

- उदासी या आत्मविश्वास की कमी महसूस करना
- जीवन में अर्थ या उद्देश्य की हानि
- विषाद की अनुभूति
- अधूरापन महसूस होना
- अतीत के बारे में अत्यधिक सोचना
- आवेगपूर्ण कार्य करना
- लगातार अपनी तुलना दूसरों से करना
- पछतावे की भावना
- अधिक क्रोधित होना या चिड़चिड़ापन

इसके अलावा निम्नवत लक्षण भी देखे जाते हैं:

◆ गहरा दुःख और पछतावा महसूस करना : शायद आप रिश्तों या रोजगार में छूटे हुए अवसरों के बारे में सोच रहे हों। इससे वर्तमान के प्रति गहरी नाखुशी और आपके जीवन के अच्छे पहलुओं को नजरअंदाज करने की प्रवृत्ति पैदा होती है।

- ◆ **बेचैनी और दिवास्वप्न देखना :** आप अपनी दैनिक दिनचर्या से थकावट महसूस कर सकते हैं, चाहे उसमें आपका कार्य शेड्यूल या अन्य जिम्मेदारियाँ शामिल हों। आप इस बारे में सोचना शुरू कर सकते हैं कि यदि अपने अलग व्यवसायिक पथ अपनाया होता या किसी अलग साथी से शादी की होती, तो जीवन कैसा होता।
 - ◆ **चिड़चिड़ापन :** ऐसा महसूस करना कि आपके पिछले निर्णयों ने आपको जकड़ लिया है या आपकी क्षमता सीमित कर दी है। आप छोटी-मोटी गलतियों के लिए भी अपने जीवनसाथी, बूढ़े माता-पिता या करीबी दोस्तों से नाराज़ हो सकते हैं।
 - ◆ **उदासी :** वर्तमान की सकारात्मकताओं पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय, आप अपनी पिछली जीवनशैली को आदर्श मानना शुरू कर देते हैं। शायद आपको याद हो कि पिछले वर्षों में आप कितने एथलेटिक हुआ करते थे या आपका सामाजिक दायरा कितना विस्तृत था।
 - ◆ **आवेगपूर्ण और भोगवादी व्यवहार :** असंतोष की भावनाओं से निपटने के लिए आप बड़ी खरीदारी करना शुरू कर सकते हैं या शराब और नशीली दवाओं का उपयोग बढ़ा सकते हैं। परंतु इनमें से कोई भी व्यवहार आपको पूरी तरह से संतुष्ट नहीं कर पाएगा, लेकिन आपके स्वास्थ्य पर बुरा असर जरूर छोड़ेगा।
 - ◆ **शारीरिक बदलाव:** हो सकता है कि आप उतने चंचल न हों जितने पहले हुआ करते थे। आप बीमारियों के प्रति अधिक संवेदनशील हो सकते हैं या उच्च रक्तचाप जैसी स्थिति से पीड़ित हो सकते हैं। ये शारीरिक परिवर्तन आपको भविष्य के प्रति निराश या भयभीत कर सकते हैं।
 - ◆ **पारिवारिक गतिशीलता में बदलाव:** बूढ़े माता-पिता की देखभाल करना, अपने बच्चों की उच्चशिक्षा या नौकरी के लिए घर से बाहर जाने से जुड़ी दुःख की भावना पर जब आप अपनी भूमिका का पुनर्मूल्यांकन करते हैं, तो आपको अकेलापन या खालीपन अनुभव हो सकता है। अपने माता-पिता के साथ संबंधों में भी बदलाव (गिरावट) अनुभव कर सकते हैं।
 - ◆ **तलाक एक और घटना है जो मध्य जीवन की उथल-पुथल में योगदान दे सकती है।** लंबे समय के साथी से अलग होने का दुःख, क्रोध और भ्रम जैसी परस्पर विरोधी भावनाएँ पैदा हो सकती हैं। यदि आपके बच्चे हैं, तो तलाक आपके परिवार की गतिशीलता को भी जटिल बना सकता है।
 - ◆ **करियर में बदलाव :** इस उम्र में आप अधिक वरिष्ठ पद तक पहुँच सकते हैं। भले ही वो पद उच्च वेतन प्रदान करते हों, पर नई और बढ़ती जिम्मेदारियाँ आपके जीवन में अधिक तनाव भी लाएगा।
 - ◆ **वित्तीय स्थिति में बदलाव :** बच्चे की उच्चशिक्षा और मेडिकल के बढ़ते खर्चों से आपको लग सकता है कि आपको अधिक सुरक्षित होना चाहिए था।
 - ◆ इसी उम्र में हार्मोनल बदलाव के कारण हमारे व्यवहार और सेक्स लाइफ में बदलाव देखा जाता है।
 - ◆ मध्य जीवन संकट से कैसे निपटे?
1. **परिवर्तन स्वीकार करें:** परिवर्तन अपरिहार्य है और मध्य वयस्कता में संतुष्टि पाने के लिए इसके साथ ताल-मेल बनाना महत्वपूर्ण है। जीवन के प्रति एक अनुकूली दृष्टिकोण आपको परिवर्तनों के साथ तालमेल बिठाने में मदद करेगा। यदि आप विशेष रूप से नकारात्मक चीजों पर ध्यान केंद्रित करते हैं, तो आपको मध्य जीवन में नाखुश होने के कई कारण मिलेंगे। लेकिन याद रखें कि जीवन का हर पड़ाव, अपने साथ उतार-चढ़ाव लेकर आता है। अपना ध्यान सकारात्मक पहलुओं पर केंद्रित करें। ऐसे समझौते खोजने के लिए उनके साथ काम करें जो आप के लिए आरामदायक हों।
 2. **अपनी भावनाओं को स्वीकार करें:** अपनी भावनाओं को दबाने से तनाव बढ़ सकता है। अपनी भावनाओं को दफनाने के बजाय, उन्हें संसाधित करने के तरीके खोजें। एक भरोसेमंद दोस्त भावनाओं की निकासी के रूप में भी काम कर सकता

है। उन परिस्थितियों को पहचानने और स्वीकार करें जो आपके नियंत्रण के बाहर हैं। यदि आप किसी स्थिति से तनावग्रस्त महसूस करते हैं, तो सवाल करें कि क्या आप इसे बदलने के लिए कुछ कर सकते हैं? जब आशावादी दृष्टि से देखा जाए, तो असफलताएँ सीखने और बढ़ने का अवसर हो सकती हैं।

3. **अपनी सीमाओं को स्वीकार करें और अपना ध्यान उन चीजों तक सीमित रखने का प्रयास करें जो आपके नियंत्रण में हैं।** उदाहरण के लिए, आप 'आपके बच्चे अधिक स्वतंत्र हो रहे हैं और घर से दूर जा रहे हैं' इस तथ्य पर ध्यान केंद्रित करने के बजाय 'अपने सामाजिक दायरे का विस्तार करने के तरीकों' पर विचार करें। अपने पछतावे के बजाय अपने द्वारा लिए गए बुद्धिपूर्ण निर्णयों और किए गए कार्यों पर विचार करें। असफलताओं को 'विकास के अवसर' के रूप में पुनःपरिभाषित करें। नई स्थितियों में धीरे से बड़े और बड़ी चुनौतियों को छोटे-छोटे कदमों में तोड़ें।
4. **नवीन उद्देश्य से आगे बढ़ें:** 'आपके सर्वोत्तम वर्ष आपके पीछे हैं' यह भावना आकर्षक हो सकती है, पर उसका सच होना जरूरी नहीं है। मध्य जीवन और उसके बाद का अर्थ खोजने तथा बीते वर्षों के साथ उसकी तुलना के लिए कुछ नया आजमाएं। किसी नए शौक जैसे 'फोटोग्राफी' या 'रचनात्मक लेखन' या 'किसी विदेशी भाषा की कक्षा में भर्ती हो कर स्वयं को चुनौती देना' के साथ आगे बढ़ें। ऐसा करने से आपका दिमाग तेज रहेगा, आपका सामाजिक दायरा बढ़ेगा और आपके जीवन को एक नया उद्देश्य मिलेगा।
5. **पुराने हितों को संलग्न करें:** पिछली रुचियों और उपेक्षित शौकों पर विचार करने के लिए कुछ समय निकालें। हो सकता है कि आप अभिनय, पेंटिंग, बॉलिंग या किसी अन्य गतिविधि में वापस आना चाहें जिसका आप आनंद लेते थे। यह करने से, आपका आत्म-सम्मान बढ़ेगा और नए दोस्तों से मिलने का एक अच्छा मौका भी मिलेगा।
6. **सामुदायिक गतिविधियों को अपनाएं:** स्वयंसेवा आपके जीवन को अर्थ देने, खुशियाँ बढ़ाने और मध्य जीवन के मानसिक स्वास्थ्य में सुधार करने का तरीका है। आप किसी युवा कार्यक्रम जैसे सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन में मार्गदर्शन करने का निर्णय ले सकते हैं।
7. **स्वयं की देखभाल को प्राथमिकता दें:** मध्य आयु संभवतः आपके शरीर, नींद की आदतों और भोजन के साथ संबंधों में बदलाव लाएगी। हो सकता है कि आपको सोने या एक ही गति से दौड़ने में कठिनाई हो। इन परिवर्तनों से निराश होने के बजाय स्वस्थ आदतों को विकसित करने और बनाए रखने के लिए थोड़ा अतिरिक्त समय समर्पित करना महत्वपूर्ण है। यथार्थवादी व्यायाम का लक्ष्य निर्धारित करें। यदि आप कभी बहुत सक्रिय व्यक्ति नहीं थे, तो धीमी शुरुआत करें और धीरे-धीरे अपने वर्कआउट की तीव्रता बढ़ाएं। अपनी वर्तमान क्षमताओं की तुलना अपनी पिछली क्षमताओं से करने की आदत न डालें। इसके बजाय, व्यायाम के लाभ प्राप्त करने पर ध्यान केंद्रित करें।
8. **अपने आहार का पुनर्मूल्यांकन करें:** जैसे-जैसे आप मध्य जीवन में प्रवेश करते हैं, खाने की बुरी आदतों को स्वस्थ विकल्पों से बदलना पहले से कहीं अधिक महत्वपूर्ण हो जाता है। हड्डियों और मांसपेशियों को मजबूत बनाए रखने के लिए कैल्शियम और प्रोटीन के स्वस्थ स्रोतों की तलाश करें। भोजन के साथ अपने संबंध के प्रति सचेत रहें।
9. **पर्याप्त नींद:** स्वास्थ्य स्थितियाँ, हार्मोनल परिवर्तन और दैनिक तनाव के कारण हर रात अनुशंसित 7 से 9 घंटे की नींद लेना कठिन हो सकता है। लेकिन इसके कारण स्वयं को प्रयास करने से नहीं रोकना चाहिए। अपने शयनकक्ष में अंधेरा रखें और उसको ठंडा एवं शांत रखें। सोने से पहले किताब पढ़ना या स्नान करना, जो आपके लिए सबसे अच्छा काम करता है, का प्रयोग करें।
10. **मध्य जीवन संकट का सामना कर रहे किसी व्यक्ति की मदद करें:** हर किसी को मध्य जीवन संकट का अनुभव नहीं होता है, लेकिन जो लोग इससे निपटते हैं, वो इससे जूझ रहे अन्य लोगों को भावनात्मक समर्थन दे सकते हैं। यह सब न

केवल उन्हें वर्तमान संकट से निपटने में मदद करेगा, बल्कि उन्हें बाद में जीवन में संतुष्टि पाने में भी मदद करेगा। बिना निर्णय किए सुनें और एक सक्रिय श्रोता बनें। लेकिन उनकी समस्याओं को हल करने के लिए दबाव महसूस न करें।

11. **अवसाद के लक्षणों पर नजर रखें:** मध्य जीवन संकट और अवसाद के कुछ सामान्य लक्षण हैं, जिनमें ध्यान केंद्रित करने में कठिनाई, अनिद्रा, चिड़चिड़ापन और लापरवाह व्यवहार शामिल हैं। यदि लक्षण लगातार बने रहते हैं और हर दिन दिखाई देते हैं, तो यह अवसाद होने की अधिक संभावना पैदा करता है। साथ में अधिक समय बिताएं, जब संभव हो, तो अपने साथी की भावनाओं के साथ जुड़ने का प्रयास करें। अपने रिश्ते में संभावित बदलावों के प्रति ग्रहणशील रहें। अपने जीवन-साथी का उचित सम्मान करें। उनकी सफलता की कामना करें और प्रशंसा व्यक्त करें।

ऊपर दिये गए व्याख्यान से यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि हम सबमें कुछ खूबियाँ और कुछ खामियाँ हैं, जिसमें से हमें खूबियाँ की और ध्यान देना है, जो हमें खुशी की ओर ले जा सकता है। योगा और प्राणायाम का नियमित अभ्यास हमारे जीवन-दर्शन को नियंत्रित तथा सकारात्मक दिशा दे सकता है और आत्मतुष्टि एवं असंतुष्टि से मुक्ति दे सकता है। दुख-दर्द दबाने से और खुशियाँ बांटने से बढ़ती हैं। जीवन की खुशियों का सही तरह से उपभोग करने के लिए और व्यस्त जीवन से बीच-बीच में छुटकारा लेने के लिए, नियमित भ्रमण का अभ्यास करें। ‘सभी बड़े और बुजुर्गों से अच्छा व्यवहार’ करें। हमें बच्चों के सामने ऐसा उदाहरण रखना है, कि वो भी अपना ध्यान रखें, दूसरों की मदद करें और मध्य जीवन के संकट एवं उसके उपायों के प्रति सचेत रहें। आपकी भविष्य की खुशी आपकी सोच, आपके कर्म और आज के निर्णयों पर निर्भर करेगी।

“राष्ट्रीयता का भाषा और साहित्य के साथ बहुत ही घनिष्ठ
और गहरा संबंध है।”

- डॉ. राजेन्द्र प्रसाद



चंदन कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

मेरी मंजिल

तुझे पाने की ख्वाहिश,
इस दिल में कल भी थी,
तुझे छू लेने का एहसास,
इस दिल में आज भी है।

तू रूठी है मुझसे,
न जाने किस जमाने से मगर,
तुझे मनाकर हासिल करने का वो जज्बा,
इस दिल में आज भी है।

माना कि कुछ टूटे हैं,
कुछ पीछे छूटे हैं ख्वाब मेरे,
पर उन ख्वाबों की फेहरिस्त में,
शुमार तेरा नाम आज भी है।

ये सच है कि डगर मुश्किल है,
तुझ तक पहुंचने की, फिर भी,
तुझे अपनी पलकों पे सजाने का वो हौंसला,
इस दिल में आज भी है।

क्या हुआ लोगों ने साथ छोड़ा,
तुझसे दूर करने को मुझे,
तुझे अकेले ही हासिल करने का मगरूर,
इस दिल में आज भी है।

तुम बनके मोती फिर से,
सीप में चले गये हो तो क्या हुआ,
तुझे समंदर की गहराइयों से,
निकाल लाने का वो माद्दा,
इस दिल में आज भी है।

कभी किरण बनकर बिखरी तू,
कभी घटाएँ बनकर बरसी तू,
चाहे जिस रूप में भी आ के मिल,
कि तेरे दीदार को तरस रहे,
मेरे नयन आज भी हैं।

मेरी नींदों में आती है,
मेरे ख्वाबों को चुराती है तू,
आ हकीकत में कुछ पल गुजार,
ये गुजारिश तुझसे कल भी थी,
ये गुजारिश तुझसे आज भी है।

तुझे पाने की ख्वाहिश,
इस दिल में कल भी थी,
तुझे छू लेने का एहसास,
इस दिल में आज भी है।



विनय कुमार मेहता

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

चलो, कुछ कर लो

उठो, इधर-उधर देखो
दुनिया उर्जावान नजर आयेगी,
तुम भी खुद को उस उर्जा से भर लो
चलो, कुछ कर लो।

किया तो बहुत है तुमने,
पर वो इतिहास बन गये।
अभी-अभी जो किया है,
वो खट्टा-मीठा एहसास बन गये।
क्यों छोड़ दिया है खुद को
उस व्यवस्था के सहारे,
जो खुद में उपहास बन गये।
उठो, इधर-उधर देखो
और खुद में वो नजर भर लो
दुनिया उर्जावान नजर आयेगी
चलो, कुछ कर लो।

उम्मीदें है तुमसे व्यवस्था में जान भरने की,
उम्मीदें है व्यवस्था को तुमसे, कुछ कर गुजरने की
फिर उलझन तुम पे क्यों भारी है
जब तुमको कुछ करने की बारी है।
उठो, इधर-उधर देखो
अपनी उलझनों में खोये हो,
आँखें खुली है मगर
एक अजीब-सी नींद में सोये हो,

दुनिया तरोताजा नजर आयेगी
तुम भी दिलो-दिमाग में वो ताजगी भर लो
चलो, कुछ कर लो।

पता है हमें तुम काहिल नहीं हो,
पता है हमें तुम कायर नहीं हो,
बस आलस की छाँव तुम पे पड़ी है
पर आगे तो देखो, एक जीवन-ज्योति खड़ी है।
फिर उलझन में क्यों खुद को लिटाए पड़े हो
उठो, इधर-उधर देखो
दुनिया उर्जावान नजर आयेगी
तुम भी उर्जावान खुद को इस कदर कर लो,
चलो, कुछ कर लो।

कुछ ऐसे भी हैं, कुछ वैसे भी हैं
पता है? कुछ कैसे-कैसे भी हैं
उन्हें भी साथ ले लो चाहे जैसे भी हैं।
क्यों पीछे खड़े हो कर्तव्य की कतार में
जो ठिठोले बनाती तुम्हारी इस संसार में।
आगे बढ़ो और इधर-उधर देखो
दुनिया चलायमान नजर आयेगी
तुम भी उस 'चाल' को हमसफर कर लो,
चलो, कुछ कर लो।



आर्य कुमार
सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी

न जाने क्यों घर जाने को जी करता है

तेरी गोद में सिर रखकर सो जाने को जी करता है माँ,
लौटा हूँ आज ही घर से, न जाने फिर क्यों घर जाने को जी
करता है माँ।

हो रही है बारिश सुबह से आज शहर में,
तेरे हाथों के बने पकोड़े खाने को जी करता है माँ,
न जाने फिर क्यों घर जाने को जी करता है माँ।

है ए.सी. की ठंडक मेरे चारों ओर,
फिर भी न जाने क्यों

तेरी आँचल के छाँव के तले आने को दिल करता है माँ,
लौटा हूँ आज ही घर से, न जाने फिर क्यों घर जाने को जी
करता है माँ।

हो गया हूँ बड़ा, चोट नहीं लगती है अब तन पर,
फिर भी तेरे हाथों से मार खाने को जी करता है माँ,
न जाने फिर क्यों घर जाने को जी करता है माँ।

चलने को बाइक, कार सब है मेरे पास,
फिर भी तेरी उँगली पकड़ कर गिर जाने को जी करता है माँ,
लौटा हूँ आज ही घर से, न जाने फिर क्यों घर जाने को जी
करता है माँ।

मिलती है सारी सुविधाएँ सी.जी.एच.एस., मेडिकल क्लेम
की,

फिर भी तेरे हाथों से मरहम लगवाने को जी करता है माँ।

न जाने फिर क्यों घर जाने को जी करता है माँ।

है अच्छी खासी सैलरी मेरी, पैसे भी हैं मेरे बैंक अकाउंट में
फिर भी तेरी पल्लू के कोने में बंधे सिक्कों को चुराने का मन
करता है माँ।

लौटा हूँ आज ही घर से, न जाने फिर क्यों घर जाने को जी
करता है माँ।

खाने को हैं बहुत सारे पकवान मेरे पास
फिर भी तेरे हाथों से दाल-भात का निवाला खाने को जी
करता है माँ,

न जाने फिर क्यों घर जाने को जी करता है माँ।
नहीं बहती है अब नाक मेरी, रूमाल भी है अब साथ में,
फिर भी तेरी आँचल में नाक पोंछने को जी करता है माँ।
न जाने फिर क्यों घर जाने को जी करता है माँ।

हैं क्रीम सारी लगाने को मेरे पास,
फिर भी तुझसे ही पाउडर लगवाने और बालों को झरवाने को
दिल करता है माँ,

तेरी गोद में सिर रखकर फिर सो जाने को जी करता है माँ,
लौटा हूँ आज ही घर से, न जाने फिर क्यों घर जाने को जी
करता है माँ।



सुरजीत घोष
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

हकीकत

सपने में देखा एक सपना,
 हो गई उनसे मेरी शादी
 भूतपूर्व प्रेमिका हो कर अपनी,
 क्या गुल खिलायी शहजादी
 सपने में सवेरे बर्तन धुलवायें,
 नाश्ता बनवाया फिर सबका
 सबकुछ एक जैसा चल रहा था,
 अचानक कानों में लगा झटका
 पड़ोस की भाभी खुशी-खुशी,
 घूमने चली राजस्थान
 मुझे घूमने में दिलचस्पी नहीं,
 तो घर बन गया पाकिस्तान
 अचानक मीठी-सी मुस्कान से,
 हमको जबरदस्त फसाया
 खतरों की सीमा तोड़ करीब आकर,
 प्यार से दिल को बहलाया
 बोली, मेरा पति सबसे अच्छा,
 घर में स्वर्ग बसाते हैं
 मायके से सबको बुलाकर,
 थोड़ा उत्सव मनाते हैं
 बुढ़ी आई बुढ़ा आया,
 साथ में बहू-बेटा लाया
 ए.सी. रूम में पधार गए,
 सिवाए बालकनी, हर जगह छाए
 रात का खाना कैसे बनाई,
 चिकेन भरता साथ में लच्छा

सपनों की बहू कितनी अच्छी,
 रसोई भी साफ, स्वाद भी अच्छा
 स्वाद का राज पता चला,
 जब धो रहा था मैं बर्तन
 साफ रसोई क्यों? समझा तब,
 जब हुए प्लास्टिक कंटेनर के दर्शन
 अगले दिन करवाचौथ की रस्म थी,
 चलनी से मैंने गलती से आटा छाना
 पड़ी है मुझको बहुत सी गाली,
 बिस्तर खो चुका था, बदलनेवाली थी पनाह
 बालकनी बड़ी अच्छी थी,
 लग रहा था अपना घर
 अचानक गरम बारिश की बूंदें,
 पड़ी आकर मेरे मुंह पर
 नींद टूटी तो सामने देखा,
 वही पुरानी सात फेरे वाली
 छिड़क रही थी आंख में पानी,
 बोली, चाय अभी तक क्यों न मिली?
 सात जनम का वादा, बहुत ज्यादा,
 चाहता हूँ छह जनम से छुटकारा
 आजादी का स्वाद भी चख लूं
 क्योंकि 'जिंदगी जरूर मिलेगी दोबारा'



राजीव गिरि

आंकड़ा प्रविष्टक

दायरा

वक्त के दायरे में चीजें बदल रही हैं।
हम-तुम हर रिश्ता बदल रहा है।
जो था वो गुम है, जो है वो पता नहीं
मैं जानता हूँ मुश्किल होता है एक-सा रहना,
सबकी सुनना और सबको अपना कहना,
पर अब ये मिलना भी क्या मिलना है?
जहां मुलाकातें फीकी हैं और बातों में सूनापन है
बहुत कुछ कहने और सुनने के बीच खो जाता है
और शब्दों के बीच का अंतराल बढ़ता ही जाता है,
कई बातें होठों तक आकर वापस लौट जाती हैं
फिर खामोशियों के घेरे में सब कुछ खो जाता है,
बातें अर्थहीन और ये रिश्ता बेबुनियादी लगता है
ऐसे में आज और अतीत सब धुंधला प्रतीत होता है
मैं ये सोचता हूँ क्या ये तुम्हारे साथ भी होता है ?



देवाशीष मंडल

सहायक पर्यवेक्षक

बसेरा

घर से मीलों दूर, घर ढूँढ़ रहा हूँ
सूरज की तपन बढ़ गई, छाँव ढूँढ़ रहा हूँ,
अनजाने शहर में, अपना ढूँढ़ रहा हूँ
तिनका-तिनका जोड़, सपना बुन रहा हूँ
ठौर की तलाश में, उत्तर-दक्षिण घूम रहा साथ
बसेरा बनाने की ललक में, दिन-रात भूल रहा हूँ,
मिट्टी की सलाह से, किनारा ढूँढ़ रहा हूँ
तिनका-तिनका जोड़, सपना बुन रहा हूँ
महल न सही, महल जैसा ढूँढ़ रहा हूँ
चादर में आ जाए मेरी, वो कदम ढूँढ़ रहा हूँ
आसमाँ की चाहत है, जमीं ढूँढ़ रहा हूँ
तिनका-तिनका जोड़, सपना बुन रहा हूँ
चिड़ियों की चूँ-चूँ, नदी का कलरव ढूँढ़ रहा हूँ
मन की प्यास बहुत है, प्याला ढूँढ़ रहा हूँ
मिंकु-किंशु की मीठी शैतानियों से भरा संदूक ढूँढ़ रहा हूँ
तिनका-तिनका जोड़, सपना बुन रहा हूँ
तिनका-तिनका जोड़, सपना बुन रहा हूँ



प्रमोद कुमार दास
कनिष्ठ अनुवादक

रफ्तार

जिंदगी तेरी रफ्तार को सलाम
तू हर पल बढ़ती जा रही है,
ठहरना तो तूने सीखा नहीं, बस
सफर करती जा रही है।
एक पल जो ठहर तू जाती
राहत के दो पल दे पाती,
सुकून देना तो तूने सीखा नहीं, बस
अपनी मनमानी करती जा रही है
क्षण माह निरंतर गुजरे – दिन – पल -
न जाने कितने अपने बने और बिछड़े,
विरह वेदना क्यों तू देती जा रही है-
यादों को क्यों आंचल में समेटती जा रही है?
सोचा जब भी विश्राम के लिए
अपनों से मुलाकात और आराम के लिए,
तू सफर रोकने की धमकी देती जा रही है
हर लम्हा साँसों को कम करती जा रही है।
नाराजगी का हमें कोई हक नहीं
नाराज होने का भी वक्त नहीं,
हर मोहलत को तू यूँ ही छीनती जा रही है
कभी तो देख मुड़ के, तू कितनी बदलती जा रही है!

"राष्ट्रीय एकता की कड़ी हिन्दी ही जोड़ सकती है।"

-बालकृष्ण शर्मा 'नवीन'



संदीप कुमार
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

सत्य पर विश्वास रखना

सारा जग हँसता है, तो हँसने दो
कोई कुछ कहता है, तो कहने दो
सत्य पर विश्वास रखना,
अपने कदम को हरगिज न डिगने दो।
लोगों का आना-जाना लगा रहेगा,
कुछ खोना-कुछ पाना लगा रहेगा,
सत्य पर विश्वास रखना
सत्यमार्ग सदा रहा है, सदा रहेगा।
इस दुनिया के सफर सुहाने,
मन में उठते रोज नए बहाने
सत्य पर विश्वास रखना,
प्रकृति साथ आएगी खुशी मनाने।
न परेशान किसी को कीजिए,
न हैरान किसी को कीजिए
सत्य पर विश्वास रखिए,
इंसानों से मेलजोल कीजिए।
तन की भूख मिटाने से मिटती नहीं,
मन की प्यास बुझाने से बुझती नहीं
सत्य पर विश्वास रखना
दौलत और शोहरत देर तक टिकती नहीं।
इतना कीमती वक्त जो तुमने गँवाया,
सब यहीं रह जाएगा, जो भी कमाया
सत्य पर विश्वास रखना
यही सबक समय ने सबको सिखाया।

“राष्ट्रभाषा के बिना राष्ट्र गूंगा है”

-महात्मा गांधी



ओम प्रकाश चौधरी

वरिष्ठ लेखापरीक्षक

एस.आई.पी

धन संचय का कोई जोड़ नहीं
एस.आई.पी का कोई तोड़ नहीं,
सुरक्षित हो मूलधन
करे बड़ा मुनाफा,
प्रेत जैसी मुद्रास्फीति को
मारे चार तमाचा।
संयम और अनुशासन ही
जीवन का मंत्र बने,
करे निवेश इस बीजक में
वट वृक्ष एक दिन बने।
पर सफर नहीं आसान यहाँ
डगमग करती नाव जहाँ,
भूचालें भी आती हैं
नावों से टकराती हैं।
कभी जो ऊपर, कभी जो नीचे
पल-पल गोता लगाती हैं।

पर जो हो नाविक सावधान यहाँ
मुश्किलों में सीना तान खड़ा
ज्ञानवान वह अनुभवसहित,
हो वैतरिणी पार वहाँ।
हैं रूप अनेक इस बीजक के,
डैब्ट इक्विटी का मेल यहाँ
लंबी अवधि का खेल जहाँ।
पर लालच में जो जाओगे
खेल नहीं फिर पाओगे,
समय और पैसा दोनों ही
यहाँ पर आकर गवा दोगे।
अतः थोड़े से शुरुआत करो
निवेश को जीवन में साथ धरो,
वित्तीय स्वतंत्रता पा जाओगे
फिर कभी नहीं पछताओगे।

“मैं दुनिया की सभी भाषाओं की इज्जत करता हूँ पर मेरे
देश में हिंदी की इज्जत न हो, यह मैं सह नहीं सकता”

-आचार्य विनोबा भावे



सोमा चक्रवर्ती भादुड़ी
वरिष्ठ हिंदी अनुवादक

मेरी बेटी ईशाना

मेरी बेटी ईशाना,
सबसे प्यारी है तू
ईश्वर का दिया हुआ मुझे,
सबसे अनमोल तोहफा है तू।
किस नाम से पुकारूँ तुझे,
यह समझ नहीं आता
यूँ तो कई नाम हैं तेरे,
पर सब तुझ पर फीका पड़ता।
नाम में क्या रखा है?
काम तुझे बड़ा करना है
मतलब भरी इस दुनिया में,
सूरज की तरह चमकना है।
संघर्ष की इस दुनिया में,
कई बार फिसलेगी तू,
गिरकर संभलना है तुझको
इतना बलवान बनेगी तू।
जीवन के हर मुकाम पर,
पग-पग पर साथ दूँगी तेरा,
होगी न कभी मुझसे शिकायत
तुझसे वादा है यह मेरा।

“हिन्दी संस्कृत की बेटियों में सबसे अच्छी और शिरोमणि है।”

— ग्रियर्सन



बिनोद कुमार शर्मा
वरिष्ठ लेखापरीक्षक

लिखता हूँ पत्र तुम्हें

लिखता हूँ पत्र तुम्हें बहलाने को प्रिय,
पर असमंजस में हूँ शब्द प्रवाह छलकाने को प्रिय,
प्रातः ढल कर संध्या हो गयी और अब रात रागिनी होने को है,
पर शब्द भेद का चुनाव यथार्थ पटल पर आने को है।
पता नहीं क्रोधित होकर या प्रेम प्रसून से अभिवादन होगा,
इस ओझलता का अंत न जाने क्या होगा?
सोचता हूँ लिखूँ ऐसा कि सृजन अपूर्व होगा,
पर लेखनी भी थम जाती कि आभा मंडल का दीदार होगा।

लिखता हूँ पत्र तुम्हें बहलाने को प्रिय,
पर असमंजस में हूँ शब्द प्रवाह छलकाने को प्रिय,
सतत-निरंतर प्रयास कर दो शब्द ही जुटा पाया हूँ,
पर शब्द बाण कहाँ चलाऊँ अभी सोच नहीं पाया हूँ।
क्योंकि अंकनी भी शर्माकर कहती मुझसे कि
थम जा, ठहर जा, दीदार कर और फिर सृष्टि प्रारंभ
कर कि –

मोतियो की आभा जैसा तेरा मुख मंडल,
वृक्षों की छाया जैसा तेरा आंचल,
तेज तलवार जैसा नयनों का काजल,
सागर की लहरों जैसी तेरी जुल्फें,
और पर्वतो से गिरती धाराओं जैसी तेरी चाल
लो आज जला दी मैंने शब्द बाण की मशाल॥

“इस विशाल प्रदेश के हर भाग में शिक्षित-अशिक्षित, नागरिक
और ग्रामीण सभी हिन्दी को समझते हैं।”

-राहुल सांकृत्यायन



जीवित जल

क्या आपने कभी किसी कुएं को आशीष लेते हुए देखा है, या कम से कम किसी कुएं के आशीष के बारे में सुना है? खैर, अगर नहीं तो चलिए मैं आपको इसके बारे में बताता हूँ। मैं भाग्यशाली था कि मुझे हाल ही में एक समारोह में शामिल होने का मौका मिला जहाँ एक नए कुएं को आशीष दिया गया।

सरीन तोपनो

पुत्र- श्रीमती स्मृति कुजूर
वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी

अक्टूबर 2022 में पूजा की छुट्टियों के दौरान मैं झारखंड राज्य में अपने गाँव गया था। चूंकि झारखंड पठारी क्षेत्र में स्थित है इसलिए यहाँ पानी जमीन के काफी नीचे है। इसलिए मेरी दादी ने हमारे खेतों के बीच में लगभग 25 मीटर व्यास वाला एक बड़ा कुआं खुदवाया। इसके आशीष के दिन, पूरे गाँव के लोग हमारे घर से जुलूस के रूप में निकले। हमें अपने खेत तक पहुँचने के लिए एक नदी पार करनी पड़ती थी। यह वर्षा के मौसम के ठीक बाद था और हमने घुटनों तक गहरे पानी को पार करने का आनंद लिया। मुझे आश्चर्य हुआ कि मेरी दादी पत्तों से बनी कुछ प्लेटें और कटोरे क्यों साथ ले जा रही थी।

जब हम कुएं पर पहुँचे तो हमारे गिरजा के पादरी पहले से ही हमारा इंतजार कर रहे थे। हम प्रार्थनाओं में उनके साथ शामिल हुए, भजन गाए और फिर उन्होंने कुएं को पवित्र जल से आशीर्वाद दिया। फिर कुएं के चारों ओर बंधे सुंदर रिबन को काटा गया। मेरे पिता ने एक लंबी बाँस से बंधी बाल्टी की मदद से कुएं से पानी निकाला। स्वादिष्ट ताजा शरबत बनाने के लिए ग्लूकोज और चीनी को पानी में मिलाया गया। सभी ने इसे पत्तल से बने कटोरे में पिया और पत्तल की प्लेटों पर परोसी गई घर की बनी मिठाइयाँ खाईं। आशीष प्राप्त नए कुएं से पानी का घूंट पीना और धरती माँ की अच्छाई और दयालुता का जश्न मनाना वास्तव में एक बहुत अच्छा एहसास था।

चारों ओर हरे-भरे खेत खुशी से झूम रहे थे, मानो 'जीवित जल' के लिए सर्वशक्तिमान को धन्यवाद दे रहे हों।





हिया तुंगा

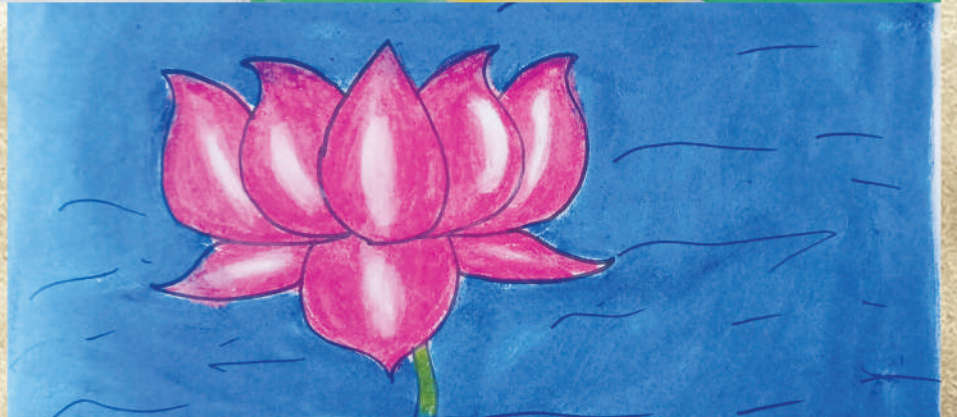
पुत्री- दीपक कुमार तुंगा
ड्राइवर (ग्रेड-1)

वह तुम्हें देख रहा है

एक दिन हमेशा की तरह मैं स्कूल के लंबे दिन के बाद अपने दोस्तों के साथ खेल के मैदान में खेल रही थी। मैं लिली, जारा और नजीरा नाम की अपनी सहेलियों के साथ खेल रही थी। हम लुका-छिपी खेल रहे थे। जारा तलाश करने वाली थी और हम छुपने वाले थे। जब वह गिनती कर रही थी तो हम छिपने के लिए भागे। मैं स्लाइड में छिप गई। मैंने लिली को रेत के ढेर में छुपते हुए देखा। जारा ने 1, 2, 3, ... गिना और फिर हमें ढूँढना शुरू कर दिया। मैंने देखा कि उसने लिली को पकड़ लिया और मुझे तथा नजीरा को ढूँढने की कोशिश कर रही थी। लगभग 15 मिनट हो गए थे जब वह मुझे ढूँढ रही थी। मुझे यह भी नहीं पता कि उसे नजीरा मिली या नहीं। मैं गर्म मौसम के कारण पसीने से तरबतर हो रही थी। मैं बाहर आई और कहा, “उफ!! यह बहुत हो गया, चलो इसे खत्म करें” लेकिन मैंने पाया कि किसी ने उत्तर नहीं दिया। मैंने देखा कि वहाँ कोई नहीं था। मैं केवल अंधेरा देख सकती थी। मुझे एहसास हुआ कि हर कोई अपने घर वापस चला गया था। उस समय मैं बहुत डर गई थी। अकेले होने के बाद भी मुझे महसूस हो रहा था कि मेरे साथ कोई है। मैं चिल्लाई जारा..... लिली.... नजीरा। किसी ने उत्तर नहीं दिया। मैंने अपना बैग उठाया और मैं घर की ओर चलने लगी। रास्ते में मुझे लगा कि कोई मेरे पीछे है। लेकिन मुझमें पीछे देखने की हिम्मत नहीं थी इसलिए मैंने इसे नजरअंदाज कर दिया और सामान्य रूप से चलने लगी। मैं सुन सकती थी कि कोई कुछ कहना चाहता है लेकिन वह स्पष्ट नहीं था। घर पहुंचने के बाद मैंने ढेर सारा पानी पिया। माँ आई और मुझसे पूछा कि तुम इतनी देर से कहाँ थी? मैंने कहा कि मैं अपने दोस्तों के साथ खाली पड़े खेल के मैदान में खेल रही थी। मुझे पता नहीं कि उन्होंने मुझे क्यों डांटा और ऐसा दोबारा न करने को कहा। वह अजीब था। कुछ दिनों बाद मैंने अपनी दोस्त जारा को फोन किया और पूछा कि उसने मुझे खेल के मैदान में अकेला क्यों छोड़ दिया। उसने कुछ ऐसा कहा जिससे मैं चौंक गई। उसने कहा कि मैं उनके साथ चली गई थी। यह सुनकर मैंने कॉल बंद कर दी और यह बात अपनी माँ को बताई। वह डर गई। बाबा (पिता) जब ऑफिस से घर आए तो माँ ने उन्हें यह सब बताया। कुछ दिन बाद हम वहाँ से शिफ्ट हो गये। मेरा अपनी दोस्त से संपर्क टूट गया। वहाँ से निकलने के बाद मुझे कभी ऐसा नहीं लगा कि कोई मुझे देख रहा है। लेकिन फिर भी मुझे कभी इस बात का जवाब नहीं मिला कि उस घटना के बाद मेरे दोस्तों ने मुझे फोन क्यों नहीं किया? मुझे ऐसा क्यों लगा जैसे वहाँ कोई था? मेरी माँ ने मुझे क्यों डांटा? और हम अचानक क्यों शिफ्ट हो गए?...

"भाषा की एकता जाति की एकता को कायम रखती है।"

- राहुल सांकृत्यायन



आशा दास,
भतीजी श्री प्रमोद कुमार दास,
कनिष्ठ अनुवादक



अनिर्जित गंगोपाध्याय, पुत्र- श्री देवांशु गंगोपाध्याय, सहायक लेखापरीक्षा अधिकारी द्वारा बनाया गया चित्र